आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
नवम्बर–2024, RNI-50756
वर्ष-34, अंक-408 मूल्य 150/

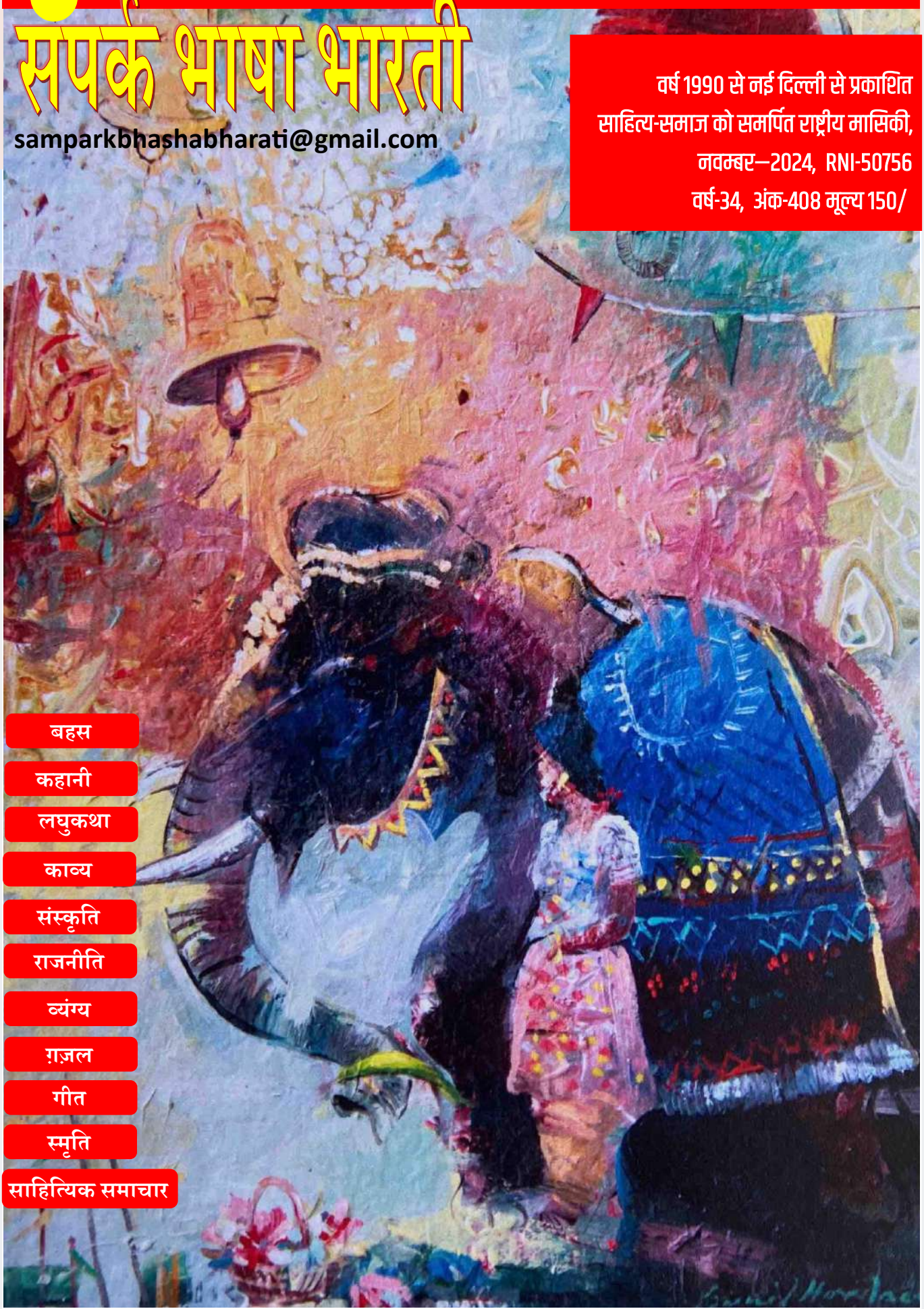

- बहस
- कहानी
- लघुकथा
- काव्य
- संस्कृति
- राजनीति
- व्यंग्य
- ग़ज़ल
- गीत
- स्मृति
- साहित्यिक समाचार

अपनी बात...

प्रिय समस्त!

मुझे हर्ष हो रहा है यह लिखते हुए कि संपर्क भाषा भारती (मसिकी) को जिन लक्ष्यों के साथ वर्ष 1990 जुलाई मास से आरंभ किया गया था, पत्रिका आज भी उन लक्ष्यों के प्रति समर्पित है और न केवल समर्पित ही वरन अपनी जीवित अवस्था भी बरकरार रखने में सफल हुई है।

वर्ष 1990 में जब पत्रिका का पहला अंक प्रकाशित हुआ था और जिसकी समीक्षा तत्कालीन "जनसत्ता" नई दिल्ली में प्रकाशित हुई थी तब देश में हिन्दी की कई पत्रिकाएँ अपनी यौवनावस्था में थीं। धर्मयुग, सारिका, दिनमान, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादंबिनी किसी को क्या पता था कि आज वे सब इतिहास हो जाएंगी।

संपर्क भाषा भारती भी इतिहास हो गई होती, परंतु इस पत्रिका को प्रकाशित करने के पीछे जो जिजीविषा थी उसने इसे इतिहास होने से बचा लिया। इस पत्रिका को कभी वाणिज्यिक लाभ के लिए नहीं निकाला गया। उन दिनों प्रकाशन व्यवस्था बहुत दुरूह थी। फिर भी पत्रिका को अपने वेतन से मैं निकालता रहा। यही स्थिति आज भी है। पत्रिका निस्वार्थ रूप से निशुल्क वितरित की जाती है। जनसत्ता में 1990 में प्रकाशित पुस्तक समीक्षा की क्लिपिंग देखने पर यह सब स्मरण हो आया।

खैर, अक्तूबर मास कुछ हलचल भरा रहा। कुछ आयोजनों में जाना हुआ तो वहीं डॉ लक्ष्मी नारायण लाल जी के सुपुत्र श्री आनंद वर्धन का घर भी आना हुआ। तदुपरान्त अक्तूबर में ही 'गंगोत्री' यात्रा का भी संयोग बना।

डॉ लक्ष्मी नारायण लाल जी ने पिताजी को 60 के दशक में इलाहाबाद में अपने आरंभिक दिनों में चौधरी महादेव प्रसाद डिग्री कॉलेज (सीएमपी) में पढ़ाया था। आनंदवर्धन जी से बहुत देर तक, बहुत विषयों पर बात होती रही।

प्रकाशकों के विषय में उन्होंने दो संस्मरण साझा किए जिन्हें यहाँ अक्षरशः लिख रहा हूँ।

1

ओझा जी! बाबू जी (डॉ लक्ष्मी नारायण लाल जी) के निधन के बाद मैंने उनके दस्तावेज़ों के पड़ताल की तो मुझे पता चला कि बंबई के एक प्रकाशक ने उनकी कई किताबें प्रकाशित की थी। किन्तु, कागजातों में ऐसा कुछ नहीं मिला कि उसने पिताजी की पुस्तकों की एवज़ में उन्हें कोई भुगतान भी किया था।

मैंने उसका पता खोजा और उसे पत्र लिखा कि तुमने बाबूजी की पुस्तकें प्रकाशित कीं किन्तु एक नए पैसे के रॉयल्टी नहीं दी।

उसका कुछ ही दिन बाद जवाब आया कि आनंदवर्धन जी अच्छा हुआ कि आपने हमसे संपर्क स्थापित किया हम खुद ही इस तलाश में थे कि लेखक का कोई संबंधी हमसे संपर्क करे।

तदुपरान्त प्रकाशक ने कहा कि उनकी 500 पुस्तकें बिना बिक्री के गोदाम में पड़ी हुई हैं जिनमें दीमक लग रही है। संभव हो तो आप इन पुस्तकों को खरीद लें।

आनंदवर्धन जी ने बतलाया कि बाबूजी के नाम केलिए मैंने उस प्रकाशक को पुस्तक का मूल्य चुका कर वे पुस्तकें खरीद लीं।

2

दूसरा जो संस्मरण सुनाया वह और रोचक था।

उन्हों ने बताया कि उपेंद्र नाथ अश्क जी भी इलाहाबाद रहते थे। जब उन्हों ने नया प्रकाशन संस्थान खोला तो बाबूजी की कई पुस्तकें उन्हों ने छापीं किन्तु पैसा एक कौड़ी नहीं पकड़ाया।

जब उनसे इस संबंध में बात की तो उनका उत्तर और निराला था। उन्हों ने कहा कि बाबू जी की कई किताबें बिना बिके पड़ी हुई हैं। उनमें दीमक लग चुकी है और उनकी किताबों में लगी दीमक ने मेरी किताबें भी चाट-चाट कर बराबर कर दी हैं। आप इन सभी किताबों की क्षतिपूर्ति कर दें।

आनंदवर्धन जी ने मुझे यह नहीं बतलाया कि उन्हों ने अश्क जी को भुगतान किया अथवा नहीं....

इस प्रकरण में न एक रत्ती अपने से जोड़ा गया है और न ही एक रत्ती घटाया गया है।

यह भी स्पष्ट कर देता हूँ कि डॉ लक्ष्मी नारायण लाल जी जैसी क्षमता का नाट्यकार हिन्दी साहित्य में इधर देखने में नहीं आया है....अभी इतना ही....

सादर,

सुधेन्दु ओझा

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

"संपर्क भाषा भारती" हिन्दी साहित्य की आपकी साहित्यिक परिचायिका...

संपर्क भाषा भारती

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा
प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

नवम्बर-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	साहित्यिक समाचार		6
3	तारिक तस्नीम सम्मानित	समाचार	9
4	व्यंग्य : अर्जेंट मीटिंग	रामानुज अनुज	10
5	कविता	विकास कुमार शर्मा	11
6	चिंतन : राष्ट्र	प्रफुल्ल सिंह	11
7	कविता	व्यग्र पाण्डे	12
8	कविता	विनोद वर्मा दुर्गेश	12
9	व्यंग्य : लखनऊ का संत	दिलीप कुमार	13
10	केशव शरण की कवितायें	केशव शरण	18
11	कविता	योगेंद्र प्रताप मौर्य	20
12	कविता	डॉ अशोक	21
13	कविता	विश्व प्रकाश मेहरा	21
14	कहानी : प्यार हो तो ऐसा	पद्मा अग्रवाल	23
15	चिंतन : अनमोल धरोहर हैं वरिष्ठ जन	गौरीशंकर वैश्य	28
16	कहानी : रात भर का सफर	डॉ सतीश बब्बा	33
17	नेपाली कविताओं का अनुवाद	बिर्ख खड़का डूवर्सेली	38
18	कहानी : गाँठ	विनीता शुक्ला	40
19	कहानी : जिहाद से आज़ादी	डॉली शाह	47
20	कविता	कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'	50
21	इस प्रकाशपर्व पर लें नेत्रदान का संकल्प	सीताराम गुप्ता	53
22	स्मृति : अनुभूति	इकबाल अहमद	55
23	कविता	शशिकला त्रिपाठी	57
24	कविता	प्रतिमा पुष्प	57
25	कहानी : प्राइवेट बीवी	श्यामल बिहारी महतो	58
26	वैरागी काइण्ला की कविता	बिर्ख खड़का डूवर्सेली	61
27	हान कांग की नोबेल पुरस्कार विजेता.....	छविन्दर शर्मा	74
28	कृष्ण कुमार यादव के हाइकु	कृष्ण कुमार यादव	77

परिचय

● **धरती: संपादक- शैलेंद्र चौहान, ए-२१३, तलवंडी, कोटा (राज) मूल्य-१५ रुपए ।**
'धरती' ने महत्वपूर्ण शील साहित्य अंक निकाला है। इसके पहले खंड में कहानियां छापी गई हैं। इन रचनाओं से शील के सर्जनात्मक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व हो जाता है। शील प्रगतिवादी आंदोलन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे हैं। उनकी रचनाएं कलात्मकता की दृष्टि से उतनी नहीं सराही गई जितनी लोकप्रियता की दृष्टि से। 'धरती' अगर अन्य यथार्थवादी रचनाकारों के प्रतिनिधि संग्रह निकाले तो यह बेहतर काम होगा।

● **अब: सोलहवां संकलन, संपादक-शंकर, अभय नर्मदेश्वर। ७४ ई, गोरक्षिणी पथ, सासाराम (बिहार), मूल्य- सात रुपए।**
'अब' की कोशिश रही है कि समकालीन साहित्यिक परिदृश्य पर बहस चले। समकालीन प्रतिनिधि रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण रचनाएं भी वह छापता रहा है। इस अंक में सुरेंद्र चौधरी का लेख 'साहित्य और जनवाद' नए सवाल उठाता है। शंभूनाथ का लेख भारतीय इतिहास की पहचान और कथा साहित्य कहानी के बारे में कुछ जरूरी मुद्दों पर बहस है। वृज मोहन की कहानी 'मौत का दिन' और नील कांत का 'अमलतास के फूल' अच्छी कहानी है।

● **यात्रा: संपादक अनिल खंपरिया, कृष्ण कुटीर, जलपा देवी वार्ड, कटनी (म.प्र), मूल्य-१० रुपए।**
नौवें दशक की हिंदी कविता की प्रवृत्तियों को अलग से विश्लेषित करने की कोशिश नहीं हुई है। आलोचकों के पास संभवतः इसके लिए न तो समय है न रुचि। वे या तो अतीत का प्रेत जगा रहे हैं या थोथे सिद्धांत कथन में उलझे हैं। कविता में आज क्या हो रहा है, यह उनकी चिंता का विषय नहीं है। यात्रा के इस अंक में इधर के कवियों की कुछ महत्वपूर्ण रचनाएं छापी गई हैं। ये कविताएं बिल्कुल नए तेवर में लिखी गई हैं। यथार्थ को नए शिल्प में संवेदना के स्तर पर उतारने की कोशिश कविता के नए संसार की परिचय दे सकता है।

● **प्रतिपक्ष: (अप्रैल-मई ९०), संपादक जार्ज फर्नांडिस, ६/१०५, कौशल्या पार्क, हौज खास, नई दिल्ली, मूल्य-१० रुपए।**
कश्मीर की समस्या उलझती ही जा ... सुलझाने के लिए कुछ कदम की यात्रा तय की जाता है और फिर कुछ ऐसी परिस्थितियां बन जाती है कि लगता सवाल जहां के तहां अनुत्तरित खड़े हैं। इस माहौल में प्रतिपक्ष का यह अंक महत्वपूर्ण है। इस में विभिन्न लेखकों ने कश्मीर समस्या के अलग-अलग पक्षों का विश्लेषण किया है।
रघुबीर सहाय, राज किशोर, आनंद कुमार, बीजी वर्गीज तथा परिमल कुमार दास ने कश्मीर समस्या को संतुलित नजरिए से देखने की कोशिश की है। धारा-३७० की मधु लिमए, हरकिशन सिंह सुरजीत और राजेंद्र सच्चर ने विस्तृत समीक्षा की है।

● **संपर्क भाषा भारती: जुलाई ९०, संपादक:**

सुधेंदु ओझा। ९७ सुंदर ब्लाक, शकर पुर विस्तार, दिल्ली, मूल्य १५ रुपए।
हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए काफी पत्रिकाएं निकलती हैं। यह पत्रिका भी उन में से एक है। हिंदी से संबंधित पत्रिकाओं में इस भाषा की वैज्ञानिकता और सरलता आदि से संबंधित लेख आम तौर पर अब नहीं छापे जाते। जबकि आज भी इसकी जरूरत है। भाषा की एकरूपता आदि की समस्याओं पर भी पुनर्विचार की जरूरत है। इस पत्रिका में अकेला क्यों है भाषाई आंदोलन, सिंधु मुद्राओं का भाषा रहस्य, बोलियों के नाम पर देश को तोड़ने की साजिश आदि लेख महत्वपूर्ण हैं।

● **सुरेश शर्मा**

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

समाचार

साहित्यिक समाचार

“प्रियवर यदि तुम जाते-जाते राग हृदय का सुन लेते
बोझ हो जाता कम हृदय का गीत अगर तुम सुन लेते”

निर्भया साहित्यिक, सामाजिक महिला कल्याण संस्थान् की मासिक काव्य गोष्ठी हिन्दी भवन में आयोजित की गई. वरिष्ठ साहित्यकार अशोक निर्मल, देवनागरी' हिन्दी भाषा सम्वर्धन एवम् शोध सन्स्थान् के अध्यक्ष अशोक व्यग्र वरिष्ठ साहित्यकार दिनेश 'शेष' जी के मुख्यातिथ्य,, में कवयित्री अनीता श्रीवास्तव को निर्भया सम्मान प्रदान किया गया. युवा ग़ज़लकार गौरव गर्वित के सञ्चालन में कवियों, शायरों ने गीत, ग़ज़ल, कविताएं प्रस्तुत की. अशोक व्यग्र ने पढ़ा :

प्रियवर यदि तुम जाते-जाते राग हृदय का सुन लेते
बोझ हो जाता कम हृदय का गीत हृदय का सुन लेते

कवि अशोक निर्मल ने सुनाया :

जिनके हाथों में बल नहीं होता, प्रश्न रोटी का हल नहीं होता
याद रखिए सदा समर्पण में,त्याग होता है छल नहीं होता.

सत्य देव सत्य ने कहा :

सींच सके जग जीव धरा को, कौन भला इतना उपकारी
बोल रहा जग हाथ उठाकर, गंगा माई जय कार तुम्हारी

और

अम्बर पर जो पूजित है उन्हें भगवान कहते हैं
पराई पीर पढ़ ले जो उसे इंसान कहते हैं.

कवि आनंद अनभिज्ञ ने सुनाया :

रागिनी मनभावनी वो बावरी लड़की,
शर्करा सी घुल गई वो सांवली लड़की

निभाती है संजीदगी से वो रिश्ते, जो बाबुल के आँगन में चंचल रही है

इसी कड़ी में गजानंद भैरून्दा ने कहा :

चलो अयोध्या धाम, पुनर्निर्माण कराया है,
रामलला का कलयुग में, मंदिर बनवाया है

कवि ओमप्रकाश ने सुनाया :

इस धरती से उस अंबर को
युगों युगों से प्यार है , प्रेम प्यार में सब है अर्पण
लेना नहीं उधार है.,

कवयित्री सरोज लता जी ने पढ़ा :

हम तो पुतले फूंक रहे हैं, जिन्दा रावण घूम रहे हैं
ये तो सोचो राम कहाँ हैं,उनके जैसा काम कहाँ है.
कवि राजेश चिलमचट्टी ने कहा
लफ्ज़ है आपके या है सपोले, गुजारिश है जरा आहिस्ता बोले
तल्खियाँ वैसे भी कम नहीं, अब इनमें और कड़वाहट न घोले
कमलेश वर्मा ने सुनाया
तूफान इस तरह के उठाएंगे कब तलक
ए जालिमों घरों को गिराओगे कब तलक
आबिद काजमी ने चंद शेर पढ़े
उसे जीने का कोई हक नहीं वतन से जो भी गद्दारी करे है
निवारण खुद को कहता है दुखों का,जहां चाहे बम वारी करे है
वो झूठा है मगर लगता सच्चा है,ग़ज़ब की वो अदाकारी करे है

अमीरों से बड़े गहरे है रिश्ते, गरीबों से मगर गद्दारी करे है.
कवयित्री राजकुमारी ने कहा
बनूं खुशबू मैं फूलों की, कांटे न बनूँ किसी राह की
गौरव गर्वित ने सुनाया
हर तरफ हुस्न की नुमाइश,लाख रंगत से सादगी जायज
है हकीकत में जिंदगी जायज, ख्वाब में होगी खुदकुशी जायज
जितनी भी की थी कोशिशें जायज,इश्क जायज तिश्नगी जायज
और
आसमाँ से चांद तारे खो गए,रात और दिन एक जैसे हो गए
नींद में ख्वाहिशों ने दस्तक दी,जागने के बाद सपने सो गए
अमन टाटस्कर ने पढ़ी
सिर्फ दौलत से कुछ न होगा भला,रिश्ते नाते भी थोड़े निभाया करो
चुपके चुपके न आंसू बहाया करो,जो भी शिकवा गिला हो बताया करो
कवयित्री अनीता श्री ने कहा
दुआओं का तेरी असर लग रहा है
बहुत खूबसूरत सफर लग रहा है ,वज़ूद का उसका असर है कि
मर कर भी वो अमर लग रहा है,
कवि दिनेश भदौरिया जी ने सुनाया
नहीं लौटा वो कह कर भी, यकीं टूटा न इस पर भी
पड़े हैं अश्क अब इतने, पड़ा छोटा है समंदर भी.

वीणा विद्या जी ने कहा
आज मेरी नन्ही बेटी ने मां की याद दिलाई
साड़ी का पल्लू पकड़ जो मेरे पास आई
आँख मेरी भर आई

मेरी सांसों की खातिर तूने कितनी लडी लडाई, याद तुझे करके मां आँख मेरी भर आई.

कवयित्री प्रमिला मीता ने सरस्वती वंदना से शुभारम्भ किया.

अंत मे आभार प्रदर्शन अशोक निर्मल वरिष्ठ कवि ने किया.

एक माह-दो राज्य-दो पुरस्कार

भोपाल

राजधानी की उभरती कवयित्री डॉ. प्रियंका ”प्रियांजलि” को एक माह में दो महानगरों में दो पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उत्तरप्रदेश में आयोजित कवि सम्मेलन में देशभर से आमंत्रित प्रख्यात साहित्यकारों की उपस्थिति में डॉ. प्रियंका ”प्रियांजलि” को राष्ट्रीय शब्दाक्षर प्रतीक चिन्ह, शॉल एवं पुष्पमाला से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व उन्हें हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में राजधानी के हिंदी भवन में संपन्न एक कार्यक्रम में निर्भया साहित्य सम्मान से पुरस्कृत किया जा चुका है।

अपनी साहित्यिक यात्रा के प्रारंभ में ही डॉ. प्रियंका ”प्रियांजलि” को एक ही माह में दो राज्य, दो शहरों में दो पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं क्योंकि उनकी समसामयिक रचनाओं को वरिष्ठ कवियों द्वारा सराहा जा रहा है. अपनी इस उपलब्धि पर डॉ. प्रियंका ”प्रियांजलि” ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि अपनी रचनाओं के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उन्नयन के लिए कार्य करना तथा हिंदी का व्यापक रूप से प्रचार प्रसार करना उनका उद्देश्य है। वर्तमान समय में अनेक गैर हिंदी राज्यों के लोगों को भी हिंदी से जोड़ना है और उनमें हिंदी साहित्य के प्रति रूचि जाग्रत करना है। इसके लिए नवांकुर साहित्य मनीषियों को हिंदी भाषा में सृजन के लिए प्रेरित किया जाएगा।

शब्दाक्षर संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि प्रताप ने बताया कि साहित्यिक कुंभ में 25 राज्यों से 120 साहित्यकार सम्मिलित हुए और सभी को अयोध्या दर्शन भी करवाए गए।

स्वाभिमान प्रोडक्शन द्वारा रिलीज किया गया पहला गजल एल्बम "ग़ज़ल सिद्धेश्वर की"

पटना 14/10/24

स्वाभिमान प्रोडक्शन के द्वारा, यूट्यूब के स्वाभिमान चैनल के मंच पर , गजल की दुनिया में तहलका मचाने आ रहा है पटना (बिहार) के चर्चित शायर एवं चित्रकार सिद्धेश्वर की गजलों का पहला एल्बम " गजलें सिद्धेश्वर की 1" विदित हो कि उनकी 100 से अधिक आजाद गजलें, प्रिंट मीडिया से लेकर सोशल मीडिया तक धूम मचाती रहीं हैं । सिद्धेश्वर की गजलों की लोकप्रियता को देखते हुए, स्वाभिमान प्रोडक्शन के निदेशक एवं गायक नरेश कुमार आस्टा ने उनकी एक दर्जन से अधिक गजलों को, सोशल मीडिया के यूट्यूब चैनल पर उतारा और दर्शकों का भरपूर समर्थन पाया । गजलों की लोकप्रियता को देखते हुए, उन्होंने स्वाभिमान प्रोडक्शन के द्वारा, गजलों के वीडियो एल्बम को प्रस्तुत करने का निर्णय लिया है । इस योजना के तहत गज़ल का पहला एल्बम उन्होंने प्रस्तुत किया है, इस पहला एल्बम का नाम है " गजलें सिद्धेश्वर की !" इस एल्बम में सिद्धेश्वर की लिखी हुई और नरेश कुमार आस्टा के द्वारा आवाज एवं संगीत से सजी , आधा दर्जन आज़ाद गजलें शामिल की गईं हैं । उन्हें पूरा विश्वास है कि यूट्यूब चैनल पर ये गजलें पाठकों को अपने नए अंदाज से प्रभावित करेगी, और उनके हृदय में रच बस जाएगी । इस एल्बम में शामिल गजलों के बोल हैं : बड़ी मुश्किल में है आज अंधेरे में रहने वाला, हमसे दूर रहकर कैसा साथ है ये, मोहब्बत की आरजू तो है आज भी, हम जमीन है वो आसमान है, आंसू को अमृत समझ पीजिए हुजूर औऱ कितना जानते हो दोस्त भगवान के बारे में? " सिद्धेश्वर की इस सफलता पर उनके मित्र मंडली एवं साहित्य जगत द्वारा भरपूर बधाइयां मिल रही है ।

तारिक असलम 'तस्नीम' सम्मानित

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलनके 106 वे स्थापना दिवस समारोह के साथ दो **दिवसीय 43 वे महाधिवे”ान का आयेजन 19 एपं 20 अक्टूबर को पटना ,कदमकुआ** में सम्पन्न हुआ। इस समारोह का उदघाटन पूर्व केंद्रीय मंत्री सी,पी, ठाकुर और मुख्य अतिथि अपर मुख्य सचिव मिहिर कुमार सिंह ने किया।विराठ समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन के अध्यक्ष डा0 अनिल सुलभ ने किया।

इस अवसर पर अध्यक्ष अनिल सुलभ ने हिंदी को सम्पूर्ण दे”ा की एकमात्र भाषा बताये जाने की बात कही।इस मुददे को लेकर केंद्र सरकार और संबंधित मंत्रियों से पत्राचार भी किया गया है , जिस पर सकारात्मक प्रतिकिया मिली है। इस आ”य की सूचना अध्यक्ष ने दी।

इस समारोह में दे”ा के चर्चित, प्रतिष्ठित एवं वरिष्ठ कवि, कथाकार ,व्यंग्यकार तथा चर्चित साहित्यिक पत्रिका कथा सागर के संपादक एवं प्रका”ाक मुहम्मद तारिक असलम तस्नीम को हिन्दी भाषा एवं साहित्य की उन्नति में मूल्यवान सेवाओं के लिए सम्मेलन के 106 वें स्थापना दिवस समारोह एवं 43 वें महाधिवे”ान ***में** हालिया* प्रका”ात काव्य संग्रह किसी बहाने ही सही के लिए *राजा राधिकारमन प्रसाद सिंह सम्मान से विभूषित किया गया। इसके पूर्व शब्द इतिहास नहीं रचते काव्य संग्रह `ाको राजभाषा विभाग,बिहार सरकार का पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।*

विदित हो कि हिन्दी भाषा और साहित्य में 04 कहानी संग्रह, 02 कविता संग्रह,03 लघुकथा संग्रह, 02 लघुकथा संकलन के अल. ावा एक मराठी लघुकथा संग्रह भी प्रका”ात हो चुका है।

महाधिवे”ान के दूसरे दिन चौथे सत्र की शुरूआत विष्व बंधुत्व की अवधारणा और भारत से हुई। इस सत्र का उदघाटन राष्ट् भाषा प्रचार समिति के वर्धा के अध्यक्ष प्रो0 सूर्य प्रसाद दि़क्षित नें किया। उन्होंने अपने उदबोधन में जाति,संप्रदाय,वर्ण,लिंग और क्षेत्रीयता जैसे संकीर्ण विचारा`से वि”व बंधुत्व की भावना को खंडित करने वाला बताया।

कार्यक्रम का पांचवां सत्र साहित्य के नये प्र”न से जुड़ा था। इस सत्र की अध्यक्षता बिहार सरकार के पूर्व वि”ष सचिव एवं साहित्यकार डा0 उपेन्द्रनाथ पांडेय ने किया। सत्र समाप्ति से पूर्व देहरादून से पधारे गीतकार पंडित बुद्विनाथ मिश्र की अध्यक्षता में कवियों ने काव्य पाठ किया। तदोपरान्त समापन सह सम्मान समारोह में कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का स्वागत सम्मेलन के उपाध्यक्ष डा0 ‘ांकर प्रसार और धन्यवाद ज्ञापन डा0 मधु वर्मा ने किया । इस अवसर पर बिहार के अलावा अन्य शहरों से पधारे साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया।

व्यंग्य

अर्जेन्ट मीटिंग

गिनती हमारी यदि ठीक है तो संख्या में ये चार थे। शक्ल-सूरत से वे कुत्ते थे, लेकिन कुत्ता को कुत्ता कहना अच्छा नहीं लगता। कुक्कुर या कुकुरा भी संसदीय नहीं हैं। अगर 'श्वान' कहूँ तो?

'चलेगा।'

'सच।'

'हाँ, चल सकता है, आगे चलकर श्वान से श्वान देव में तरक्की पा सकता है।'

नित्य नियम था सुबह अलग-अलग अपनी दिशा में जाते, फिर लौटकर शाम को एक जगह बैठते, एकदूसरे की खैरियत पूछते, तरह-तरह की बातें करते, हँसते-बोलते। इसी को ही वे 'अर्जेन्ट मीटिंग' कहते थे। आज भी ऐसी ही मीटिंग हुई। चारों अपनी-अपनी कथा कहने लगे।

पहला---'मैं नाले के पास गया था, नल का पाइप फूटा था, जोरदार फौवारे का आनंद लिया, खूब छककर नहाया, कुछ दूरी पर सूखी हड्डियाँ पड़ी मिलीं, उन्हें ले जाकर पानी से धोया, फिर चूसा। भाई! मजा आ गया, मेरा दिन ठीक ही गया।

दूसरा---'बहुत खराब दिन गया मेरा। भोज में जूठन खाने गया था, पता नहीं किस मनहूस की तेरही रही कि कुत्ते भी कौरा से वंचित रह गए।'

पहला, 'मतलब खाने वाले जूठन नहीं छोड़े?'

दूसरा, 'छोड़े तो थे लेकिन वहाँ के स्थानीय कुत्ते बहुत बदतमीज निकले, साले मेहमाननवाजी नहीं समझते कि, क्या चीज होती है? हम जैसे बाहरी कुत्तों को घुसने तक नहीं दिए। दिन भर भूखा रहा।'

पहला, 'दिल मत छोटा करो, मीटिंग के बाद हम खाने का कोई न कोई जुगाड़ कर लेंगे।'

बारी आने पर तीसरा बोला---'मैं पुलिस में भर्ती होने गया था, सब ठीक गया, बस लंबी कूद में एक नम्बर से रह गया।'

'अपनी लांग जम्प और हाई जम्प दोनों दुरुस्त हैं, फिर कैसे रह गए?'

'तीन सीट थी, जो पहले से फुल थी। कूद-फांद महज नाटक था। नेताओं के द्वार पर भोंकने वाले कुत्ते बिना कूदे ही पहले से ही सेलेक्ट कर लिए गए थे।'

'ओह! दुनिया में हर जगह गजब की कुत्तागिरी है। फिर भी लगे रहो, अभ्यास बढ़ेगा तो समुद्र लाँघकर श्रीलंका भी पहुँच सकते हो।'

तीनो ने एक सुर में उसकी हौसलाअफजाई की, उसकी निराशा दूर हो गई। चौथे का क्रम आया वह उत्साह से भरा हुआ बोला---'मैं बिजली के दफ्तर गया था। अब रात में भी बिजली जलेगी।'

तीनो ने चौथे वाले से पूछा, 'हमें बिजली से क्या मतलब। रात में जले या दिन में जले।'

चौथा भोंककर---'तुम लोग दिमाग लगाओ भाई, कुछ नए खम्भे गड़ेंगे की नहीं। अपने को तो खम्भों से मतलब है।'

'बात सवा सोरा आने सही है' कहते हुए चारों श्वान खाने की जुगाड़ में दुम हिलाते हुए बस्ती की तरफ चल दिए।

रामानुज अनुज

★★★★★

चिंतन

राष्ट्र!!

राष्ट्र किसी व्यक्ति विशेष की धरोहर नहीं है। राष्ट्र से व्यक्ति है, व्यक्ति से राष्ट्र है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। राष्ट्र मात्र एक भौगोलिक इकाई नहीं; समरूप, समकक्ष, एक समान दिखने वाले कुछ जीवों का संगठन मात्र नहीं; अन्य प्रकार के इंसानों से द्वेष/प्रतिद्वंदिता/शत्रुता रखने वालों का समुदाय नहीं; वस्तुतः, राष्ट्र एक भावना है जो भिन्न परिस्थितियों में समयानुसार गोचर होती रही है।

तथापि, अलग-अलग लोगों ने निज-मतानुसार राष्ट्र को परिभाषित किया है। किसी के लिए प्रकृति प्रदत्त उपहार वर्गीकरण का आधार बने तो किसी के लिए समस्त सजीव समुदाय; किसी ने मानव मात्र को प्रधान माना तो किसी ने जड़-चेतन को एक सूत्र में पिरोया; किसी ने समर्थवान का सान्निध्य चाहा तो किसी ने पीड़ित की संवेदना से साम्य स्थापित किया। समय के धरातल पर भिन्न-भिन्न मत विकसित हुए और लोगों ने (परिस्थिति की गहनता के वशीभूत) एकमत होकर राष्ट्र को विभिन्न रूपों को तत्कालीन परिवेश में स्वीकार किया। अद्य, एक आम इंसान अपनी जन्मभूमि को राष्ट्र के नाम से संबोधित करता है।

अन्य कहीं की नागरिकता लेने की बात और है, किंतु आजीविका अर्जन हेतु अपने राष्ट्र (जन्मभूमि) को त्यागकर परदेश में रहने वाले की धड़कनें चंद क्षणों के लिए तीव्र हो जाती हैं, जब वह विदेश में किसी परदेशी से अपनी जन्मभूमि की प्रशंसा सुनता है।

कुछेक दशकों पहले परदेश में भारत भूमि की अनुशंसा करने वाला कदाचित ही कोई इक्का-दुक्का मिल पाता था, वह भी चंद यादों के सहारे भारत के बारे में कुछ शब्द कह दे वही बहुत होता था। वर्तमान में भारत भूमि की महत्ता किसी भी देशी-विदेशी भूखंड पर किसी परिचय के लिए अवलंबित नहीं है।

भारतीयता की चिरपरिचित सुगंध चहुँओर फैल रही है। नव भारत के पुनरोद्भव के कारकों यथा राजनैतिक/कूटनीतिक सक्षमता; स्पष्टवादिता; कर्मठता; शैलेय संकल्प इत्यादि सर्वत्र विदित हैं। अपने ऐतिहासिक धरोहरों पर विश्वास करके व अपनी जड़ों को पुनः टटोलकर भारत पुनः अपने नवीनीकरण के दौर से गुजर रहा है। पुनरुत्थान की यह संजीवनी किसी भूधर से नहीं आई है, न ही किसी अन्य ग्रह/उपग्रह इसे से लाया गया है, अपितु भारतीय जनमानस ने दशक पूर्व चुनाव कर इसे अपने प्रारब्ध में प्रतिरोपित किया था।

(शेष पृष्ठ संख्या 72 पर....)

जिंदगी की सीप

थोड़ा रुककर सोचें
थोड़ा रुककर देखें
क्यों छूट गए
तितलियों के रंग
क्यों सूख रहा पनघट का पानी
विषबुझी हवा क्यों व्याप्त है
हर गाँव-शहर में
हिरनियों की आँख क्यों
छलक रही है
बार-बार।
क्यों सभी की नाव
बीच मँझधार में
अटक रही है
और क्यों टूट रहे हैं
आस के मस्तूल बार-बार।
हर आँख में पीर ही क्यों
दिख रही है।
जिंदगी की सीप है कहाँ?
और उसमें
उम्मीद का मोती कहाँ है?

विकास कुमार शर्मा

जले होते हैं दीप ...

जले होते हैं दीप
जब संकल्पों के
प्रयासों के तेल से
मन में... तन में...
फिर दीपावली आती नहीं
रहती सदा पास
खत्म हो जाता
निराशा का अंधकार
ज्योति बनकर
सफलताओं की लक्ष्मी
देती रहती वरदान
खुशियों की मिठाई
मुस्कराहट की फुलझड़ियां
मनवाती उत्सव
जले होते हैं दीप जब
संकल्पों के...

व्यग्र पाण्डे
कर्मचारी कालोनी, बचपन स्कूल के पास, गंगापुर सिटी (राज.)
322201 मोबा. नं. 9549165579

1)
रहें सब खुश सदा साथी, यही चाहत रही मेरी।
मिटें सब वैर धरती से, बजे बस प्रेम की भेरी।
सुवासित हो सभी का मन, रहे सद्भाव हर जन का।
बनें हमदर्द हम सबके, हरें संताप हर जन का।।

2)
धरो तुम धीर थोड़ा सा, सुकूं भी पास आएगा।
मिलेगा चैन भी तुमको, मधुप जब गुनगुनाएगा।
गगन से फूल बरसेंगे, मदन भी राग गाएगा।
जवानी का नशा जिस दिन, ज़हन पर आन छाएगा।

3)
सिखाया था हमें चलना, बनें हम नेक हमराही।
करें सबका भला जग में, मिले हर चाह मनचाही।
हमारी आन है उनसे, दिया जीवन हमें प्यारा।
मिले आशीष हम सबको, हरें पूर्वज कलह सारा।

4)
विधाता ने रचा हमको, दिया जीवन हमें न्यारा।
किया उपकार हम सब पर, लगे सुंदर जगत सारा।
दिया भरपूर सा कुनबा, खिलाया फूल -सा प्यारा।
मिला है पूत भी काबिल, दिया है तात नभ तारा।

5)
शिकागो की जमीं पर जा, गजब सा काम कर डाला।
विवेकानंद स्वामी ने, नया इतिहास रच डाला।
दिया भाषण निराला था, जगत में नाम था छाया।
गए कितने बरस यारो, नहीं कोई भुला पाया।

विनोद वर्मा दुर्गेश,
तोशाम, जिला भिवानी,

व्यंग्य

दिलीप कुमार

"लखनऊ का संत"

बरसों पहले लखनऊ के एक ख्यातिलब्ध साहित्यकार ने "विश्रामपुर का संत " नामक एक विराट कथा लिखकर खूब प्रसिद्धि बटोरी थी । अब लखनऊ कुछ दूसरी वजहों से चर्चा में है।

"लखनऊ है तो महज

गुम्बदो मीनार नहीं,

सिर्फ एक शहर नहीं

कूच ओ बाजार नहीं,

इसके आँचल में मोहब्बत

के फूल खिलते हैं,

इसकी गलियों में फरिश्तों के पते मिलते हैं "।

अब हम लखनऊ के जिस उपदेशी शख्शियत का जिक्र कर रहे हैं वो खुद को "साहित्य का संत " कहलवाना पसन्द करते हैं। न , न धोती-कुर्ता वाले नहीं हैं बल्कि ब्रांडेड पैंट -शर्ट ही पहनते रहे हैं।

उनके साथ शराब-कबाब के हमप्यालों के लिये वह फरिश्ता हैं ,क्योंकि मुफ्त का इफरात जुगाड़ हमेशा उनके पास होता है। उनसे साहित्य का वास्ता रखने वालों से वह "साहित्यिक संत " सुनना पसंद करते हैं।

अब वह फरिश्ता हैं या संत ये तो शोध का विषय है मगर एक पाश एरिया के सरकारी सब्सिडी वाले काफी बड़े और आरामदेह मकान में ये संत नुमा कवि पाए जाते हैं। संत कवि के कुछ गुण निम्नवत हैं

1-संत कवि फ़ेसबुक पर कविता पोस्ट करने को अनुचित मानते हैं और टैग करने को महापाप। ये अलग बात है कि जब भी कोई कविता संत कवि लिखते हैं तो फ़ेसबुक के अपने पांच हजार मित्रों को टैग कर देते हैं और फिर उसे अपने फेसबुक पर बनाये हुए पेज पर भी डाल देते हैं ताकि इनका कोई भी परिचित इनकी कविता की "आई टॉनिक " से वंचित न रह सके "।

2-संत कवि के एक उस्ताद कवि भी हैं। उस्ताद कवि लोकनिर्माण विभाग से रिटायर्ड महकमे से अरबपति हैं। उनका प्रिय शग़ल है मजदूरों के लिये कविता लिखना और मजदूरों को क्रांति के लिये जगाना। संत कवि के उस्ताद कवि की ये समस्या है कि जब तलक स्कॉच के दो पैग उदरस्थ नहीं कर लेते तब तक उनसे मजदूरों की क्रांति की कविता का सृजन नहीं हो पाता। संत कवि उनके स्कॉच से मजदूर हितों वाली कविता के जन्म की प्रक्रिया से बेहद प्रभावित हैं और कविता के जन्म हेतु अक्सर ही उस्ताद कवि के कार्यों और लेखन शैली का अनुकरण करते हैं।

2- संत कवि का मानना है कि उनका काम बजरिये कविता, मजदूरों की क्रांति के लिये जमीन तैयार करना है।

सो संत कवि त्याग करने नहीं में नहीं हिचकते, चूंकि इनके स्काची

उस्ताद से दो पैग पीने के बाद ही कविता का सृजन हो पाता है और उस पर तुर्रा यह कि अकेले उनसे कविता रचते समय स्कॉच पिया नहीं जाता।

इसलिये संत कवि भी मन मारकर दो पैग स्कॉच के घूँट ले ही लेते हैं , ये औऱ बात है कि संत कवि पीना नहीं चाहते,मगर मजदूरों की क्रांति के हित में उन्हें पीना ही पड़ता है ,मन मारकर भी।

3- संत कवि वैसे तो प्रचार -प्रसार से दूर रहना चाहते हैं परंतु जब भी कोई अतुकांत बतकही(जिसे वह कविता कहते हैं) करते हैं तो उसे अपने व्हाट्सएप के स्टेटस पर तुरंत लगाते हैं और व्हाट्सअप के सभी ग्रुपों में डालते हैं । सन्त कवि ये बात भी सुनिश्चित करते हैं कि जिसने भी व्हाट्सअप पर उनकी कविता की स्टेटस नहीं देखी, उसको ब्लाक कर दिया जाये।

4- संत कवि एक अनियतकालीन पत्रिका भी निकालते हैं , ये पत्रिका मलाईदार विभागों से रिटायर्ड कुछ उच्च अधिकारियों द्वारा प्रमुखतया पोषित-पल्लवित है ।

ये उन रिटायर्ड अफसरों के मानिसक सुख का साधन है जो जीवन भर तारीफ,तवज्जो,जी- हुजूरी सुनने के आदी रहे हैं ।मगर कुर्सी से रिटायर्ड होने के बाद अब सिर्फ एक धनवान व्यक्ति बन कर रह गए हैं , संत कवि की पत्रिका उन्हें सतत कालजयी कवि घोषित करती रहती है ,जिसके एवज में संत कवि को लखनऊ के कुछ अति विशिष्ट क्लब के पास अक्सर मुहैया हो जाया करते हैं, जो उन रिटायर्ड उच्चाधिकारियों की वीआईपी स्टेटस को ही प्राप्त रही थी।

5-संत कवि की अनियतकालीन पत्रिका के दरवाजे ऊपर की कमाई वाले कवि हृदय अफसरों के लिये सदैव खुले रहते हैं । कोई भी कमाऊ और कवि ह्रदय अफसर विभाग के विज्ञापन देकर या होली / दीपावली की व्यक्तिगत शुभकामनाएं पत्रिका में छपवा कर उत्कृष्ट कवि बन सकता है ।

वैसे भी कुछ रिटायर्ड और कुछ कार्यरत अफसर तो पत्रिका को अनियतकालीन रहने ही नहीं देते। जैसे- जैसे अफ़सरनुमा कवियों की फेहरिस्त बढ़ती गयी वैसे वैसे पत्रिका की निरंतरता। कभी -कभी तो पत्रिका के महीने में ही दो अंक आ जाते हैं

“मरीजे इश्क पर लानत खुदा की

मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की ।

6- संत कवि प्रचार -प्रसार में बिल्कुल यकीन नहीं रखते ,लेकिन यदि लखनऊ में किसी पुस्तक के लोकार्पण में उनको बुला लिया जाए ,भले ही उपन्यास का लोकार्पण हो तो अपनी ताजा लिखी हुई न्यूनतम पांच कविता तो सुना ही देते हैं और कविता सुनाने के बाद तुरंत वहाँ से चल देते हैं किसी अन्य की कविता नहीं सुनते। उनका मानना है कि उनके जैसे संत कवि को दूसरे की कविता पर सरे आम वाह -वाह करना न तो आवश्यक है और न ही उचित।

7- संत कवि के उस्ताद कवि बाढ़ महकमे से रिटायर हुए हैं । लखनऊ में उनकी कविता से ज्यादा चर्चा उनके अनगिनत प्लाटों और आवासों की होती है ,मजदूरों की क्रांति के लिये अक्सर वे बिहार,बंगाल अपने प्राइवेट जेट से जाते रहते हैं कम्यूनिस्ट मित्रों के चुनावों के प्रचार प्रसार में और कभी -कभार धरना प्रदर्शन में भी । संत कवि भी अपने उस्ताद कवि के साथ अक्सर प्राइवेट जेट में कविता से क्रांति के लिये बिहार,बंगाल आदि प्रांतों में जाते रहते हैं, आखिर मजदूरों के हित का सवाल जो रहता है।

8- संत कवि का भी मानना है कि मजदूरों की क्रांति के बीज मजदूरों से ही लिये जाएं तो ही बेहतर। इसलिये वो जब भी महीने में एक- आध बार जब अपने घर पर मज़दूरों के लिये कोई कविता या लेख लिखते हैं तो अपने घर में काम करने वाली नौकरानी, महरी की पगार का कुछ हिस्सा काट कर स्कॉच को समर्पित कर देते हैं। ताकि दुनिया भर के मजदूरों के संघर्ष में उनके घर से भी क्रांति के कुछ बीज जा सकें।

9- संत कवि का मानना है कि व्यक्ति को अपनी कविता के प्रचार-प्रसार का काम हर्गिज नहीं करना चाहिए। वो प्रायः कवियों को नसीहत देते रहते हैं कि दमदार रचना लिखने पर फोकस करो। प्रचार -प्रसार पर नहीं,सूर -कबीर ,तुलसी को देखो । उनकी रचना अच्छी थी इसलिये उनकी रचना रह गई भले ही वो लोग चले गए।

उनका ब्रम्हवाक्य है कि “ कवि नश्वर है,रचना अजर -अमर है” ।

उन्होंने निजी तौर से अनथक प्रयास करके केरल के पाठ्यक्रम में अपनी एक कविता लगवा भी ली थी। उन्हें अपने सभी परिचितों को बताते -बताते एक बरस लग गया कि उनकी रचना केरल के पाठ्यक्रम में लगा दी गई है मगर साल बीतते केरल से उनकी रचना न जाने क्यों हटा दी गई। उन्होंने दरयाफ्त की तो पता चला कि पटना के एल संत कवि को भी उन्हीं की तरह क्रांति के लिये अवसर देना लाजिमी था।

उन्हें इस बात का बेहद मलाल था कि इतनी मुश्किल से वो सुर,कबीर ,तुलसी के बगल में पहुंचे थे और पाठ्यक्रम से हटा दिए गए।

उनके स्काची उस्ताद कवि ने उन्हें आश्वासन दिया है कि जिन जिन राज्यों में वो अपने कम्युनिस्ट साथियों के चुनाव के प्रचार -प्रसार हेतु गए हैं ,उन राज्यों में वो सन्त कवि की रचनाएं लगवाने का प्रयास करेंगे। कम से कम तीन राज्यों के पाठ्यक्रम में उनकी कविता लगवाने की गारंटी सन्त कवि के स्काची उस्ताद कवि ने स्कॉच की गवाही में

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

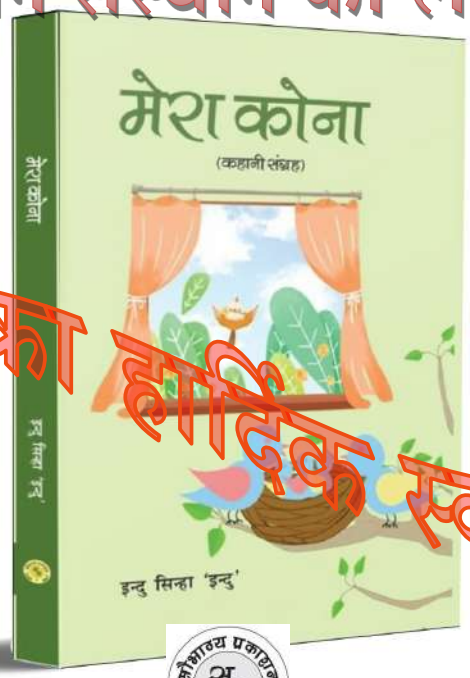

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

दी है, बंगाल में शासन बदलने का इंतजार करने का भी सीख दी है ,सन्त कवि के उस्ताद कवि ने कहा है कि बंगाल में मनमाफिक सरकार आते ही उन्हें किसी न किसी हिंदी विद्यापीठ का अध्यक्ष उन्हें जरूर बनवा देंगे।

10- सन्त कवि का मानना है कि कवि तो लोक विधायक होता है उसे सिर्फ दबे -कुचले शोषित लोगों की बात करनी चाहिये। उन्ही के साथ खड़े होना चाहिये, शोषण या बुरा करने वालों के साथ नहीं रहना चाहिये।। पर न जाने क्यों छाजूमल वैद्यनाथ के लिये उनके दिल में एक साफ्ट कार्नर है । छाजूमल वैद्यनाथ वही हैं जो कि नकली मावा बनाने के जुर्म में जो तीन साल जेल काट चुके हैं और कोर्ट ने उनके खाने - पीने के सामान बेचने पर पाबंदी लगा दी है ।

सन्त कवि ने उस सजायाफ्ता को न जाने क्यों समाज सेवी घोषित कर दिया । उन्हें समाजसेवी बनाने की सन्त कवि ने हर स्तर पर एक लम्बी लड़ाई लड़ी।

कहते हैं कि कपूरथला से छाजूमल के कपड़ों के शो रूम से सर्दी और गर्मी के कपड़े सीजन शुरू होते ही आ जाया करते थे और लोक विधायक सदृश सन्त कवि पूरे साल सजायाफ्ता को लखनऊ के अखबारों में समाज सेवी घोषित करते रहते हैं ।

एक यश प्रार्थी युवा कवि ने उनसे पूछा कि-

"आप एक सज़ायाफ्ता को समाजसेवी घोषित करने पर क्यों तुले हुए हैं "।

सन्त कवि ने डनहिल के सिगरेट सुलगाई,लंबा कश लिया और युवा कवि के मुंह पर ढेर सारा धुंआ उड़ेलते हुए कहा –

"संत न छोडें संतई , कितनौ मिले असंत"।

युवा कवि संत कवि की बातों को समझा तो नहीं मगर अभिभूत अवश्य हो गया।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

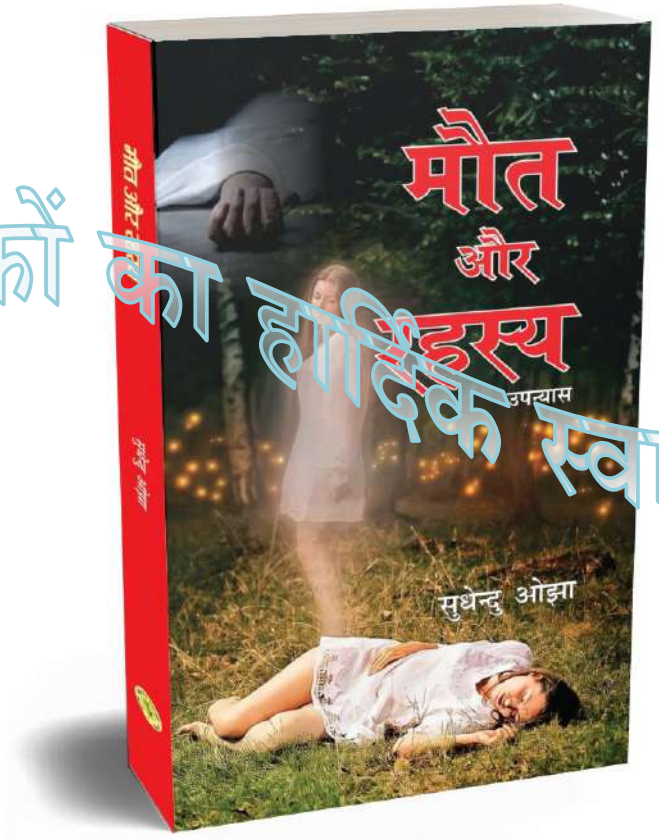

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-9-4**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 208

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

काव्य

केशव शरण की कविताएँ

भारतेन्दुकालीन

केवल एक पेड़ है
पीपल का
भारतेन्दुकालीन
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र राजकीय उद्यान में
जिसकी शीतल हवा
लहराती है उधर
नागरी प्रचारिणी सभा के मैदान में
और इधर
हिलकोर जाती है प्राचीन सरोवर

यही
इस पेड़ की
साहित्यिकता है
बाक़ी इसका स्वरूप
धार्मिक है
लाल-पीले धागों से लिपटा
एक छोटे मंदिर के ऊपर

बीएचयू की सड़क

बी एच यू को देखो तो
मुँह से निकल पड़ता है
वाह, मालवीय जी!

क्या सड़कें बनवाई हैं
संकायों के बीच
आम के पेड़ इस तरफ़ भी
आम के पेड़ उस तरफ़ भी
जिनकी घनी छाया में
चल रही काया
मगन और विस्मित हो जाती
जब यह पाती
कि सूरज की धूप
घनी छाया को भेद
जगह-जगह यूँ उतर आती है
कि सड़क पर
छोटे-छोटे छापों और बेल-बूटों की
एक कलाकृति-सी बन जाती है

लगता है हम सड़क पर नहीं
चित्र पर चल रहे हैं

मूर्तमान ईश्वर

यहाँ अच्छी-ख़ासी भीड़ के लिए
हवा है, छाया है
जल, जलपान है
इस महाद्वार के बाहर
गाड़ियाँ खड़ी करने के लिए भी किनारे स्थान है
हम अंदर चलें
जहाँ उद्यान और फव्वारे हैं
और बड़े दिलकश नज़ारे हैं
उसके बाद हम एक और महाद्वार पार करेंगे
जहाँ लगेगा हर क्षण
दिव्य और पावन है वातावरण
एक अति सुन्दर पथ के पार
संगमरमर की सीढ़ियों के ऊपर
विशाल हाल के
विशाल कक्ष तक जाएँगे तो
पाएँगे आप

मूर्तमान है वहाँ
ईश्वर
एक आस्तिक की दृष्टि होगी
अगर

चिड़ियों का शोर

चिड़ियां शोर नहीं मचाती हैं
वो जो ढेरों इकट्ठा हो गई हैं
चमन में
सब अपनी सामान्य बात-चीत में
मशग़ूल हैं

बिल्कुल सामान्य आवाज़
मगर उसके साथ
जो उनकी संख्या का गुना है
उसी को हमने
शोर के रूप में सुना है

फूल यूँ ही नहीं

सब बदलता रहता है
प्यार का शिद्दत-भरा ख़ूबसूरत एहसास
जो दिलों से निकलता रहता है
फूलों में ढलता रहता है
ख़ुश्बुओं में मचलता रहता है

फूल यूँ ही नहीं लुभाते हमें
यूँ ही नहीं हम उन्हें
उनको करते हैं भेंट
जिनसे करते हैं प्रेम!

फोटो लेना मना है

जहाँ धड़ाधड़
चमकते हैं कैमरे
उस जगह की शोभा
कुछ और है
यहाँ की महत्ता
कुछ और है
जहाँ लिखा है
फोटो लेना मना है
यहाँ एक आंतरिक संवेदना है
जिसे महसूस कराने पर ज़ोर है
और उसके लिए अवसर देना

आज का दौर है
बस फोटो खींचकर
निकल लेना

गणेश जी

हर बच्चा
चित्रकला सीखता है
गणेश जी से
जो ख़ूब बनवाते हैं
अपने को उनसे

जिसने
उनको बना लिया
चित्रकार हो गया
और वे आदि देव

चित्रकार के पटल पर
अन्य देव
उनके बाद ही
चित्रित होते हैं

गुब्बारे

ख़ाली पड़े
प्लाट में
काफ़ी कुछ फेंका गया है
दोने, पत्तल, गिलास, रैपर
और ढेर सारे गुब्बारे

किसी बालक प्यारे का
जन्मदिन रहा होगा

बड़े ख़ुश हैं
कूड़ा बीनने वाले छोकरे!

बारात

धीमे-धीमे
सरकती बारात में
तेज़-तेज़ थिरक रहे हैं लोग
डीजे से दूर,
डीजे के क़रीब
झोपड़-पट्टी के बच्चे
नाच रहे हैं
जो किसी भी बारात में
बाजे के पीछे हो लेते हैं
स्वांत:सुखाय कि अर्थ:लाभाय
लेकिन आनंद लेते और देते हैं नाचने का
अपना फ़न दिखाते हैं
ईनाम पाते हैं

बारात शादी घर में जाती है
और वे लौट जाते हैं

समाधान अपनाएँ दीवाली मनाएँ

किसी के पास दिये हैं तो
बाती, तेल, माचिस नहीं है

किसी के पास बाती है तो
दिया, तेल, माचिस नहीं है

किसी के पास तेल है तो
दिया, बाती, माचिस नहीं है

किसी के पास माचिस है तो
दिया, बाती, तेल नहीं है
दीवाली मनाना
अकेले का खेल नहीं है

समस्या अलग-अलग लेकिन
समाधान एक है अपनाएँ
सब अपनी-अपनी चीज़ ले आएँ
और मिलकर दीवाली मनाएँ!

यह माँग हमारी है

हम पेड़ों की गरदन पर
क्यों चलती आरी है,
राजा जी तुम न्याय करो
यह माँग हमारी है।

देते हैं हम सघन छाँव पर
काटे जाते हैं,
जाने कितने हिस्सों में फिर
बाँटें जाते हैं,
अपने हक के लिए लड़ाई
अपनी जारी है।

एक लकड़हारा जंगल में
छुपकर आता है,
जाने कैसा डर भीतर से
रोज सताता है,
साजिश करती रात यहाँ
डायन-हत्यारी है।

नहीं कभी उम्मीद रखी है
हमने मौसम से,
खड़े रहें आँधी-पानी में
हम अपने दम से,
हमसे धरती सुंदर,सुंदर
दुनिया सारी है।

योगेन्द्र प्रताप मौर्य
ग्राम-बरसठी, जनपद-जौनपुर, उत्तर प्रदेश-222162

बेटियां

क्षमा तपस्या करूणा और नयनों में,
शामिल प्रेम का रंग,
यही जिंदगी है, बेटियों से मिलती है ख़ूब उमंग।

अविरल धारा में बह कर, आतीं हैं लक्ष्मी घर पर।
सौभाग्य से भरपूर है मां बाप,
जिन्हें मिलता है यह प्रहर।

नम्रता और सुचिता से,
निकलने वाली गंगा को प्रणाम।
सद्बुद्धि दे जाती है,
हम करते शत-शत नमन वंदन और,
दिल को तसल्ली देती है,
मिल जाता है अपना मुकाम।

आलिंगन में भर लिया है जिसको,
वहीं हैं खुशियां भरपूर।
नवचेतना में शामिल होकर,
दुखों की दुनिया में, भर देती उम्दा सोच संग,
खुशियों व उल्लास की नीर।

राह पर चल रहे लोगों को है,
इस परिकल्पना की एक सीख।
मानने लगे हैं लोग, राह पर चल रहे लोगों को,
इस आगमन पर खरा उतरने में,
नहीं लगा सकती कालिख।

सम्पन्नता से लबालब भरी हुई,
एक खूबसूरत श्रृंगार है।
नवीन प्रयास है जहां से मिलती है सबको,
आनन्द और प्रसन्नता से, भरपूर एक उपहार है।

यही है जिंदगी, नर्मदा और ताप्ती यही है।
गंगा की धारा बह निकली,
सम्पन्नता और उत्साह से भरपूर,
समन्दर सी, भवसागर यही है।

डॉ० अशोक, पटना, बिहार

मुस्कराहट

मुस्कराहट है जीवन का सच्चा श्रृंगार
यही इंसान के जीने का ज़रिया
ईश्वर का दिया एक अनमोल उपहार
हर पल को बनाती ये कुछ ख़ास,
दुख के अंधेरों में, जब खो जाए रास्ता,
ना रखे अपना भी आपसे कोई वास्ता

मन की उदासी को छुपा लेती है,
हर दर्द को अपने मे समा लेती है।
खिलखिलाती हुई दिलों को छू जाती,
मुरझाए चेहरों को फिर से हंसा जाती।

बिना कुछ कहे भी बातों को कह जाती,
हर ग़म को ये आसानी से सह जाती
मुस्कराहट से दिलों में है प्रेम खिलता,
अपना तो क्या गैर भी ख़ुश हो मिलता

यह सच्ची हो तो दिल से दिल मिलाती,
हर रिश्ते मे नई तरंग उमंग भर जाती
चाहे अनजान हो या फिर कोई अपना,
हर किसी का पूरा हो इससे सपना

चलो मुस्कराहट से जीवन में रंग भरते हैं,
उम्मीद किसी की आज हम पूरा करते हैँ
किसी के लबों पर फिर मुस्कान लायी जाये
ये जिंदगी हो सार्थक जो किसी के काम आये

विश्व प्रकाश मेहरा, देहारादून

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

प्यार हो तो ऐसा .....

पद्मा अग्रवाल

रात के ग्यारह बजे थे शिशिर सोने की तैयारी कर रहा था , तभी उसका मोबाइल बज उठा था ....दीदी ने रुआंसी सी आवाज में कहा , 'शिशिर , इस बार दीपावली यहीं मना लो... '

'नहीं दी ,

आप जानती तो हो कि मैं आपके यहाँ आना नहीं चाहता ...'

वह नाराजगी भरे स्वर में बोलीं ," चाहे तेरी दी कितनी भी मुसीबत में हो "... और उन्होंने फोन कट कर बंद कर दिया ... उसकी आंखों की तो नींद ही उड़ गई थी ...

उसने ऑफिस में अपनी छुट्टी के लिये मेल लिखी और सुबह मुँह अंधेरे की ट्रेन से वह आगरा के लिये निकल पड़ा था ... वह डरा सहमा हुआ जब दी के घर पहुँचा तो सबसे पहले दीदी ही सामने पड़ीं थीं ... वह तो बिल्कुल भली चंगी दिख रहीं थीं ...

"दी यह कैसा मजाक है ..."

'' यदि मैं यह नाटक न करती तो तू भला आता क्या ...''

' हाँ यह बात तो सही है ...'

"अम्मा बाबूजी भी इस बार दीपावली पर यहीं आ रहे हैं ... इसलिये मैंने तुझे भी बुला भेजा ... तुझे यहाँ आये पूरे चार साल हो गये हैं "... वह चुप रहा था ....

दीदी ठीक कह रही हैं ...उसे यहाँ आने से डर लगता है ... वह डरता है ....उन यादों से जो उसका आज तक पीछा नहीं छोड़ पा रही हैं.... वह डरता था... रूही की सपनीली मासूम सी आँखों की यादों से और उसकी खिलखिलाती हँसी से ...

रूही कश्यप दीदी के मकान के बगल में रहती थी ... चार साल पहले जब छुट्टियों में दी के घर गया था तब ही उससे मुलाकात हुई थी ... गोरा संगमरमरी रंग , बड़ी बड़ी काली आँखें ... मानों आँखों में पर्मानेंट काजल लगा रखा हो ... घने लंबे काले बाल और प्यारी

सी निश्छल मुस्कान वाली प्यारी सी रूही .... वह तो उसको देखते ही उस पर लट्टू हो गया था ... वह सारी दोपहर दी के पास बैठ कर गप्पें मारती हुई समय बिताती और वह भी उसके आकर्षण में बँधा हुआ बिना कारण ही वहाँ बैठा रहता और उसे निहारता और बीच बीच में मुस्कुराता रहता और कई बार उसका मजाक भी बना देता ..., चिढा भी देता..... लेकिन उसकी मासूम बातें उसे बहुत अच्छी लगतीं ... धीरे धीरे वह उससे भी खुलने लगी थी उसको हिंदी कम आती थी इसलिये वह अंग्रेजी मिश्रित टूटी फूटी हिंदी बोलती ... उसकी बातों में उसे बहुत मजा आता ... वह उसके आकर्षण में डूबता जा रहा था ... न जाने कैसे दीदी की अनुभवी आँखों ने मेरी कमजोरी भाँप ली थी ..." शिशिर , क्या तुम रूही को पसंद करते हो ?"

दीदी के अचानक पूछे गये सवाल से उसके चेहरे का रंग उड़ गया था ... उसकी चोरी पकड़ी गई थी ....

'नहीं दी , ऐसा कुछ नहीं है ...'

'नहीं हो... तभी अच्छा है '

'पर क्यों दीदी ...'

'रूही की सगाई हो चुकी है और दिसंबर में उसकी शादी होने वाली है ...'

मेरे सपनों का महल हल्की हवा के झोंके से ही भरभरा कर ढह गया था ... मैं सोच ही नहीं पा रहा था कि अब क्या करूँ ... रूही मेरा पहला प्यार थी लेकिन वह तो किसी दूसरे की वाग्दत्ता थी ....

वह दी के पास रोज दोपहर में आया करती और मैं कोशिश करता कि उससे सामना न हो लेकिन वह किसी न किसी तरह उसके सामने आ ही जाती और बात करने की कोशिश भी करती लेकिन वह वहाँ से चुपचाप हट जाता ... हम दोनों के बीच ऐसे ही आँख मिचौली चल रही थी कि मैंने अपने जाने का टिकट करवा लिया क्यों कि मेरी जॉब के लिये कॉल आ गई थी ...

अगले दिन मुझे जाना था लेकिन चेहरे पर उदासी की पर्त छाई हुई थी क्योंकि रूही से अलग होना पड़ रहा था ... दिल कह रहा था .. शिशिर एक बार तो कह दे कि रूही मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ ....लेकिन वह मन ही मन सोचने लगा कि हर इच्छा पूरी थोड़े ही होती है ... वह छत पर गमगीन खड़ा होकर उमड़ते घुमड़ते बादलों को टकटकी लगा कर देख रहा था , उसके मन में भी बादलों की तरह अनेक विचार उमड़ घुमड़ रहे थे तभी रूही चुपके से आई और बोली, " शिशिर कल तुम जा रहे हो .?"

'हाँ... तुम तो खुश होगी , तुम्हें चिढाने वाला जा रहा है ... तुमसे कोई झगड़ा नहीं करेगा ... तंग नहीं करेगा ... तुम्हारा मजाक नहीं बनायेगा ....'

‘हाँ... हाँ... मैं बहुत खुश हूँ ...’ कहते हुये उसकी आवाज भर्रा गई ... मैंने चौंक कर देखा तो वह रो रही थी ... मैं काँप उठा क्या रूही भी मुझसे ..... अगले पल मैंने अपने को संभाला और उससे हँस कर कहा,” यह खुशी के आँसू हैं ...” जब भी वह नाराज होती थी तो फ्रेंच में बोलने लगती थी ... वह न जाने क्या बोल रही थी उसके लिये. समझना संभव नहीं था ....

अगले दिन रूही की यादों के साथ मैं अपनी जॉब में व्यस्त हो गया था ...लेकिन बार बार रूही को भुलाने की कोशिश करने के बावजूद इसमे कामयाब नहीं हो सका था ... कुछ महीनों के बाद दीदी ने बताया कि रूही की शादी हो गई .... जो उम्मीद का दामन मैं अभी तक पकड़े हुये था वह भी छूट गया ..

उसके बाद वह अब तीन -चार सालों के बाद आया था लेकिन उसकी निगाहें आज भी घर के हर कोने में रूही को ढूँढ रहीं थीं ...

‘‘कहाँ खोया है शिशिर .?”

“नहीं दी ….उस लड़ाकू रूही की याद आ गई थी ... अब तो वह पूरी अम्मा बन गई होगी ... गोलू मोलू कितने हैं ... यहाँ आती है कि नहीं ... ‘‘

‘वह तो यहीं है ...”

‘ दीवाली मनाने आई है ...’

‘नहीं शिशिर उसके जीवन के तो सारे दिये ही बुझ चुके हैं ....’

‘दीदी मैं समझ नहीं पा रहा कि आप क्या कह रही हो ....’ वह अधीर हो कर बोला था ...

‘शादी के एक साल बाद ही एक हादसा उसके पति को निगल गया ...’

उनकी आवाज दर्द से भीग उठी थी...

उसने दी को पकड़ कर झकझोर दिया था ... ‘दी इतने दिन हो गये आपने मुझे कुछ बताया नहीं .. ‘

‘क्या बताती .... बताने जैसा क्या था ....’

‘दीदी आप क्यों नहीं समझ पाईं कि रूही को मेरी जरूरत थी और मैं उसकी दुःख की घड़ी में उसके साथ नहीं खड़ा हो पाया ..’

‘मैं जानती हूँ कि तुम रूही से प्यार करते हो लेकिन पहले तो वह दूसरी जाति फिर अब वह एक विधवा भी.. ...अम्मा बाबूजी नहीं

मानेंगें.....‘

दी उसे वहाँ अकेला छोड़ कर चली गई थी ..वह रात भर विचारों की आँधी के झंझावात से जूझता रहा लड़ता रहा था ...सुबह होते ही वह रूही से मिलने उसके घर पहुँच गया था ... रूही सफेद सूट पहनी हुई उदास अपने वराण्डे में बैठी थी ...

‘‘रूही ...’’ ‘उसकी आवाज सुनते ही वह चौंक कर एकटक उसे निहारने लगी थी ... उसकी बड़ी बड़ी आँखों से आंसू की बूँद टपक पड़ी थी.

माहौल को हल्का करने के लिये वह बोला ,’ जब जा रहा था तब खुशी के आँसू बहा रहीं थीं आज मुझे फिर से देख कर दुखी हो गईं क्या ...’ रोते रोते वह मुस्कुरा उठी तभी अंदर से आंटी आ गईं थी उसने उनके पैर छुए तो बोलीं , ‘आज कितने दिनों के बाद इसके चेहरे पर मुस्कराहट दिखाई पड़ी है .. ‘

उसने फिर से उदासी की चादर ओढ ली थी .. वह समझ नहीं पा रहा था कि इस बोझिल वातावरण को कैसे सामान्य करे ...वह चुप रही थी ...आंटी बोलीं ,’ बस दिन रात यूँ ही बैठी आँसू बहाती रहती है ..शिशिर इसे कुछ समझाओ ... जाने वाला चला गया .. वह तो अब लौट कर आने वाला नहीं.... ‘

मैं चाह कर भी सांत्वना के दो शब्द नहीं कह पाया था ... मन में असंमंजस्य था ... क्या कहूँ ... क्या बोलूँ ...क्या मैं अपने प्यार को भूल पाया हूँ .... प्यार को भूलना क्या इतना आसान है .... अम्मा पापा दीवाली मनाने के लिये आये थे ... रूही से उनकी मुलाकात हुई ... दीदी मेरे और रूही के प्यार की बारे में जानती थीं... .. वह अक्सर रूही को जबर्दस्ती बुला लिया करतीं थीं . दीपावली की तैयारियों में रूही को मदद के लिये बुलातीं और इस तरह से अम्मा बाबूजी से उसका अच्छा परिचय हो गया था ... वह दोनों भी उसे पसंद करने लगे थे ... शाम के समय अक्सर सब साथ में चाय पिया करते ... एक दिन वह फोन पर बात करते हुए छत पर चला गया था तो अम्मा ने उसकी चाय लेकर रूही को ऊपर छत पर भेज दिया था .. ...

वह शिशिर को अकेला पाकर कुछ देर तक मौन रही फिर पूछा ,’ शिशिर तुमने अब तक अपनी शादी क्यों नहीं की .... ‘

‘अरे शादी भी करना है क्या .... मैं तो भूल ही गया था ....’

मेरी बात और कहने के अंदाज पर वह खिलखिला कर हँस पड़ी थी ... जब से आया था , आज पहली बार उसको खुल कर हँसते हुए देखा था ... वह खुश हो गया था ....

‘मजाक मत करो ... सच सच बताओ ...’

मैंने भी कहा , ‘तुमने भी तो शादी नहीं की .... ‘

‘तुम्हें मालूम नहीं कि मैं एक विधवा हूँ .... ‘कह कर वह रो पड़ी थी .

‘रूही तुम पढी लिखी लड़की हो कर इस तरह की बात कर रही हो ... ये 21 वीं सदी है और तुम बातें कर रही हो 18वीं सदी की .... तुमने मात्र दो साल अपने पति के साथ शादीशुदा जिंदगी बिताई है फिर एक हादसे में वह नहीं रहे .... तो अब क्या सारी जिंदगी तुम उनके नाम पर ऐसे ही रोते हुए गुजारोगी .... रोते रोते जल्दी बूढी हो जाओगी ... सुंदर आँखों पर चश्मा चढ जायेगा ... अभी तो आंटी अंकल हैं फिर अपना अकेलापन काटने के लिये क्या करोगी .. कुत्ता बिल्ली पालोगी ...रूही बस करो ... दूसरों के सामने अपने ऊपर तरस खाना और दया हासिल करना ...तुम रोती रहोगी .....लेकिन एक इंसान को अपना नहीं बना सकतीं .... दुनिया में तुम पहली नहीं हो , जिसके साथ यह हादसा हुआ है ... किसी के चले जाने के बाद जिंदगी रुकती नहीं ...न ही रुकेगी .....’

‘जब मै तुम्हें यहाँ से छोड़ कर गया तो मुझे भी यही महसूस हुआ था कि मेरे लिये दुनिया खत्म हो गई है और कहीं भी कुछ बाकी नहीं रह गया है ... पर क्या ऐसा हुआ ... नहीं न.... मैं जी रहा हूँ.....कि नहीं ... इसी तरह तुम भी जी लोगी ... ‘

वह उसकी बात सुन कर पल भर को ठिठक गई थी ... मैं नीचे चला आया फिर कुछ देर में वह भी लौट आई थी ..

दोनों के बीच में मौन पसर गया था ... दीपावली का दिन था ... मैं दीदी के घर की छत पर दिया सजा रहा था , रूही भी अपनी मुंडेर पर पहले से ही दिया सजा रही थी ... हवा के तेज झोंके से दीपक बार बार बुझ जा रहा था .... उसके चेहरे पर मायूसी दिखाई पड़ रही थी तभी उसके दिये को मैंने अपने हाथों से ढक दिया और उसकी रोशनी में उसका चेहरा जगमगा उठा था ....’ रूही वैसे तो मेरे पास बहुत सारी लड़कियों के ऑफर थे लेकिन मेरे दिल में तुम बसी हुई हो ...’ ‘क्या तुम मेरी जीवन संगिनी बनोगी ?....’

रूही की आँखों से एक नन्हा सा खुशी का आँसू छलक उठा और चेहरे पर पुरानी वाली निश्छल मुस्कान छा गई थी ... वह खुशी से वल्लरी की भाँति शिशिर के सीने से लग गई थी ... उसने भी जल्दी से अपने पास आई खुशियों को अपनी बाहों के घेरे में समेट लिया था...

अचानक ही छत पर बिजलियाँ जगमगा उठी थी और अम्मा बाबू जी के साथ दीदी और सभी लोगों की तालियों की आवाज से वह दोनों चौंक पड़े थे .....

दोनों ही शर्मा कर अम्मा बाबूजी के पैरों पर झुक गये थे ....

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

चिंतन

अनमोल धरोहर हैं वरिष्ठजन

जीवन का एक कटु सत्य है कि वृद्धावस्था अर्थात बुढ़ापा सबको आता है। यह जीवन का अंतिम और अनिवार्य पड़ाव है। ज्यों-ज्यों मनुष्य की आयु बढ़ती है, वैसे - वैसे समस्त इंद्रियों की कार्य - क्षमता का ह्रास होने लगता है।

आयु प्रक्रिया एक जैविक वास्तविकता है, जिसकी अपनी एक विशिष्ट गतिशीलता है, जो मानव - नियंत्रण से परे है। विश्व के अधिकांश विकसित देशों ने 65 वर्ष की आयु के व्यक्ति को वृद्धजन स्वीकार किया है, वहीं अफ्रीका जैसे देश यह पश्चिमी अवधारणा नहीं मानते हैं। वहाँ 50 से 65 वर्ष की आयु वृद्धावस्था मानते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ 60 वर्ष या इससे अधिक आयु के व्यक्ति को वृद्ध मानता है। इन्साइक्लोपीडिया बिटेनिका में सांख्यिकीय एवं लोक प्रशासन उद्देश्यों के लिए 60 या 65 वर्ष आयु को वृद्धावस्था माना है। पश्चिमी देशों में इस आयु को सेवानिवृत्ति एवं सामाजिक सुरक्षा के पात्रता योग्य समझते हैं।प्रायः यही प्रक्रिया भारत में भी लागू है।

संयुक्त राष्ट्र संघ एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि विश्व के देशों में ही नहीं, भारत में भी वृद्धजन की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। 60 वर्ष या इसके ऊपर वृद्धजन का अनुपात वर्ष 2000 में 9.9 प्रतिशत बढ़ा, वर्ष 2025 में 14.6 प्रतिशत तथा वर्ष 2050 तक 21.1 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है। यूएनएफपीए भारत प्रमुख के अनुसार '60 वर्ष या उससे अधिक आयु के लोगों की संख्या 2050 तक 34.6 करोड़ हो जाएगी। यह वर्तमान से लगभग दोगुनी होगी। इस अर्थ में लगता है कि भारत' वृद्ध होते

लोगों' का देश के रूप में सामने आ रहा है। हमारे यहाँ वृद्धजन को' वरिष्ठ नागरिक' कहकर मान दिया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 14 दिसम्बर, 1990 को सदस्य राष्ट्रों की सहमति से 1 अक्टूबर को प्रतिवर्ष 'अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

वृद्धावस्था के सामाजिक पहलू वृद्ध पीढ़ी के आयु संबंधी प्रभावों, सामूहिक अनुभवों एवं साझा किए मूल्यों के पारस्परिक समन्वय द्वारा प्रभावित होते हैं। परिवार और समाज में वृद्धजन का सदैव सम्मानजनक स्थान रहा है। किन्तु 21 सदी में तेजी से बदलते परिवारों में उनका स्थान लगातार नीचे गिरता जा रहा है। विश्वभर में बढ़ रही घोर प्रतिस्पर्धा से नैतिक एवं पारिवारिक एकता के मूल्यों का पतन होता जा रहा है। वृद्धों पर इसका प्रभाव अधिक है। जीवन के अंतिम पड़ाव में वे बेटों और परिवार के सुख से वंचित हो रहे हैं। उन्हें बुढ़ापे का भय, अकेलापन, सहगामी कठिनाइयाँ, दौर्बल्य, संयुक्त परिवारों का विघटन, पीढ़ी अंतराल एवं संघर्ष, अवसरवादी मनोवृत्ति, जीवनयापन की आवश्यक सुविधाओं का अभाव आदि की चिंता प्रतिपल सताती रहती है। वर्तमान समय उनकी ये समस्याएं रौद्र रूप दिखा रहीं हैं और अनेक प्रकार से प्रताड़ित कर रही हैं। वे परिवार में अकेले पड़ गए हैं क्योंकि आजकल युवकों को स्वदेश में इच्छित कार्य के अवसर नहीं मिल रहे हैं। विदेशों में पढ़ने तथा अधिक धन कमाने एवं वहाँ स्थायी रूप से बसने वाले युवाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। आधुनिक सुख - सुविधाओं की चाह में वे स्वयं तो विदेशों के बड़े शहरों में रहना चाहते हैं लेकिन अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम या गाँव - कस्बे में अकेला छोड़ना चाहते हैं। युवाओं के समक्ष भी विवशता कि उन्हें गाँव - घर के आसपास आजीविका का कोई साधन नहीं मिलतारऔर वे शिक्षित बेरोजगार भी कब तक रह सकते हैं।

आधुनिक जीवन की व्यस्तता और पारिवारिक जीवन के टूटते - विखरते संबंधो ने वृद्धजन को गहरे से प्रभावित किया है। आज रिश्ते - नातों की गर्माहट जताने का समय भी किसी के पास नहीं है। इससे उत्पन्न निराशा, क्षणवादिता, और शून्यता परिवार संस्था के अस्तित्व को ही समाप्त करने पर तुली है। जिन वृद्धजन के परिवार के सदस्य और उनकी संतान एक साथ रहते भी है, उनमें भी संयुक्त परिवार जैसी समझ और एकता अब देखने में नहीं आती है। अँग्रेजी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों को बुजुर्गों के पास बैठने का समय नहीं है।

वृद्धजन चुपचाप एक किनारे पड़े रहते हैं, उनसे कोई बात नहीं करता। उन्हें पूरा सम्मान, सुरक्षा तथा देखभाल नहीं मिलती। घर के अधिकांश सदस्य टीवी, मोबाइल, इंटरनैट आदि उपकरणों से चिपके रहते हैं। यांत्रिक सभ्यता के बढ़ते कुप्रभाव से पारिवारिक जीवन पूर्णतः अभिशप्त है। एकल परिवारों में पति-पत्नी व्यवसाय से जुड़े रहते है, जिसके कारण छोटे बच्चों और वृद्ध माता-पिता को अपेक्षित प्यार नहीं मिल पाता। वैसे ग्रामीण भारत आज भी संस्कारों में जीता है और हमारे संस्कार वृद्धों की अवहेलना की अनुमति नहीं देते। यह बीमारी शहरों और महानगरों में अधिक व्याप्त दिखती है, क्योंकि वहाँ पाश्चात्य संस्कृति का गहरा प्रभाव है।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

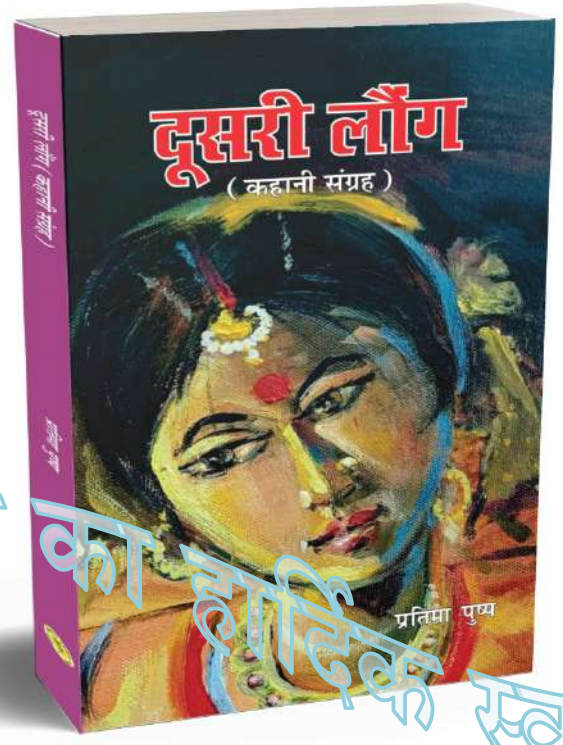

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

यदि वृद्ध दंपति एक साथ रहते हैं, तो कुछ सीमा तक एक - दूसरे का संबल बने रहते हैं, किन्तु यदि किसी एक की मृत्यु हो जाती है, तो फिर दूसरे के लिए समस्या बन जाती है। यदि उनको पेंशन या जमापूंजी का आश्रय नहीं है, तो बेटे - बहू पर उनका आश्रित रहना विपरीत परिस्थितियों का निर्माण करता है। यहाँ इसका आशय यह नहीं है कि सभी संतानें अपने माता-पिता की अवहेलना करती हैं, किन्तु अधिकांश घरों में वृद्धों के प्रति तिरस्कार भाव ही रहता है।

घर में वृद्धों के न होने से घर, विश्रामालय जैसा लगता है। अकेले रहने या पर्याप्त सम्मान न मिल पाने से वृद्धजन भी दुख एवं निराशायुक्त जीवन व्यतीत करते हैं।

वृद्ध व्यक्ति परिवार का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। वह एक घने वट-वृक्ष की भाँति होता है, जो घर - परिवार को सदैव शीतल छाया प्रदान करता है। वह देखे गए और भोगे हुए अनुभवों की एक पाठशाला है, जिसमें परिवार के सदस्य शिक्षण प्राप्त करते हैं। वह परिपक्व अनुभव एवं संचित ज्ञान द्वारा सही मार्गदर्शन से परिवार के सदस्यों को विखरने नहीं देता और न ही उनमें निरर्थकता का भाव उत्पन्न होने देता है।

वृद्धजन की पूर्ण सुरक्षा और समस्याओं के निदान हेतु कुछ सुझाव निम्नवत हैं -

1 भारतीय संस्कृति की आदर्श परिवार - संस्था के महत्व से समाज को पुनः जाग्रत किया जाए तथा वृद्धजन के सम्मान की रक्षा की जाए।

2 बच्चों को वृद्धों के साथ शिष्ट, शालीन , नैतिक तथा सम्मानजनक व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जाए। प्रातःकाल उठते समय बच्चे बड़े - बुजुर्गों के चरण स्पर्श करें।

3 वृद्ध उम्रभर की स्मृतियों, अनुभवों, सुख - दुख, सफलता - असफलता आदि की अमूल्य निधि हैं, अतः हमें वृद्धजन को देवतास्वरूप मानकर सेवा - सुश्रूषा करनी चाहिए।

4 कहते हैं कि वृद्धावस्था में व्यक्ति का बचपना लौट आता है, अतः उनके परामर्श, बातचीत या व्यवहार को बुरा नहीं मानना चाहिए। उनके मन में परिवार के प्रति अनिष्ट का भाव कभी नहीं रहता।

5 वृद्धजन के अनुभव तथा ज्ञान का लाभ उनकी रुचि के अनुसार समाज के विकास में लेने के लिए सार्थक योजना बनानी चाहिए, जिससे वे नौकरी या व्यवसाय से अवकाश प्राप्त करने के बाद भी सक्रिय, प्रसन्न, उत्साही, सुरक्षित और स्वस्थ रह सकें।

6 वृद्धों के लिए सामाजिक बीमा योजना प्रारंभ की जानी चाहिए, जिसका दायित्व केंद्रीय सरकार और राज्य सरकारें वहन करें। स्वास्थ्य , परिवहन, पर्यटन आदि सेवाओं में छूट, प्राथमिकता तथा वित्तीय सहायता दी जाए।

7 वृद्धजन को अभिरुचि, दृष्टि एवं स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उन्हें रुचिकर एवं उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध करानी चाहिए, जिससे वे समय का सदुपयोग कर सकें।

8 हमें सदैव स्मरण रहे कि वृद्धावस्था एक जैविक प्रक्रिया से अधिक सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एकदिन अवश्य घटित होगी। युवाओं का यह दायित्व बनता है कि वे वृद्धजन की सुरक्षा और उनकी भलाई पर ध्यान दें। इससे उनकी संतानें भी बुढ़ापे में सेवा के लिए तत्पर रहेंगी।

9 परिवार के सदस्यों तथा वृद्धजन के बीच संवाद की भाषा शिष्ट होनी चाहिए, क्योंकि शक्ति, पद, पैसा के दुष्प्रभाव से वाणी दूषित हो सकती है। दोनों पक्ष संबंधों की गरिमा अवश्य रखें। अतः आवश्यक है कि सभी उनकी सेवा करें और प्रत्येक कार्य में उनकी सम्मति लें।

10 वृद्धों के स्वास्थ्य, जलपान, भोजन, विश्राम आदि के लिए समुचित स्थान तथा समय का ध्यान रखना चाहिए। स्थान स्वच्छ एवं व्यवस्थित होना हो, जहाँ सभी आवश्यक सुविधाएं सरलता से उपलब्ध हों।

11 परिवार में समय-समय पर धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएं, जिसमें वृद्धजन को प्रमुखता से सम्मिलित किया जाए।

12 घर के बच्चों को महापुरुषों के आदर्शों से परिचित कराया जाए, जिससे वे बड़ों की आज्ञापालन की शिक्षा ले सकें।

13 वृद्धजन को मोबाइल दें, जिससे वे अपने परिचितों, मित्रों और सहयोगियों से वार्तालाप कर सकें। इससे वे अपने मनपसंद के वीडियो भी देख सकते हैं।

14 यथासंभव परिवार के सदस्य वृद्धों के साथ बैठकर भोजन करें। खानपान में उनकी रुचि का भी ध्यान रखा जाए।

15 वृद्धजन से सभी आदर तथा विनम्रतापूर्वक बात करें। उनसे कभी ऊँचे स्वर में बात करना, फटकारना, उनकी बातों का मजाक उड़ाना अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करना आदि दुर्व्यवहार करके उन्हें मानसिक एवं भावनात्मक आघात न पहुँचाएं। उनकी शारीरिक अक्षमता का लाभ उठाकर मारपीट करना, उनकी जमापूंजी का अनुमति लिए बिना उपयोग करना और पेंशन आदि देने के लिए विवश करना शारीरिक तथा आर्थिक उत्पीड़न है, यह अन्याय के साथ ही दण्डनीय अपराध भी है।

महान दार्शनिक कंफ्यूशियस का कथन विचारणीय है - " बुढ़ापा, यकीन मानिए, एक अच्छी और सुखद चीज है। यह सच है कि

आपको धीरे से मंच से उतार दिया जाता है, पर फिर आपको दर्शक के रूप में सबसे आगे आरामदायक कुर्सियों पर बिठा दिया जाता है"। वृद्धावस्था जीवन का स्वर्णिम काल है। यह सोचना कितना सत्य और सार्थक है कि वे व्यक्ति सौभाग्यशाली है,जिनको वृद्धावस्था का आनंद मिलता है, क्योंकि कितने ही लोग इस सुख से वंचित रह जाते हैं। आराम से बुढ़ापा बिताना असंभव नहीं है।

याद रखें, यह आपके हाथ में है कि आप अपना शेष जीवन हँसकर जिएं या रोते - रोते। यह मात्र सोच और इच्छाशक्ति का ही खेल है। वृद्धजन अपने जीवन के अधूरे सपनों को पूरे कर यादगार बना सकते हैं।

वृद्धावस्था में सुखी जीवन के लिए वृद्धजन को कुछ आवश्यक बातों पर ध्यान देना श्रेयस्कर होगा -

1 वृद्धावस्था आने से पूर्व आज के प्रत्येक व्यक्ति को यह मान्यता बना लेनी चाहिए कि उसे एकाकी और स्वावलंबी जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ सकता है। उसके लिए मानसिक तैयारी के साथ अर्थव्यवस्था भी ऐसी रखनी चाहिए कि किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े, जब उपार्जन क्षमता न रहे।

2 शरीरचर्या से संबंधित सभी कार्यों में आत्मनिर्भर होने का अभ्यास जारी रखना चाहिए। इससे अशक्त, रुग्ण या अपंग हो जाने तक अपने निजी कामों के लिए दूसरों की सहायता कम से कम लेनी पड़े।

3 बुढ़ापे में निराशा छाने लगती है और स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। पिछले अच्छे दिनों की स्मृति में आज भारी लगने लगता है। अतः आज की परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने का प्रयत्न करें। कहते हैं - जैसी अवस्था, वैसी व्यवस्था।

4 वृद्धों को अपने समान लोगों का एक स्वतंत्र परिवार बनाना चाहिए, जिसमें हँसते - हँसाते मिल - जुलकर जीना सरल हो सके।

5 परिवार में सदस्यों के साथ विचारों का तालमेल बनाएँ, कभी दुराग्रह न पालें। अपना मानसिक संतुलन न बिगड़ने दें।

6अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर शांति, संतोष और प्रसन्नतापूर्वक जीवन बिताएँ। इस समय का सदुपयोग स्वाध्याय, पूजा - पाठ या सकारात्मक विचार- विमर्श में करें। अपनी अभिरुचियों को पुनर्जीवित करें तथा स्वतंत्र लेखन, कृति - सृजन,गोष्ठी, सत्संग, योगाभ्यास या गायन - वादन आदि सीख सकते हैं।

7 भूतकाल में प्राप्त अधिकार, प्रतिष्ठा, वैभव, संपन्नता आदि की स्मृतियों में न डूबे रहे। यह सोचें कि वर्तमान में आप क्या हैं।

8 अपना स्वभाव तथा आदतें ऐसी बनाएँ कि आपस में टकराव न हो। बात - बात में अपना हस्तक्षेप बंद कर दें। किसी से किसी प्रकार की शिकायत न करें। अपनी आवश्यकताओं को सीमित करें।

9 अनुकूल - प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में प्रसन्न रहने की चेष्टा करें, कोई भी प्रतिक्रिया न करें। किसी से किसी प्रकार की आशा न करें। राह चलते किसी को उपदेश न दें।

10 बुढ़ापे में बच्चों को समय देना बहुत आवश्यक है। घर के नन्हे - मुन्नों के साथ खेलने से मन बहलाव होता है।बच्चों को पढ़ाने में मदद करें तथा उनकी समस्या को हल करने का प्रयास करें। यदा-कदा बच्चों को पार्क लेकर जाएं और उनके साथ प्रकृति का आनंद लें।

11 अपने अधूरे कार्य पूरे करें। समाज सेवा के लिए समय दें। अच्छे कार्यों में स्वयं को व्यस्त रखें। आत्मविश्वासी बनकर सकारात्मक सोच विकसित करें।

12 घर , आंगन - पोर्च या बाहर अपने सामने की गली एवं नाली की नियमित साफ-सफाई स्वयं करें। इससे शरीर का व्यायाम भी हो जाएगा और घर भी स्वच्छ रहेगा।

निष्कर्षतः वृद्धावस्था लंबी प्रतीक्षा के बाद संतोष का मीठा फल चखने का सुअवसर है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि वृद्धावस्था अभिशाप नहीं, अपितु यह मानव जाति के लिए वरदान है। इस आयु में आँखों की ज्योति चाहे क्षीण हो जाए, किन्तु आध्यात्मिक ज्योति निश्चित रूप से बढ़ती है। याद रखें, हम उसी दिन वृद्ध होंगे,जिसदिन हम सीखना बंद कर देंगे। अपने चेहरे पर भले ही झुर्रियां पड़ जाएं, पर उत्साह में झुर्रियां नहीं पड़ने दें। इस अवस्था में चिंतित होने के बजाय, जो मिला है, उसी में संतोष करें। वृद्धावस्था का अगला पड़ाव मृत्यु भी, दुख या भय का विषय नहीं, अपितु प्रसन्नता का संदेशवाहक है। अतः हमें अपने बड़े - बूढ़ों की उपेक्षा न करके, उनका सम्मान करना चाहिए। हमेशा यही सोचिए -

साक्षात भगवान, वृद्धजन होते हैं।

अभिज्ञान संस्थान, वृद्धजन होते हैं।

शीतल छाँव समान, वृद्धजन होते हैं।

सिर पर तना वितान. वृद्धजन होते हैं।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

117 आदिलनगर, विकासनगर

लखनऊ 226022

कहानी

"रात भर का सफर"

डॉ. सतीश "बब्बा"

सफर तो सफर है, यह जिंदगी ही एक सफर है और उसमें अच्छा हमसफर मिल गया और वह जितना सुख यात्रा में देता है, उतना ही दुख वह मंजिल पर बिछड़ जाने में देता है।

अगर हमसफर निर्दयी, कठोर और कुटिल मिलता है तो पूरी यात्रा ही दुखदाई बना देता है और कब उसका स्टेशन आए और वह उतर जाए यही इंतजार रहता है। और उसके बिछड़ने में कोई दुख नहीं होता है। लेकिन अपनी मंजिल करीब आ गई हो तो फिर क्या फायदा हर्ष क्या विषाद क्या?

शाम की ट्रेन बरौनी एक्सप्रेस में स्लीपर कोच की सीट ए सी बी 3 में तबदील हो गई थी। मेरी नीचे की सीट थी और मेरे सहयात्री की ऊपर की सीट थी। लेकिन मेरी नीचे की सीट पर सामने वाली नीचे की सीट पर एक नव युवती जो अति रुपवती और करभोरु थी, आसीन थी।

अंदर से दिल भयभीत हो रहा था। बिहार के लोगों के प्रति जो भय मेरे दिमाग में भरा गया था वह कोई नया नहीं था।

ऐसा नहीं है कि, बिहार की मेरी यह पहली यात्रा थी। लेकिन इस बार बिहार की मेरी यात्रा धार्मिक नहीं एक विशेष कार्य की थी जो मेरे साथ यात्रा कर रहे रामनाथ के लिए थी और उसमें एक दिन नहीं दो दिन भी लग सकते थे। इसीलिए हमने वापसी का टिकट बुक नहीं

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कराया था।

वह सुंदरी लगता है अकेले ही यात्रा कर रही थी। कुछ औपचारिक बातें उसकी हमारी हुई थी बस! वैसे भी वातानुकूलित डिब्बे में ज्यादा दिक्कत नहीं होती है और भीड़भाड़ भी नहीं रहती है, जनरल वाले यहां कम ही तशरीफ लाते हैं!

रामनाथ भी स्वभाव का अच्छा व्यक्ति था और मेरी उसकी अच्छी खासी पटती थी। हम एक ही वर्तन में खाना पीना कर लेते थे।

इस बार की यात्रा से एक नया अनुभव मिलेगा और वहां के सरकारी आफिस और आफिसर के बारे में जानकारी प्राप्त होगी। कार्यालयों की कार्य प्रणाली को जानने समझने का मौका मिलेगा। ऐसे मैं सोच रहा था कि, उस नवयौवना ने बिना किसी भूमिका, औपचारिकता के मुझसे प्रश्न कर दिया, "आपको कहां तक जाना है?"

मेरे मन के तार झनझना उठे और मैंने बहुत ही शालीनता से, जितना नम्रता वाणी में बन सकी उतनी नम्रता से कहा, "हमें मुजफ्फरपुर जाना है!"

मैं और कुछ कहता पूछता कि उसने पहले ही बताया कि, "मैं भी मुजफ्फरपुर तक ही जाऊंगी!"

मन तो बहुत कुछ सोच रहा था। अभी तक हम किसी रिश्ते के तहत कोई संबोधन, कोई भी बात नहीं किए थे!

मैं कल्पना के सागर में डूबने - उतराने लगा था। सोच रहा था कि, बिहार में इतनी सुंदरता है क्या? पता नहीं यह बिहार की है या और किसी अन्य प्रांत की! इसी उहापोह में मैं फंसता जा रहा था कि, इसके साथ कैसा रिश्ता बनाना ठीक रहेगा और इसके मन में क्या है?

उसी ने फिर पहल किया। उसने कहा, "क्या सोच रहे हैं आप?"

मेरी चोरी जैसे पकड़ी गई हो और मैं नींद से जैसे जगा होऊं, मैंने कहा, "कुछ नहीं, कुछ नहीं!"

उसने पूछा, "आप कहां से हैं!"

मैंने कहा, "मैं उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश बार्डर से हूं और आप कहां से हैं!"

मैंने हिम्मत करके पूछ ही लिया। उसने कहा, "मैं बिहार से ही हूं!"

मैं कुछ और पूछना चाहता था कि, उसने फिर कहा, "मेरी आदत है, बातचीत अच्छे लोगों से करने की! मोबाइल बहुत देर तक नहीं देखा करती हूं! यहां इस यात्रा में आप हमारे पड़ोसी हुए भिर भी आप शरमा क्यों रहे हैं?"

उसकी इन बातों से मैं आह्लादित हो गया और मेरी हिम्मत बढ़ गई थी। मैं कोई अच्छा आदमी उसे लग रहा हूं, भला बताइए चेहरे से किसी की पहचान संभव है क्या?

मैं भी सहयात्री से संपर्क चाहता था लेकिन विषमलिंगी से थोड़ी झिझक महसूस कर रहा था। अब मैं बहुत खुश था। मन साफ होकर भी कुछ सीमाएं लांघने की इच्छा कर रहा था और कोई मजबूत साथ बनाने को मन करता था।

अब खाना खाने का समय आया और रामनाथ अपनी ऊपर की सीट से उतर आया और मैंने उस वरारोहे से कहा, "खाना आप भी खा लीजिए!"

"हां, मैं भी यही कहना चाहती थी!" उसने अपने झोले को खोलते हुए कहा था।

मैंने कहा, "इसी में खाते हैं, आज हमारे यहां के खाने का स्वाद लीजिए न!"

उसने कहा, "हम सब भारतीय हैं और थोड़ी बहुत अंतर से खाना खाया करते हैं!"

मैंने कहा, "आप शायद मछली...! कहते हैं अगर शादी में मछली नहीं परोसी गई तो बाराती नाराज हो जाते हैं!"

वह खुलकर हंसी, उसकी हंसी ऐसी लगी थी मुझे जैसे मंदिर में घंटी बजने लगी हो और मैंने देखा जैसे उसके होंठों से गुलाब झड़ रहा हो! उसने कहा, "ऐसी तो कोई बात नहीं है और हम भी शाकाहार पसंद करते हैं!"

हमारी सब्जी और खटाई उसने लिया और उसने हमें चूड़ा दिया जो खाने में बहुत ही उत्तम, स्वादिष्ट था।

समय गुजरने में देर नहीं लगती और रात्रि के नौ बज गए थे। अब सोने की तैयारी करने लगे हम लोग!

उसी कम्पार्टमेन्ट में बगल की सीट से दो आंखें उस लड़की पर निगाहें गड़ाए हुए थी जो हम लोग नहीं जान पाए थे।

सभी लोग सो गए थे। मुझे नींद नहीं आ रही थी। मुझ सुंदर के पुजारी को अभी भी कल्पनाएं सतायमान कर रही थी।

गैलरी में से हल्की मद्धिम रोशनी आ रही थी। तभी बगल की सीट पर हलचल हुई और एक भौंड़ा सा आदमी सीट से उतरकर गैलरी में खड़ा होकर इधर उधर देखने लगा था शायद वह कोई जाग तो नहीं रहा है और पुलिस वालों की भी आहट ले रहा था।

वह चलकर उस नवयुवती के मुह पर से चद्दर हटाया और उसके मुंह को दाब लिया। वह छटपटाई लेकिन आवाज नहीं निकल

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

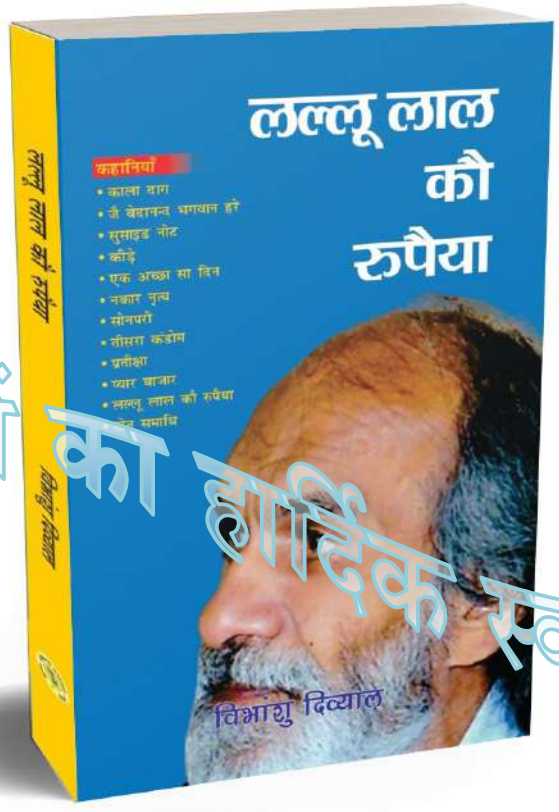

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

पा रही थी। वह उसके ऊपर चढ़ता तब तक मैं अपने आपको रोक नहीं पाया और उसके टांगो के बीच में मेरी जोरदार लात पड़ गई। वह झुका था कि, मेरा पैर उठ गया था।

पता नहीं कहां उसके लगा था मेरा लात, कि वह बिलबिला कर सीधा हो गया और उसकी पकड़ से उस लड़की का मुंह छूट गया था।

वह लड़की फुर्ती से खड़ी हो गई और उसने उस दरिंदे को एक लात मारी और वह भाग गया। इतने में रामनाथ भी जाग गया था और मैं उससे कहा, "पुलिस को बुलाऊं, वह ट्रेन से जाएगा कहां!"

वह बोली, "तमाशा करने से कोई फायदा नहीं है और पुलिस वालों को आप जानते हैं, सब मिली भगत भी हो सकती है!"

उसने हाथ जोड़कर मेरा आभार व्यक्त किया और कहा, "यह लीजिए मेरा पता और मोबाइल नंबर, अगर दिक्कत हो तो मुझे बुला लेना! ऐसा भी कर सकते हैं मेरे यहां चलकर नहा-धोकर, खाना खाने के बाद अपने काम के लिए चले जाना! आप चिंता मत करना मैं मछली नहीं खिलाऊंगी!"

और हम हंस पड़े थे। गाड़ी अपनी तेज रफ्तार में दौड़ रही थी और वह मुझे अपनी सीट में बैठाकर 'सो जाओ' कह रही थी।

लेकिन उस घटना से उसकी भी और मेरी भी नींद कोसों दूर भाग गई थी। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया था। मेरी हालत क्या हो सकती है; आप अनुमान लगा सकते हैं। मैं स्वर्ग के झूले पर झूल रहा था।

मैंने उसे दूर नहीं किया बल्कि और पास में लाकर अपने बदन में छुपाकर उसे चद्दर ओढ़ा दिया था और वह सो गई थी। जैसे, कुछ हुआ ही नहीं था और वह अपने आपको कवच में सुरक्षित महसूस कर रही हो!

सुबह का मंजर वही सुबह के चार बजे वह जागी और बैठ कर मुझे पड़ने के लिए मजबूर कर दिया और मेरा सिर अपनी कोमल जांघों पर रख दिया और कहा, "सो जाओ घंटे दो घंटे के लिए, गर्मी उतर जाएगी और यह गाड़ी आठ बजे ही मुजफ्फरपुर पहुंचेगी। अब मैं जागती रहूंगी!"

मुझे कब नींद आ गई मैं जान नहीं पाया और जब उसने मुझे प्यार से जगाया तब तक स्टेशन आ गया था। हम लोग झोला लेकर तैयार हुए कि गाड़ी रुक गई थी।

जब हम उसके साथ नहीं गए तो वह रो पड़ी थी और मैंने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था, "अभी आप जाइए, हम एक बार जरूर आएंगे आपके यहां!"

और वह चली गई थी। हमने स्टेशन के सामने एक गेस्ट हाउस में कमरा लिया और नहा धोकर तैयार हुए फिर चल दिए पुलिस हेडक्वार्टर की ओर वहीं हमारा काम होना था।

हमें शहर के एक थाने में भेजा गया। वहां जाकर हमें बिस्वास ही नहीं हुआ कि, थ्री स्टार वाली वर्दी पहने हुए यह वही खूबसूरत लड़की हमें फिर मिल जाएगी।

उसने देखते ही हमें पहचान लिया और तुरन्त वह खुद जा जा कर हमारे काम उसी दिन करवा दिये थे।

काम हो जाने पर हम लोगों ने करंट में रिजर्वेशन करवा लिया। उसके बिना मन हम लोग स्टेशन आ गये थे।

वह अपनी ड्यूटी करने के बाद सीधे स्टेशन पर पहुंच गई और हमें खिलाती रही।

हमारी गाड़ी आई और हमें बैठाते वक्त वह फफक कर रो पड़ी थी। लोग एक पुलिस इंस्पेक्टर को रोते देखकर विस्मित हो गये थे। मैं उसे फिर आने का वादा किया था; जिसे आज तक नहीं निभा पाया हूं।

इतना सब होने के बावजूद अपने और उसके बीच के रिश्ते को मैं अभी तक नाम नहीं दे पाया हूं और उसकी ओ जाने।

उस रात भर के सफर को याद करके मैं आज भी रोमांचित हो जाता हूं और मेरी आंखों से चंद अश्रुबिंदु गिर ही जाते हैं, पता नहीं यह खुशी के हैं या गम के!

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

खलिहान में

-ज्ञानेन्द्र खतिवडा

खलिहान में हूँ
धान माँड़ रहा हूँ
दो गोरू घूम रहे हैं
पीछे लाठी लेकर-पीछे
मैं भी घूम रहा हूँ
नहीं-नहीं
तीन गोरू घूम रहे हैं
मैं भी गोरू की तरह खट रहा हूँ
मैं तो महा गोरू हूँ
बेशुमार खट रहा हूँ
क्योंकि पुवाल और धान
अलग होने के बाद
पुवाल गोरू का होता है
धान साहू का होता है
और साल भर खटने के लिए
खेत मेरा होता है।

*****

सालबारी बाजार- दार्जिलिंग734002

नेपाली से हिन्दी अनुवाद : बिर्ख खडका डुवर्सेली

एकांत भिगोता रहा

ज्ञानेंद्र खतिवडा

एकांत बहता ही रहा
पानी की तरह
मुझे भिगोता रहा।
और मैं निर्वस्त्र नहाता रहा।
एकांत तर-बितर पसरता रहा
घर के चारों ओर
उसके एक गीत को
ध्वनिहीन संगीत को
आत्मसात करते हुए
मैं भी बार-बार गुनगुनाता रहा।
बरसा एकांत

बिर्ख खडका डुवर्सेली

आकाश से भी
ओलती के बीच
और मैं अपना शिर
समर्पित करता रहा।
एकांत बनकर नदी
बहती रही
मंजिल तक
पहुँचने की ख़ातिर
मैंने बड़े पत्थर को पुल बनाया था।
कभी इधर कभी उधर
करता रहा
सारा दिन एकांत मेरे संग ही था
और जब ढल गई शाम
वह मुझे ले गया
बिस्तर तक।
और खुद घर से बाहर निकलकर
पास ही के पोखर के
मेढ़कों के साथ था
गलियों के भौंकते
कुत्तों के साथ था
मेढ़क झाड़ियों के कीड़े
बटोर रहे थे
कुत्ते गलियों में
यूँ ही भौंक रहे थे।
यहाँ तक
मेरा चादर बने
रात के घने रंग को
जगह-जगह छेद
बनाने के वास्ते
हथियार लिये
दोचार जुगनुओं को भी बार-बार
भेजता रहा...।
एकांत रातभर
आँखें भी लगाता रहा...।

हिन्दी अनुवाद : बिर्ख खडका डुवर्सेली

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

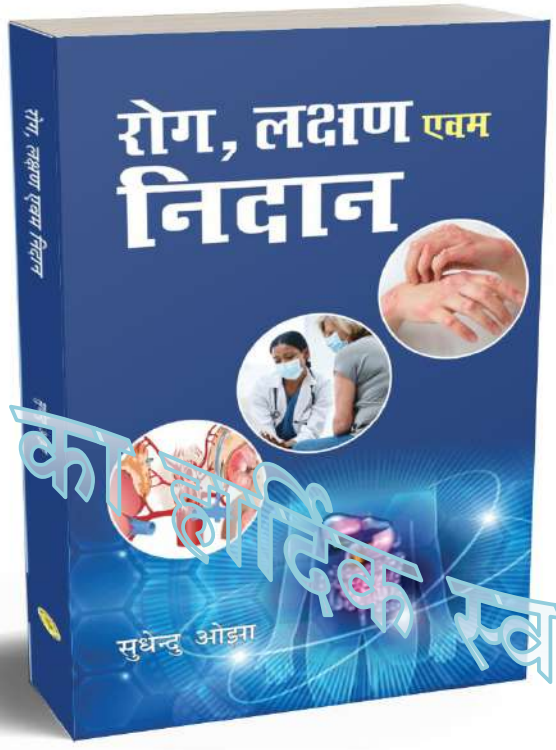

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

कहानी

विनीता शुक्ला

गाँठ

टी. वी. पर, उलूक- पक्षी की, चर्चा हो रही थी; यह कि वास्तव में वह, अशुभ है या नहीं. चर्चा मुझे, हठात ही, अतीत में , खींच ले गयी. दोपहर का, समय था. हम दो सखियाँ, संगीत की, प्रयोगात्मक परीक्षा के लिए; अपनी बारी की, प्रतीक्षा कर रही थीं. सहसा मुझे पेड़ पर, एक उल्लू दिखा. बहुत खुश होकर, उत्तेजनावश , मैंने वह, अपनी सहेली को दिखाया.

वह बोली, "यह क्या किया?! परीक्षा से ठीक पहले, मनहूस जीव के दर्शन! अब हमारा एग्जाम, जरुर बिगड़ेगा !!"

मैं, जो पल भर पहले, बहुत खुश हो रही थी...आशंका से, भर उठी. वास्तव में, उस आशंका ने, एग्जाम का, बैंड बजा दिया! कोई भी सुर, ठीक से, नहीं लग रहा था!!

"कैसी बेवकूफ़ी...!" मैंने खुद से कहा और इसके साथ ही, मेरे विचारों को, भंग करते हुए, मोबाइल घनघनाया .

शैली का, फोन आया था. वह बहुत अशांत लग रही थी. अपने मन का, सारा गुबार, उसने, फोन- वार्ता के दौरान ही निकाल दिया, " विदिशा! मैं सोचती हूँ...स्कूल वाले व्हाट्सएप- ग्रुप से, निकल जाऊँ. "

"उससे क्या होगा...? वहाँ हमारी, कितनी सारी फ्रेंड्स हैं. सबसे सम्पर्क टूट जाएगा."

ग्रुप में, उसे उकसाने वाला, कुछ सिरफिरी सदस्यों का, गैंग' था. उन्हें लेकर, मैंने उसे समझाने की कोशिश की,

"... तुम भी उनके साथ, जूझना बंद करो. इग्नोर मारो यार! "

" कैसे इग्नोर करूं? इन सबकी दादागिरी, बर्दाश्त से बाहर हो रही है...पोस्ट ना करो तो नाम 'मेंशन ' करके, याद दिलाती हैं...और पोस्ट डालो तो पालिटिकल या फिर सोशल एंगल निकालकर, उसकी बखिया उधेड़ने लग जाती हैं...कुछ नहीं मिला तो धर्म के नाम पर, बवाल खड़ा करती हैं. "

"तुम्हें पता तो है; वे अपनी अहमियत चाहती हैं. तुम ऐसी पोस्ट डाला करो, जो प्राकृतिक सौंदर्य पर हो...या फिर शास्त्रीय संगीत और नृत्य से जुड़ी हो...पारिवारिक बातें हों...हल्के फुल्के जोक्स...या सिंपली , गुड मॉर्निंग, गुड ईवनिंग मैसेज...तब ये कोई भी, बखेड़ा खड़ा नहीं कर पाएँगी. "

"अब वे नहीं तो तुम ही उपदेश देने लगीं. " शैली ने हँसकर बात खत्म की, " जब एडमिन ऐसी 'महान ' हो तो औरों को क्या कहें?"

शैली ने, छाया की चर्चा, इतनी सहजता से की, कि मैं सोच में पड़ गयी. छाया- उस तथाकथित ग्रुप की एडमिन ...कैसे कैसे जुगाड़ कर, उसने, पुरानी सहेलियों को ढूँढ निकाला था...कला संकाय की तो वह खुद थी...विज्ञान संकाय वाली सखियों को उसने, अपने कला संकाय वाले, संपर्कों का उपयोग कर, ग्रुप से जोड़ लिया था.

छाया के मन में जो गाँठ थी; उससे मैं, पूरी तरह,अनजान नहीं थी; हालाँकि उसके व्यवहार में, कुछ ऐसी भी, अजीबोगरीब कड़ियां, जुड़ती जा रही थीं; जिनका कोई स्पष्टीकरण, मेरे पास नहीं था.

नेतागिरी की उसकी चाहत, मुझे अचंभित नहीं करती. किशोरावस्था

में, उसको, इतना दबाया गया; इतना प्रताड़ित किया गया कि परिपक्व आयु में... अपनी सत्ता को, स्थापित करने के, उसके प्रयास, स्वाभाविक ही थे. हैरानी तो इस बात की थी कि वह, समूह की सखियों को, व्यक्तिगत तौर पर, कॉल कर, प्रपंच करती रहती.

ग्रुप के सदस्यों की, निजी जिंदगी, उसके लिए, आकर्षण का विषय रही. विशेषकर, उनके जीवन की असफलतायें ! उसके मन में, इतना विष, कैसे भर गया- मैं नहीं जानती...या शायद, जानती भी हूँ! लेकिन भरोसे से, कुछ कह पाना, मुश्किल है.

मानव मन की, जटिलताओं को, समझ पाना आसान नहीं...वह भी तब, जब समय का एक लम्बा अन्तराल, आगे खिसक चुका हो.

समूह से, जुड़ने के बाद, मैंने उसकी, डी. पी. देखी थी; और तब यह पूछने से, खुद को रोक न पाई , "छाया...अब भी शमशाद बेगम के गाने गाती हो?" दरअसल पूछना तो यह चाहिए था, " मानसी...अब भी शमशाद बेगम के, गाने गाती हो?"

निस्संदेह वह मानसी ही थी. यह भी सच था कि संगीत ने कभी, उसके दिल के तार, मेरे दिल से जोड़े थे. परन्तु मानसी से, छाया बनने के क्रम में...उसके भीतर, साँस लेने वाली, शमशाद बेगम, कबकी मर चुकी!

उसने मेरी बात का, जवाब तो दिया, पर सार्वजनिक रूप से नहीं, निजी सन्देश के द्वारा. संदेश था, " मुझे नहीं लगता कि हम एक-दूसरे को, पहचान रहे हैं. मैं उस टाइप के, गाने नहीं गाती, जैसा तुम्हें लग रहा है. मैं तो भजन और लोकगीत गाती हूँ. जल्द ही अपना, यू- ट्यूब चैनल, शुरू करूँगी. तब लिंक भेजूंगी तुम्हें. "

दोहरा व्यक्तित्व या स्प्लिट पर्सनालिटी, नई अवधारणा तो नहीं. कितना कुछ, लिखा गया है...कहा गया है; मूवीज भी बनी हैं, इस विषय पर. किन्तु उसका ऐसा, जीवंत उदाहरण, देखने को मिलेगा...यह नहीं सोचा था!

छाया अपनी सोशल इमेज या सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर, अति संवेदनशील थी...एक हल्की सी असहमति, उससे सहन न होती. वहीं मानसी उदारहृदया, सहनशील लड़की; हर समस्या का, योद्धा की भाँति, सामना करने की प्रवृत्ति...

एक ही इंसान के दो पहलू...एक स्याह, एक सफेद!!

...और मानसी...!

हमारी 'टाइम पास' वाली दोस्ती रही. हम फ्री पीरियड में, साथ मिलकर, गुनगुनाते और लंच- ब्रेक में तो हमारी आवाज, आसपास मंडराते, कौवों को भी झकझोर देती और खाने पर, घात लगाने के बजाय, वे फुर्र हो लेते! वह शमशाद बेगम के, गाने गाती और मैं, लता मंगेशकर के. आठवीं में, हमने संगीत ही, ऐच्छिक विषय के तौर पर, चुना था.

उसके अपने, छोटे छोटे, दुःख रहे, जो वास्तव में, बहुत बड़े थे!

पैंतीस मिनट के, लंच ब्रेक में, वह अपने दुःखों को, थोड़ा- थोड़ा बांटती किन्तु पूरी तरह उजागर न करती. इतना अवश्य पता था कि वह इस शहर में, अपने चाचा के यहाँ, रहकर, पढ़ रही थी जबकि उसके माता-पिता, गांव में थे.

वह कैन्टीन से, खाना खाकर आती...मैं और मेरी बेस्टी (सबसे अच्छी दोस्त) शैली, बहुधा, वहीं क्लास रूम के, बाहर बनी बेंच में; जमे रहते. वह आते ही, हम लोगों को; कभी अपने, चचेरे भाई- बहनों के, किस्से सुनाने लगती तो कभी, पड़ोसन आंटी के- जो अपने, दबंग बेटों की, दबंगई पर, इतराती रहतीं.

चाची, उसे अपने साथ, रसोई में लगाए रखतीं; उससे, अपने नाती की, बेबी- सिटिंग भी, करवाती थीं. नाश्ते में उसे, रोटी के संग बासी सब्जी दे देतीं. फ्रिज से निकल कर, पुराना साग, सीधे उसकी प्लेट में, आ जाता. उसे गर्म करने का, कष्ट भी, किया न जाता. ताजा साग तब बनता, जब वह स्कूल के लिए, निकल चुकी होती. होमवर्क के लिए बैठती तो चाची, प्रायः उसे, कोई न कोई काम बता देतीं.

जीवन के, यह अनवरत संघर्ष, उसे, समय से पूर्व ही; सयानी बना रहे थे. वह ठुड्डी पर हाथ रखकर, बड़ी- बूढ़ियों की तरह, ज्ञान देती रही; हर चुनौती सेहँसकर लड़ना जानती थी वह. घर के सारे, काम खतम कर, पड़ोसन आंटी से, दो घड़ी बतिया लेना...या अपना मनपसन्द टी. वी. सीरियल, 'हम लोग', चचेरी बहनों संग, देख लेना; उसके पसंदीदा शगल थे.

किसी टेलीविजन धारावाहिक जैसी ही, उसकी जिन्दगी, अन्तहीन चक्रव्यूह में, उलझी हुई सी...चाची का, भेदभावपूर्ण व्यवहार; उनके बच्चों का, बात- बात पर ऐंठना...एक, अबोला सा तनाव...! यह और बात थी कि चाचा चुपके से, सर पर हाथ फेरकर, उसे सांत्वना देते रहते. कभी-कभी बाहर, कुछ अच्छा खिला देते.

'हँसते- रोते' हुए, अनुभव के मनके, पिरोती थी मानसी. बहुत जुझारू रही वह. जुझारूपन के अलावा, उसमें, एक अलग ही किस्म की, जिन्दादिली थी. धीमी मुस्कान लिए, अपनी दुश्वारियों का, जिक्र करती रहती.

'मिलते ही आँखें, दिल हुआ, दीवाना किसी का ' और ' बूझ मेरा क्या नांव रे" जैसे पुराने लोकप्रिय गीत, उसकी जुबान पर, चढ़े थे...जिन्हें वह, बहुत तबियत से, गाती. गाते हुए वह, सारी परेशानियों को, मानों दामन से ही, झटक देती...सब कुछ भूल, मगन हो जाती!

समयाभाव ऐसा कि कभी स्कूल की, बस में, बैठे- बैठे; विज्ञान की परिभाषाएँ, रटते हुए मिलती तो कभी रफ कॉपी में, समीकरणों को, सुलझाते हुए, देखी जाती. उसका बस्ता, बहुत शानदार रहा. उसके पिता, जब गांव से, शहर आए; उसके लिए , लाकर रख गए थे.

उसे अगले साल, नवीं कक्षा में, विज्ञान ही लेना था. उसका रुझान भी,

उस तरफ रहा. वह सितारों की चाल को, बहुत मानती थी. सितारों के इशारे पर ही, उसकी रुचि और अभिरुचि, मेल खाती रहीं. विज्ञान और गणित में, पारंगत होना, कोई हँसी- खेल नहीं...शायद इसीलिए, उसे किसी की, बुरी नजर लग गयी.

कैशोर्य के दुःख, सदा साथ रहते हैं. यह भावुक वयस, किसी की नहीं सुनती...इस अवस्था की, अपनी अलग, मान्यताएँ होती हैं; जो बहुधा, भाग्य को बदलने वाला, निर्णायक मोड़, ले लेती हैं.

उसके मन में, शायद, कोई ग्लानि रही; मुझे- अपनी पुरानी सखी को, पहचानकर भी न पहचानने की...तभी तो बार- बार, फोन करती है. मेरे मोटिवेशनल- वीडियोज को, देखकर, अपनी सकारात्मक टिप्पणियाँ, देती रहती है.

उसके संगीत वाले, चैनल पर, मैं भी; उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएँ , देने से चूकती नहीं.

हालाँकि, उसकी अति- भावुकता का, खयाल कर; आलोचना करने से, बचती रही...मुझे सही समय का, इंतजार था. जब नए सिरे से, होने वाली, हमारी यह मैत्री, कुछ और प्रगाढ़ होगी; उसे, उसके नकारात्मक पक्ष से, रूबरू, जरुर करवाऊंगी.

यह सब, सोच ही रही थी कि मिताली के संदेश ने ध्यान खींच लिया. व्हाट्सएप पर, निजी सन्देश था. देखकर, आँखें चौड़ी हो गयीं. मिताली एक- दो बार, छाया से, संगीत सीखने के, सिलसिले में मिली थी. उसके बेटे द्वारा, चलाई जा रही; संगीत- अकादमी में, दाखिला भी, ले लिया था.

वहाँ नहीं जमा तो दूसरे गुरु के पास, जाने लगी. छाया को, यह बात पची नहीं. वह सबसे कहती फिर रही है कि मिताली पर, नए वाले गुरुजी, कुछ ज्यादा मेहरबान हैं.

यह किसी, स्वस्थ मानसिकता वाली, स्त्री का, बयान नहीं हो सकता. क्या यह, परोक्ष रूप से, लगाया गया, आरोप था? मैं मिताली को, अच्छी तरह जानती हूँ. वह कोई ' ऐसी- वैसी' औरत नहीं. रही बात छाया की- तो किसी जमाने में वह, ईश्वरीय न्याय पर, विश्वास रखती थी. किन्तु आज, उल्टी गंगा, बहाने चली है... भाग्य का निर्णय, अपने हाथ में, लेना चाहती है?? वह भी, झूठ का सहारा लेकर...यह कैसी मानसिक विकृति...!!

ग्रह- नक्षत्रों का, खेला ही तो था- जिन्होंने उसे, आगे बढ़ने की, धुन लगा दी...परंतु उस दिन...! उन्हीं सितारों की दशा, बदल गयी. वह दिन, अभी भी, मेरी स्मृतियों में; दुबककर, बैठा हुआ है.

कक्षाध्यापिका ने, उससे, मार्कर- पेन माँगा था; क्योंकि उन्हें पता था कि वह, उस पेन का, इस्तेमाल करती है. संयोग से, तब वह, उनके ठीक सामने वाली, सीट पर बैठी थी. बस्ता, खोलते ही गिरा और उसमें से, कागजों का, एक पुलिंदा निकला.

क्लास मिस ने, उसे उठाया और उनमें से एक, पुर्चीनुमा काग़ज पर, गौर किया. उसे पढ़ते हुए, उनके चेहरे की, भाव- भंगिमा, बदलती चली गयी. उन्होंने मानसी को, अपने साथ चलने का, मूक संकेत दिया.

मानसी की, मनःस्थिति का, ठीक- ठीक, ब्यौरा दे पाना; तब, हममें से, किसी के लिए, सम्भव न था. न जाने, ऐसा क्या हुआ, जो क्लास मिस के साथ, उसे प्रिन्सिपल- ऑफिस जाना पड़ा! अटकलें तो बहुत थीं पर बात खुलने पर, हम, अपने कानों पर, विश्वास न कर सके!!

पुलिंदे में, जो पर्चियां बंधी थीं; वे किसी परीक्षा में, नकल करवाने के लिए; सहेजी गयी, पर्चियों जैसी, लग रही थीं. हम तो सपने में भी, सोच नहीं सकते थे कि वे, प्रेमपत्र रहे होंगे; वह भी... मानसी की, पड़ोसन आंटी के- आवारा बेटे की अमानत!!

जोर का झटका, हमें बहुत, जोर से लगा था. स्पीड ब्रेकर्स जैसी, कोई डिवाइस या साधन, नहीं था, असल जिंदगी में...जो जोर से लगने वाले, झटके को, थोड़ा धीमा कर देता.

बाद में उसने, टुकड़ों- टुकड़ों में जो बताया- उसका निहितार्थ, कुछ यूँ था- उसकी चचेरी दीदी पर, चाची को, शक रहा. एक दिन वे, उनके सामान की, तलाशी ले रही थीं. वह, उन दीदी के साथ, कमरा शेअर करती थी, लिहाजा, उसका बैग भी, वहीं पर था.

तलाशी लेते समय, चाची ने, उसे बाहर जाने को कहा. दी ने, अपनी माँ की, आँख बचाकर; वह चिट्ठियाँ, उसके बस्ते में, डाल दी होंगी...ठीक उसी जगह, जहाँ उसकी मोटी वाली, रफ- बुक रहा करती थी. तभी तो उसे, शक नहीं हुआ. बैग बाहर से, वैसा ही, फूला- फूला, दिख रहा था. घर आकर देखा तो पाया, रफबुक, घर में ही, पड़ी थी.

हमें उसके कहे पर, यकीन था लेकिन औरों को नहीं...स्कूल में, मामले की, जाँच हुई. उसे 'क्लीन चिट' भी मिली. तो भी वह, उस दुर्घटना से, उबर न सकी. सहपाठी कन्याएँ, उसे, अर्थपूर्ण दृष्टि से देखतीं ...खुसुर-पुसुर करती रहतीं. कहतीं, "बिना आग के, धुआं नहीं उठता." विद्यालय के, इक्का-दुक्का, पुरुष कर्मचारी तक; उसके बारे में, ऊलजलूल बकते. उसे, अपने मुहल्ले में...वहाँ की, गलियों से, गुजरते हुए; क्या- कुछ, नहीं सुनना पड़ा होगा!

विद्यालय में, एक ही कक्षा के, तीन विभाग रहते. छात्राओं की, बड़ी संख्या को, प्रबंधित करने का, यह कारगर तरीका था. हमारी कक्षा में, एक से एक, होशियार लड़कियाँ थीं. अधिकतर ने, नौवीं कक्षा में, विज्ञान विषय का, चयन किया. उन दिनों, विज्ञान की, तूती बोलती थी. जिसे देखो- डॉक्टर या इंजीनियर बनना था!

परन्तु मानसी ने, अपेक्षा के विरुद्ध, कला- विषयों को चुना. कला संकाय की, दूसरी इमारत रही. आने-जाने का रास्ता, शिक्षिकाएँ - सब अलग. हमारी कक्षा से, एक या दो कन्याएँ ही, कला- संकाय की 'शरण' में गयीं. उन्हें अपेक्षाकृत, कम अंक मिले- इसी से. मानसी को उनसे, कुछ खास समस्या, नहीं होने वाली थी. उनसे तो उसके मार्क्स, कहीं अधिक थे ; इसी से, उनके 'हावी' होने की संभावना भी कम...!

मानसी, ज्योतिष- विज्ञान पर, आस्था रखती थी. यह आस्था उसे, माता-पिता से, विरासत में मिली थी. यद्यपि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि ग्रह- दशा के, कुछ न कुछ मायने तो होते होंगे; तथापि जनता की श्रद्धा को भुनाकर, अपनी दुकान चलाने वाले, 'चवन्नी- छाप' भविष्य- वक्ता, हर जगह मिल जाते हैं.

यह अफसोसजनक था कि मानसी और उसके अभिभावक, परिस्थितियों के भंवर से, निकलने के फ़ेर में, इस तथ्य को, नजरअंदाज कर रहे थे.

उसकी कुंडली, पंडित जी से, विचरवा कर, यह तय हुआ कि मानसी नाम, उसके लिए अशुभ था. दसवीं की, परीक्षा से पहले, उसका नाम; मानसी से बदलकर, छाया कर दिया गया.

वह स्वयं भी, अपने भीतर की, मानसी को, मार देना चाहती थी. पुरानी पहचान, खतम कर देना चाहती थी...पुराने संपर्कों को, तोड़ देना चाहती थी. उसका बस चलता तो स्कूल भी बदल लेती. पर यह, हो न सका. पूरे शहर में, एक यही, कन्या- विद्यालय जो था!

समय, किसी के लिए, नहीं रुकता. मानसी के, अभिभावकों को, अपनी भूल का एहसास, जल्द ही हुआ. उन्होंने उसे, चाची के घर से, हटा दिया. उसकी माँ स्वयं, शहर में, कमरा लेकर, उसके साथ रहने लगी. पिता ने शहर में ही, ठेकेदारी का काम, पकड़ लिया; गाँव के, अपने खेतों को, बटाई पर चढ़ाकर.

सब कुछ, मनचाहे ढंग से, चलने लगा था. लेकिन छाया, अपने दिल की उलझन, सुलझा नहीं पाई. बरसों बाद भी, उसके भीतर, कुछ

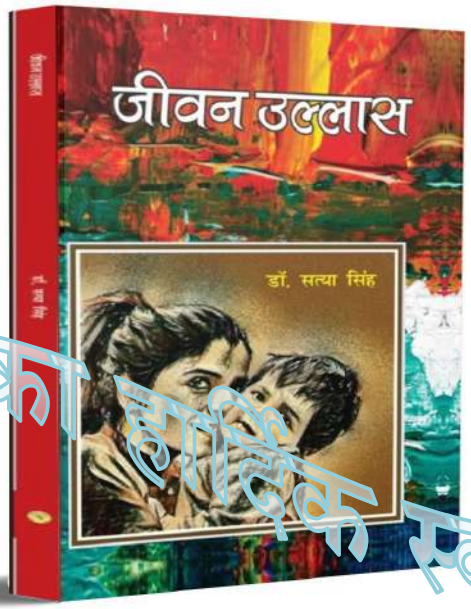

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

दरकता रहता है. हाल में ही जब, हम पुरानी सखियों का, गेट- टुगेदर हुआ; उसका उल्लास, देखते ही बनता था. हम अपने पतियों, बेटे- बेटियों समेत, उसमें शामिल हुईं थीं.

छाया को, सब कुछ संभालते देख, अच्छा लगा. कम से कम, उस समय तो, कुंठित नहीं लग रही थी. पर शीघ्र ही, हमारा यह भ्रम, टूट गया. मुझे और शैली को, एक कोने में ले जाकर, कहने लगी, " रंजीता, कितना अकड़ रही थी. सीधे मुँह, बात नहीं करती. खुद को, अफ़सर बताती है...पर दरअसल, कचहरी में, मामूली सी, कर्मचारी है"

हम दोनों, उसकी गॉसिप से, पहले ही, सकते में थीं; जब उसने, दूसरा तीर छोड़ा, " उसकी बेटी को, देखा था? कैसी रिवीलिंग ड्रेस, पहनकर, घूम रही थी...पार्टी में, मौजूद लड़कों से, हँस- हँसकर, बतिया रही थी!"

बाद में, शैली ने, मुझसे कहा, " लड़की की पोशाक, ऐसी भी बुरी नहीं थी...और तो और... कुछ दिन पहले तक, रंजीता, इसकी खास दोस्त थी...लेकिन अब...!"

मुझे, गहरी नजर से, देखते हुए, वह आगे बोली, " तुम भी आजकल, उसकी 'गुड- बुक्स' में हो...सम्भलकर रहना!"

शैली की हिदायत, मुझे भीतर तक, कंपा गयी. वह, सच कह रही थी. मुझे, छाया से, एक सुरक्षित दूरी, बनाकर रखनी थी. जो बात मुझे चुभ रही थी, वह दरअसल; उसके मिजाज में, होने वाली, तब्दीली नहीं...बल्कि किसी के, चाल- चलन पर, उँगली उठाने वाली, बीमार सोच थी.

शैली ने ही तो बताया था; छाया की, अपनी देवरानी से, नहीं बनती. वह उसके बारे में, कह रही थी, " रिश्तेदारों से, 'नॉन वेज ' वाले, मज़ाक करती है...औरत- आदमी का भी, विचार नहीं करती!" यह एक तरह का, चरित्र- हनन था. उसके निशाने पर, मिताली, रंजीता की बेटी और...खुद उसकी देवरानी रह चुकीं! कभी उसका चरित्र, सन्देह के, घेरे में था. क्या वह, दूसरों के आचरण पर, वैसे ही सवाल, खड़े करना चाहती थी??

आगे मैं, सोच नहीं सकी. यह संकल्प अवश्य किया कि कुछ दिनों तक, छाया से, कन्नी काटे रहूँगी. अलबत्ता, यह भी सच था कि वह मुझ पर, जान छिड़कने लगी थी. नियमित रूप से, मेरे हाल- चाल लेती. दूरभाष का, 'सदुपयोग' वह, जी-जान से, मेरे लिए करती...मेरी उपलब्धियों पर, निछावर होती और मेरी समस्याओं से दुखी.

छाया दोस्तों की दोस्त थी और दुश्मनों की दुश्मन! उसके पास, सन्तान के नाम पर, एक बेटा था. बेटी की, बहुत आस, रही उसको. अपनी भतीजी में, उसे बेटी की, झलक मिलती थी. छाया बुआ की, लाडली थी पारुल!

मैं अपने संकल्प पर, कायम रही. कई दिन तक, छाया की, सुध न ली. यह उम्मीद, जरुर थी कि वह मुझसे, सम्पर्क करेगी; पर उसकी तरफ से भी, कोई पहल, ना हुई. अब मुझे, थोड़ा अजीब, लगने लगा. कहीं से, पता चला कि पारुल का, किसी ने, मॉर्फ्ड- वीडियो, बना लिया था...और उसकी, बहुत बदनामी, हो रही थी.

जाहिर था कि छाया, बहुत परेशान, रही होगी. फिर भी...एक ना एक दिन तो, उससे बात होनी ही थी...और हुई भी. उसने मुझे, अखबार की, कोई खबर, व्हाट्सएप की थी. उसमें कोई शोहदा, पारुल के, पैर पड़कर, माफ़ी मांग रहा था.

वह पूरा माजरा, तफ़सील से, बताए बिना, रह न सकी. यह कि उसकी भतीजी को, बदनाम करने की, साजिश रचने वाले को, कैसे धूल चटाई उसने- पुलिस कमिश्नर की सहायता से. पारुल को, उसका स्वाभिमान, वापस दिलाने की प्रसन्नता; छाया के स्वर को, आर्द्र बना रही थी.

मुझे लगा मानों, एक बुआ, अपनी भतीजी की लड़ाई, नहीं लड़ रही थी...वरन मानसी ही; अपने खोये हुए, आत्माभिमान को; पा लेने के, संग्राम में, रत थी. अब वह, छाया बनकर, परिस्थिति से, भागना नहीं चाहती थी, बल्कि उसका डटकर, मुकाबला करने वाली थी!

मेरे अंतस का भी, कोई कोना, भीगने लगा था. ज्योतिष के प्रति, उसकी अंधश्रद्धा... उलूक जैसे पंछी से, लगने वाला, निर्मूल भय...परिचित- स्त्रियों की, छवि, मलिन करने की आकांक्षा- सभी एक - एक करके, तिरोहित हो रहे थे...उसके मन की गाँठ, हौले- हौले, खुल रही थी. वह छाया से, पुनः, मानसी, बन रही थी...सर्वथा नयी और शक्तिशाली मानसी !!

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

कहानी

जिहाद से आजादी

डोली शाह

रंग- बिरंगे फूलों की क्यारियां , बच्चों को झूलने के झूले, स्विमिंग पूल, मनोरंजन की सारी सुविधाएं ,वहीं लोगों में मधुरता के रस ,कूछ ऐसा था--- अकबर पार्क रोड। यहां अक्सर घूमने वाली का तांता लगा रहता था।

कुछ अंदर जाकर ही अकबर कॉलोनी जहां, क्या सनातनी ,क्या टोपी वाले -- दोनों भाई-भाई ! क्या होली, क्या ईद मिठाइयों और सेवाइयों से भरा पूरा कॉलोनी ! टोपी न पगड़ी की पहचान ! यह सच है कि वहां मात्र दो ही सनातनी घराने थे, बाकी सब मुल्ले वालों की बस्ती! हर संध्या सभी बच्चे इस पार्क में खेलते, मौज- मस्ती करते।

तभी सोनी की 12वीं की परीक्षा के परिणाम घोषित हुए , यह देख पूरा परिवार क्या, पूरा मोहल्ला बहुत खुश था। अपनी संस्कृति की अनुपम दृश्य दिखाते हुए पिता के साथ सबका मुंह मीठा करवा चरण स्पर्श करती।

इतने में ज्यों ही पैगंबर साहब के घर पहुंची, बिल्कुल गोरा चुपड़ा ,भूरी आंखें, सफेद कुर्ता और सिर पर छोटी सी टोपी जैसे यह चेहरा पहली बार देखा हो , सोनी थोड़ा शकपकाई, किंतु बेटा इरफान भरी नजरों से देखता रहा। कितने परसैंट आए हैं? इरफ़ान ने पूछा।

... 92 प्रतिशत।

.....चाचा जी ,इसे आगे वकालत की पढ़ाई करा दीजिए।

...देखता हूं अभी कुछ निश्चय नहीं किया।

सोनी मुस्कुराती हुई सब कुछ सुनती रही । उसका चेहरा इरफान की नजरों से ओझल ना होता। इरफ़ान हर सुबह किताबों के पन्ने के सहारे सोनी का घंटो इंतजार करता। हाय, हैलो के साथ तरह तरह की बातें भी हो ही जाता, जिससे दोनों में एक रिश्ता सा पनपने लगा।

कुछ दिनों बाद ही सोनी का जन्मदिन था। पूरे मोहल्ले को आमंत्रण दिया गया। इरफान भी आया। उसने तोहफे के साथ ही मौका देख अपने प्यार का इजहार कर दिया। वह सकपकाई जरूर लेकिन नाकार ना सकी और फिर ज़िन्दगी की गाड़ी रफ्तार से कुछ ज्यादा ही जल्दी निकल पड़ी। दोनों के बीच रिश्ता बढ़ता गया। जिससे उनकी इच्छाएं भी बढ़ती गई। अब वह जब मिलते तो आलिंगन की बात ही सोचते । दोनों बहुत खुश रहने लगे ।

गुजरते वक्त के साथ ही यह खबर गली- मोहल्ले तक आ गई । अब दूरियां बर्दाश्त नहीं होती, रिश्ते शादी के बंधन में भी बंधने को तैयार थे।

दोनों ने अपने- अपने घर पर विवाह की इच्छा भी व्यक्त की। इरफान ने तो अपने घर वालों को कुछ हद तक मना लिया, लेकिन सोनी के परिवार वालों ने साफ इन्कार कर दिया।

जिससे दोनों परिवार क्या, पूरे मोहल्ले में द्वेष के भावना पैदा हो गयी। इधर इरफान सोनी को मनाने का भरसक कोशिश करता, लेकिन परिवार की मर्यादा देख वह अपनी भावनाओं को दबाती रही।अब फोन पर फोन ,धमकी पर धमकी....

क्रोध भरे स्वर में कह भी दिया --आज *मैं जिस आग में जल रहा हूं ,उसी आग में मैं तुम्हें भस्म कर दूंगा*।

लेकिन पिता ढांढस बंधाते हुए अपनी ही बिरादरी के किसी प्राइवेट कंपनी में कार्यरत लड़के सूरज से उसका विवाह करा दिया। वह शुरू से ही करोड़ों में खेलने वाला पिता का इकलौता संतान था। पिता की मृत्यु के बाद सूरज मां को अपने पास अक्सर बुलाता लेकिन पिता के सेवा भावना को जिंदा रखने के लिए वह कभी शहर आना पसंद नहीं करती , जिससे उसे अक्सर वर्मा जाना पड़ता । यह प्रवृति सूरज के अंदर भी कूट कूट कर भरा हुआ था । वह भी पिता की स्मृतियों को जिंदा रखने के लिए हर संभव प्रयास करता।

हर महीने एक बार सपरिवार वर्मा जरूर जाता। सोनी भी उसके इस व्यवहार से बहुत खुश होती।

वक्त के साथ मां के बिगड़ते स्वास्थ्य देख सूरज ने सोनी को वहीं रखने की इच्छा व्यक्त की , जिससे लोगों में उसकी पहचान बढ़ती गई। उसे भी अच्छी ख्याति मिलने लगी। अपने सास- ससुर के लक्ष्य कदम पर चलती गयी, जिससे मां के साथ सूरज भी बहुत खुश रहने लगा।

सब कुछ सही ही चल रहा था।सब संतुष्ट थे लेकिन अचानक मां के देहांत ने दोनों को दो पल के लिए तो हिलाया लेकिन फिर भी सोनी अपने कार्यों में सदा लगी रही । पहले महीना, फिर साल बीतते गए। पूरे गांव में उसकी अच्छी खासी दब दबा बन चुका था।

अचानक एक दिन फोन की घंटी बजी। वहां इरफान का नाम देख सारी पुरानी यादें ताजी हो गई। फिर भी आज उसे अपनी शक्ति ,सुरक्षा पर विश्वास था उसने बड़ी ही हमदर्दी से बातें की। देखते-देखते इसी गांव में एक प्राथमिक चिकित्सालय में नर्स की रेप और हत्या की खबर ने सोनी को झकझोर दिया। वह सोच में पड़ गयी।अचानक इरफान का फोन और यह खबर... !

कुछ दिनों बाद ही सोनी का जन्मदिन था। पूरे मोहल्ले को आमंत्रण दिया गया। इरफान भी आया। उसने तोहफे के साथ ही मौका देख अपने प्यार का इजहार कर दिया। वह सकपकाई जरूर लेकिन नाकार ना सकी और फिर ज़िन्दगी की गाड़ी रफ्तार से कुछ ज्यादा ही जल्दी निकल पड़ी। दोनों के बीच रिश्ता बढ़ता गया। जिससे उनकी इच्छाएं भी बढ़ती गई। अब वह जब मिलते तो आलिंगन की बात ही सोचते । दोनों बहुत खुश रहने लगे ।

गहरी जांच से संभोग और रेप जैसी घटना सुन उसके अंदर की ज्वालाएं उठने लगी । मेरी ही गांव में एक लड़की यदि सुरक्षित नहीं, तो आखिर मै किस काम की!

मैं चुन- चुन कर बदला लूंगी। मोहल्ले में चौकसी बढ़ा दी गई, और भरपूर जांच की आदेश भी दी गई। अगले दिन ही पुनः इरफ़ान के धमकी भरे स्वर से सोनी के पैरों तले जमीन खिसक गये। बहुत हो गया ,तुमने अपनी मनमानी बहुत कर ली ! अब अंतिम बार कह रहा हूं--*लौट आओ मेरे पास **।

सोनी अंदेशों के साथ उसके बातों को चैलेंज करते हुए बोली --कभी नहीं ! अब मैं किसी की पत्नी ,किसी की बहु,और करोड़ों लोगों का विश्वास हूं! प्लीज, तुम यदि अपना भला चाहते हो तो मुझे भूल जाओ । मैं जिंदगी में बहुत आगे बढ़ गई हूं। इतना कह वह फोन तो रख दी।

अगले ही दिन कुछ लोग फाटक से अंदर आने की अनुमति मांगे। मना करने के बावजूद भी प्रवेश कर कहने लगे। मैडम यदि आपको अपनी जान प्यारी है ,तो घर प्रॉपर्टी का मोह छोड़ रातों-रात अकबर रोड चले जाइए ।

सोनी थोड़ी डरी, लेकिन विश्वास के साथ-- क्या!पार्क रोड , मगर तुम लोग हो कौन! जो मुझे कहां जाना है यह निश्चित कर रहे हो ?

...इतने में इरफान आकर कहने लगा ,यह सब मेरे दोस्त है। हां ,आज से चार दिन पहले शहर में जो घटना घटी थी ,जो बाहर रैली खड़ी है ,नारेबाजी हो रही हैं.उन सब की जिम्मेदारी सब तुम्हारी!

क्या?

हां...

वह आश्चर्य भरी नजरों से देखती रही।

तीन दिनो से तुम कमरे में बैठकर कलम चला रही हो तो बाहर की खबर कैसे रहेगा! इरफ़ान ने कहा।

सोनी खिड़की से बाहर नजर दौड़ते ही बिल्कुल ठंडी पड़ गई लेकिन .... कुछ पल बाद ही

इरफान मुझे तुमसे कुछ अकेले में बात करना है?

.. बात ,किस बारे में !

...आओ तो !

...मुझे तुमसे कोई बात नहीं करनी है।

...सिर्फ दस मिनट आओ ,

... अब इतमिनान से बताओ, क्या चाहिए तुम्हें मुझसे?

... लंबी सांस लेते हुए--मुझे तुम चाहिए .... इरफान ने कहा।

...मैं तो तुम्हारे सामने खड़ी हूं फिर..

.... ऐसे नहीं,

...फिर कैसे, नंगे! कपड़े उतार दूं!

... इरफान आश्चर्य भरी नजरों से बोला-- सोनी तुम समझती क्यों नहीं ?

...मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं , मुझे तुम चाहिए।

... ठीक है, मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूं अकेली, इस चार दिवारी मे , लो!

...सोनी बहुत हो गया ,मजाक मत उड़ाओ मेरे प्यार का...

....अरे इरफान, मजाक तो तुम उड़ा रहे हो, प्यार जैसे शब्द का! जानते भी हो प्यार क्या होता है?

लेकिन तुमसे तो उम्मीद करना भी बेकार है। अरे, प्यार तो त्याग का दूसरा नाम है। प्यार देता है मांगता नहीं है, लेकिन तुम जैसे लोग क्या समझोगे ! देखना है तो राम -सीता का प्यार देखो, कृष्ण- राधा का प्यार देखो, मगर सोरी ,मैं तो भूल गई तुम्हारी तो रग -रग में गंदा खून दौड़ रहा है। इरफान जिसे तुम प्यार का नाम देकर बदनाम कर रहे हो, वह प्यार नहीं, तुम्हारा जिद है! तुम्हारी हवस है ...

....तुम जो सोचो ,लेकिन तुम मुझे अपनी बातों में नहीं उलझा सकती,मुझे मेरा प्यार चाहिए।

....इरफान प्यार कोई प्रसाद नहीं जो थोड़ा- थोड़ा बांट दिया।

....ठीक है,तो फिर अपने गांव की विनाश की जिम्मेदारी भी अपने सिर लेने को तैयार रहना ,जो तुम्हारी प्यारी नर्स का हत्या की खबर आई थी वह भी मैं भलीभांति जानता हूं।

---क्या ? मतलब तुमने!

....हां

....तुम बस मेरे साथ पार्क रोड चलो चलो , सब कुछ ठंडा ! मैंने ही लोगों को तुम्हारे खिलाफ....

...बहुत सोच कर ,ठीक है ,लेकिन मेरा भी एक शर्त है, मेरे पार्क रोड जाने के बाद यहां की जनता में जो तुमने आगजनी ,खौफ , रैली का वातावरण बना रखे हो सब कुछ सात दिनों के अंदर शांत करना होगा।

....मूझे मंजूर है, लेकिन पहले तुम मेरे साथ तो चलो ....
....किसी को न सूचना न देते हुए वह वहां से निकल गई।
उधर वर्मा वासियो में आगजनी रेप के खिलाफ एफ. आई. आर. लिखाते- लिखाते मानो कागजों की थाती लग गई थी। इसी बीच वर्मा सरकार ने असल गुंडे की तलाश में पांच करोड़ इनाम घोषित कर दिया।
उधर सोनी भी हर दिन इरफान को आगाह करती रही ।वह हर पल खुश रहने के ढकोसले करती ।उसे घृणा तो होती लेकिन देश की जनता का मुंह देख वह चुपचाप सब कुछ सुनती रही।
इरफान चाह कर भी वहां फैले कुत्तों के झुंड को नहीं रोक पा रहा था।" पानी सर के ऊपर से बह रहा था"। देखते -देखते सातवां दिन आ गया। सोनी ने सूरज की लालिमा के साथ ही मेल कर पुलिस स्टेशन में इरफान की सारी सच्चाई का बखान कर दिया। कुछ मिनटों के अंदर ही इंस्पेक्टर साहब को देख इरफान गिड़गिड़ाता रहा।
सोनी तुम!
हां मैं....
तुम ऐसा नहीं कर सकती मेरे साथ !
सोनी मुस्कुरा कर बोली -- दिन बदलते देर नहीं लगता, तुम कर सकते हो, तो मैं क्यों नहीं ?क्या इसलिए कि मैं एक लड़की हूं! इरफान मैंने जो किया वह बहुत कम है।तुमने तो करोड़ों लोगों की जान से खेला है, वह मासूम नर्स जिसके सामने अभी पूरी जिंदगी पड़ी थी तुमने.... तुम्हारे सामने तो फांसी के फंदे भी शर्मा जाए!
...सोनी, मैंने जो किया सब हमारे प्यार के लिए किया। मेरे प्यार को समझो...
... इरफान ,तुम मेरे प्रेमी नहीं ,कातिल हो हजारों जिंदगियों की, मुझे तो शर्म आ रही है,कि ... मैंने तुम्हें कभी अपना जीवन साथी बनाने का फैसला किया था। यह सुनते ही वह मुचछित होकर गिर पड़ा ।सोनी वहीं खड़ी सब कुछ देखती रही। इरफान की दिल की धड़कने हमेशा के लिए बंद हो गई। सोनी ने इतना ही कहा "जैसी करनी वैसी भरनी" ...
फॉरेन सोनी इरफ़ान का लाश उसके घर समझाते हुए , इनाम के पैसे को गरीबों में बाट देने का आदेश दिया, जिनके घर -बार ,बेटी, बहुओं पर, वक्त का कहर पड़ा था। यह सुनते ही एक तरफ सूरज तो वर्मा सरकार द्वारा उसके समाज सेवा का ऐसा प्रतिबिंब के लिए पुरस्कार से सम्मानित किया गया । वहीं सूरज ने कहा-- सचमुच तुम्हारे कर्मों के लिए तुम हजारों वर्षों तक लोगों की दिलों में जिंदा रहोगी...

निकट- पी एच ई, पोस्ट- सुलतानी छोरा, जिला- हैलाकांदी, असम- 788162, मोबाइल-9395716158,

मुट्ठी में आकाश करो

इक-इक पल है कीमती जानो
स्वयं से तुम संवाद करो।
व्यर्थ की बातों में उलझकर
न वक्त अपना बर्बाद करो।।

मिलती सफलता उसको निश्चित
जिसने चित्त में ठाना है।
अंतक भी रास्ता रोक ना सका
जिसने खुद को जाना है।।

मत करो प्रतीक्षा अगले क्षण की
करना है जो आज करो।
समय बहुत है पास हमारे
इस सोच का तुम त्याज्य करो।।

कर लो वादा स्वयं से आज तुम
नहीं कभी भरमाओगे।
करोगे ना पीछे पग को कभी
ना ही तुम घबराओगे।।

उठो चलो और चलते चलो
संघर्षों का आगाज करो।
साधोगे लक्ष्य को अवश्यमेव
स्वयं पर तुम विश्वास करो।।

समय को कोई रोक सके
ऐसा संभव हो न पाया है।
जिसने समय का साथ निभाया
वो सिकन्दर कहलाया है।।

उठो बढ़ो और बढ़ते जाओ
स्वयं का तुम विस्तार करो।
हाथ बढ़ा कर सुन मेरे वत्स
अब मुट्ठी में आकाश करो।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति", मुंगेर, बिहार

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

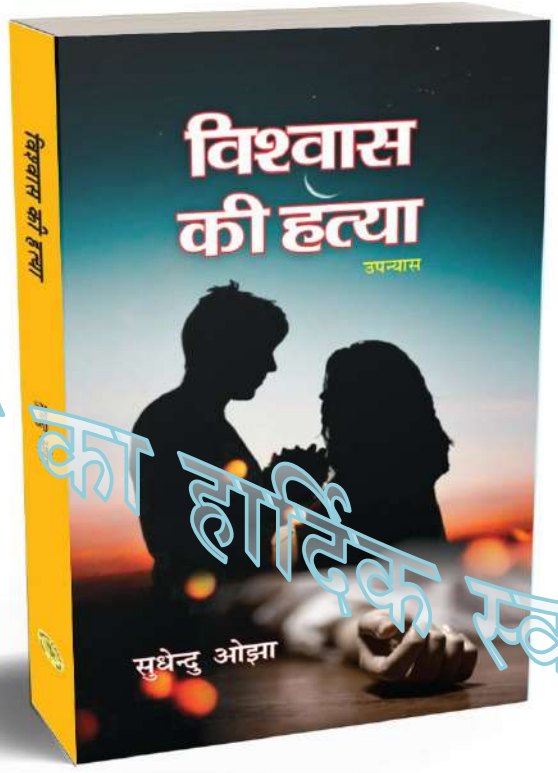

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

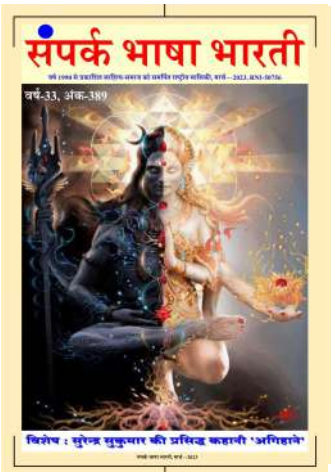

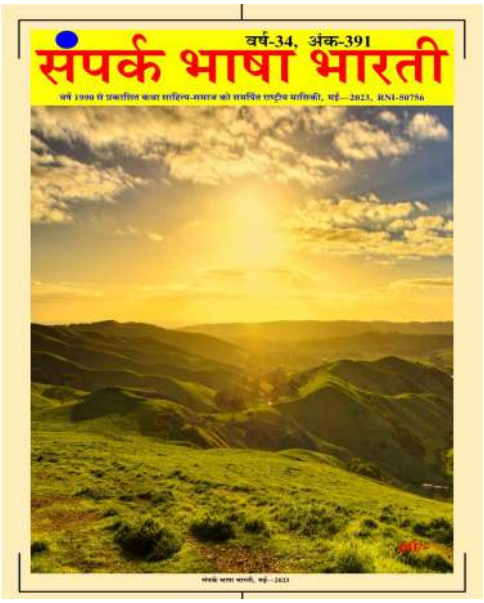

पत्रिका में प्रकाशित लेखक के हैं उनसे लेख में व्यक्त विचार संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

बहस

इस प्रकाशपर्व पर लें नेत्रदान करने का संकल्प

सीताराम गुप्ता

भारतीय पर्वों में दीपावली का पर्व अत्यंत उत्साह और धूम-धाम से मनाया जाता है। आज दीपावली का स्वरूप वैश्विक होता जा रहा है, क्योंकि भारतीय मूल के लोगों के साथ ये पूरे विश्व में ही अपना जलवा बिखेर रहा है। इसका स्वरूप ही ऐसा है कि इसमें रुचि न लेना असंभव है। साफ-सफाई और रंग-बिरंगी रोशनियाँ, किसे आकर्षित नहीं करेंगी? आज दुनिया के हर बड़े शहर में दीपावली पर भव्य मेले लगते हैं, जिनमें वहाँ के स्थानीय लोग भी बड़े उत्साह से सम्मिलित होते हैं। दीपावली को प्रकाशोत्सव कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि प्रकाश चाहे भौतिक जगत में हो अथवा हमारे अंतर्मन में, प्रकाश का इस पर्व में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अंतर्मन का प्रकाश तो आनंदित करता ही है, भौतिक जगत का प्रकाश भी कम आनंदित नहीं करता। अंतर्मन का प्रकाश जहाँ सद्वृत्तियों द्वारा उत्पन्न एवं अनुभव किया जा सकता है, वहीं बाह्य जगत के प्रकाश को अनुभव करने के लिए चर्म चक्षुओं का होना अनिवार्य है। चर्म चक्षुओं के अभाव में प्रकाश ही नहीं सारे संसार का सौंदर्य निरर्थक है।

ये संसार बहुत सुंदर व आकर्षक है, लेकिन एक नेत्रविहीन व्यक्ति इस सुंदर व आकर्षक संसार के अद्वितीय व अपरिमित सौंदर्य का आनंद नहीं उठा सकता। इस संसार में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो न केवल दीपावली के प्रकाश का आनंद नहीं उठा सकते, अपितु वे प्रकृति के किसी भी प्रकार के सौंदर्य को देखकर उससे आनंदित नहीं हो सकते। पूरा जीवन ही उनके लिए एक अंधकारमय दीर्घ रात्रि बनकर रह जाता है। यदि ऐसे लोग भी सामान्य लोगों की तरह ही इस सुंदर संसार को देखकर आनंदित हो सकें, तो कितना अच्छा हो! लेकिन ये तभी संभव है जब उनके नेत्रों की ज्योति लौट आए। लेकिन क्या ये संभव है? यदि संभव है, तो कैसे संभव है? हाँ ये संभव है, लेकिन तभी जब कोई अपने नेत्रों की ज्योति उन्हें भेंट कर दे। और इसको संभव बनाने के लिए मात्र एक संकल्प की आवश्यकता है। वह संकल्प है नेत्रदान का संकल्प। हमारे जीवन के बाद हमारी आँखें किसी दूसरे की आँखों को रोशन कर सकें, इसके लिए हमें नेत्रदान करने का संकल्प लेना होगा।

मरने के बाद प्रायः शरीर के अंगों का कोई उपयोग नहीं हो पाता। पार्थिव शरीर का दाह-संस्कार कर दिया जाता है अथवा उसे दफ़ना दिया जाता है। प्रायः कहा जाता है कि खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना है। ये शरीर भी साथ नहीं जाता। ऐसे में इस पार्थिव शरीर का सदुपयोग हो जाए तो क्या बुराई है? आँखें दान करने का संकल्प तो लीजिए, उसी से लगेगा कि मरने के बाद भी शरीर का सदुपयोग हो रहा है और बिलकुल खाली हाथ नहीं जा रहे हैं। जिस दिन ऐसा करेंगे, जीवन अधिक उपयोगी और सार्थक लगने लगेगा। एक बेकार से बेकार अथवा नाकारा से नाकारा व्यक्ति भी नेत्रदान का संकल्प लेकर अपने जीवन को उपयोगी व सार्थक बना सकता है। सोचिए कितनी प्रसन्नता होगी उस व्यक्ति को, जब अपने जीवन की अंधकारमय दीर्घ रात्रि के पश्चात वो पहली बार इस संसार के अपरिमित सौंदर्य को देख पाएगा? क्या ये नेत्रदान करने का संकल्प लेने वाले के लिए कम प्रसन्नता की बात होगी? क्या ये किसी के अंतर्मन को आलोकित करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा?

यदि हम मरने के बाद अपनी आँखों को दान करने का संकल्प ले लें, तो हमारे ऊपर तो कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन किसी की सूनी आँखें जीवनभर के लिए रौशन हो जाएँगी, उसका जीवन सुंदर हो जाएगा, इसमें संदेह नहीं। प्रायः जब हमारे पास अधिक भोजन आदि होता है, तो हम उसको खराब होने से पहले किसी न किसी ज़रूरतमंद को दे देते हैं। यदि हम अपने नेत्रों को अंत्येष्टि के दौरान शरीर के साथ नष्ट हो जाने से पूर्व दान कर दें, तो किसी ज़रूरतमंद का जीवन सँवर सकता है। वो भी हमारी ही तरह इस सुंदर संसार के सौंदर्य का आनंद उठा सकेगा। वो अपने आत्मीय जनों को स्पर्श करने के साथ-साथ उन्हें देखने का सुख भी पा सकेगा। क्योंकि जन्म से ही हमारी दो आँखें हैं, अतः उनके अभाव में जो पीड़ा होती है, हम उसे अनुभव नहीं कर सकते। जब जीवन में कभी भी किसी वस्तु अथवा स्थिति के अभाव का अनुभव हो, तो विचार कीजिए कि दो आँखों के अभाव में एक नेत्रहीन व्यक्ति कितनी विवशता, कितनी परवशता का अनुभव करता होगा। उस समय नेत्रदान करने जैसे एक नेक काम को करने का संकल्प लीजिए। जहाँ तक दान की बात है, हर धर्म में दान के महत्त्व को स्वीकार किया गया है और नेत्रदान से बड़ा दान और क्या होगा? नेत्रदान का संकल्प लेना ही इस बात का प्रमाण है, कि हम सच्चे अर्थों में धार्मिक व्यक्ति हैं। महर्षि दधीचि ने राक्षसों का संहार करने के लिए अस्त्र बनाने के लिए, अपनी अस्थियों तक को दान कर दिया था। महर्षि दधीचि को अपनी अस्थियों का दान करने के लिए अपने जीवन का त्याग करना पड़ा था। नेत्रदान करने के लिए हमें जीवन का त्याग करने अथवा जीते जी अन्य कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं है। यह तो देहावसान के बाद ही संपन्न होने वाली क्रिया है। हमारे संकल्प के अनुसार, हमारे मरने के बाद हमारी आँखें किसी अन्य को प्रत्यारोपित कर दी जाएँगी। इससे अधिक महत्त्वपूर्ण क्या हो सकता है, कि हम वो चीज दान कर रहे हैं, जिसको नष्ट हो जाना है। अन्य किसी भी प्रकार का दान करने के लिए हमें किसी न किसी प्रकार का त्याग करना पड़ता है, लेकिन नेत्रदान करने के लिए हमें किसी भी प्रकार का त्याग नहीं करना पड़ता। नेत्रदान करने के लिए हमें उस चीज़ को देने का संकल्प मात्र करना होता है, जिसका हमारे या हमारे परिवार के लिए कोई मूल्य नहीं। हमारे विवेकपूर्ण संकल्प के कारण, ऐसी वस्तु जो हमारे लिए किसी काम की नहीं, लेकिन किसी अन्य का जीवन उजाले से भर दे, इससे अधिक प्रसन्नता की बात हमारे लिए हो ही नहीं सकती। यदि हम नेत्रदान का संकल्प लेते हैं तो हमें न केवल इस बात से संतुष्टि मिलेगी व उस संतुष्टि से प्रसन्नता होगी, कि हमारी आँखों से कोई अन्य भी देख सकेगा, अपितु हम अपने देहावसान के उपरांत भी इस सुंदर संसार को देखते रहने का अवसर पा सकेंगे। हमारा नेत्रदान का संकल्प इस सुंदर संसार को देखने की हमारी अवधि को बढ़ा देगा। कहा गया है कि यदि स्वयं प्रसन्न रहना है, तो दूसरों के जीवन में प्रसन्नता लाने का प्रयास कीजिए। जब हमारे चारों और प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे, तो हमारी प्रसन्नता भी निश्चित हो जाएगी। यदि हम दूसरों के जीवन में रौशनी भरने का प्रयास करेंगे, तो हमारा अपना जीवन स्वयं प्रकाशित हो जाएगा। प्रकाशोत्सव के अवसर पर दूसरों के जीवन को प्रकाशित करने का निर्णय लेना सचमुच बहुत बड़ी बात होगी। बाह्य अथवा कृत्रिम प्रकाश हमें केवल उतने समय तक आनंद प्रदान कर सकता है, जितने समय तक हम उसकी रौशनी में रहते हैं, लेकिन किसी दूसरे के जीवन में प्रकाश भर देने का संकल्प, जीवन भर हमारे अपने अंतर्मन को प्रकाशित करता रहेगा।

कुछ लोग कई गलतफ़हमियों के शिकार होते हैं, अतः नेत्रदान करने के लिए आगे नहीं आते। कुछ लोग इस अंधविश्वास के शिकार होते हैं, कि मरने के बाद किसी अंग के अभाव में अंतिम संस्कार करने पर उन्हें मोक्ष नहीं मिलेगा अथवा अगले जन्म में वे उस अंग से विहीन ही रहेंगे। यह अत्यंत भ्रामक सोच है। ऐसा कुछ नहीं होता। मोक्ष तो हमें उसी दिन मिल जाएगा, जिस दिन हम नेत्रदान जैसा महत्त्वपूर्ण व लोकोपयोगी संकल्प ले लेंगे। कहते हैं हमारे कर्मों के अनुसार ही हमें अगला जन्म मिलता है। हम मनुष्य के अतिरिक्त किसी अन्य योनि में भी जन्म ले सकते हैं। मैं पुनर्जन्म में दृढ़तापूर्वक विश्वास नहीं करता, लेकिन नेत्रदान करने पर म्त्यु के उपरांत भी इस सुंदर संसार को अपनी आँखों से देखते रहने का अवसर मिलना, क्या मनुष्य के रूप में ही पुनर्जन्म से कम होगा? यदि हम पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, तो इतना तो अवश्य स्वीकार करेंगे, कि यदि हम नेत्रदान जैसा उत्कृष्ट दान करते हैं तो इस सद्कर्म के फलस्वरूप भी पुनर्जन्म में मनुष्य के रूप में जन्म लेने की संभावना भी अवश्य ही प्रबल हो जाएगी।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली - 110034

अनुभूति

इकबाल अहमद,

परामर्शदाता, संस्कृति मंत्रालय

तीस वर्ष पहले की बात है। मैं अपने पैतृक स्थान धामपुर से मुरादाबाद जाने के लिए पैसेंजर ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहा था। ट्रेन आते ही उसमें सवार होकर विंडो वाली सीट पर कब्जा किया और आदत के अनुरूप बैग से किताब निकालकर पढ़ने लगा। इस किताब में कार्ल मार्क्स और सिग्मंड फ्राइड के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया था। मार्क्स के अनुसार जीवन की समस्त गतिविधियां अर्थतंत्र के अनुरूप संचालित होती हैं जबकि फ्राइड के अनुसार यदि मानव जीवन में विपरीत लैंगीय प्राणी के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाए तो जीवन निष्क्रिय एवं गतिविहीन हो जाता है और यह कि व्यक्ति अपनी प्रकृति की जंजीरों में कैद है। वह कितने भी उपदेश-प्रवचन दे ले, करता वही है जो उसकी प्रकृति उससे कहती है। मैं भी तो अपनी प्रकृति की जंजीरों में कैद हूँ। बस सोचों का एक तूफान। यह क्या है! क्यों है? एक अनवरत मनोदशा। न अर्थतंत्र की लालसा न फ्राइड के विपरीत लैंगीय प्राणी के प्रति आकर्षण। विचित्र बात है, लेकिन हकीकत। ट्रेन एक छोटे से स्टेशन पर रुकी कुछ सवारियां उतरीं कुछ चढ़ीं। एक कुरूप नख शिख वाली लड़की, खादी का कुर्ता पाजामा पहने, कंधे पर पत्रकारों जैसा कपड़े का थैला जिसमें से किताबों के कोने झांक रहे थे, लिए हुए मेरे सामने वाली सीट पर आकर बैठ गई। उसके साथ एक प्रोफेसर किस्म की प्रौढ़ महिला भी थी। मैंने उसकी ओर देखा और

फिर अपनी पुस्तक के अध्ययन में खो गया। विश्व प्रसिद्ध फ्रांसीसी चिंतक और कहानीकार गाय –डी- मोपासां ने कहा है कि औरत जात अपने हुस्न को अपने जीवन का सबसे बड़ा सरमाया मानती है। यह बेचारी किस चीज को अपना सरमाया मानती होगी? मैंने किताब का पृष्ठ उलटते हुए सोचा।

वह लड़की जर्मन फिलास्फर नित्शे के दर्शन की तुलनात्मक मीमांसा प्रस्तुत करते हुए अपनी साथी महिला से कह रही थी कि प्रत्येक व्यक्ति के अंतरमन में एक सुपरमैन का वास होता है। अपने संघर्ष और प्रयासों से वह उस सुपरमैन को बाहर निकालकर प्रचण्ड शक्तियों का स्वामी बन जाता है। वह विधि की धारा मोड़ सकता है जिससे इतिहास एक नए परिदृश्य से साक्षात्कार करने लगता है। ट्राटस्की और व्लादीमीर लेनिन ऐसे ही लोगों में शामिल थे जिन्होंने 1917 में रूस में महान सोवियत सोशलिस्ट साम्यवादी क्रांति की बुनियाद रखी थी और विश्व का नक्शा बदल डाला था। सन् 1779 में फ्रांस की क्रांति भी इसी अनुक्रम का एक पूर्ववर्ती भाग थी। अब्राहम लिंकन के नेतृत्व में अमरीका का सिविल वार और मानवता को दासता से मुक्ति, नेपोलियन द्वारा फ्रांस का उत्कर्ष, प्राचीन काल में चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा अखंड भारत का निर्माण, तुर्की के मुस्तफा कमालपाशा द्वारा अपने देश की आजादी की रक्षा, महात्मा गांधी द्वारा अहिंसा के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य को नतमस्तक करना, मिस्र के जमाल अब्दुल नासिर द्वारा अपने देश का उद्धार, वियतनाम के निहत्थे लोगों द्वारा अमरीका की स्पष्ट पराजय, चीन स्थित मंचूरिया के लोगों द्वारा जापानी साम्राज्यवाद का प्रतिकार नित्शे के इसी सुपरमैन द्वार संभव हुआ। उसने अपनी दमकती हुई आवाज में अपनी साथी महिला से कहा। उसकी बातों से पता चला कि वह फ्लासफी में पीएचडी कर रही है और उसकी साथी प्रौढ़ महिला उसकी गाइड है। वह ये सब बातें धीमें लहजे में धाराप्रवाह अंग्रेजी में कह रही थी। बात करते हुए उसके वुजूद से आभा फूट रही थी और एक अतुल्य तेज ने उसके व्यक्तित्व को बुलंदियों की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया था। ''अद्भुत, अनुपम, अद्वितीय।'' मेरे मुंह से निकला।

''स्टाइल इज मैन'' अर्थात 'व्यक्तित्व ही सौन्दर्य होता है।'सम्पूर्ण जीवन संघर्ष और अपरिमित जिम्मेदारियों में गुजारने के कारण मैंने कभी किसी चपल चितवन की तमन्ना नहीं की थी। वैसे भी तपते हुए रेगिसतान में चलने वाले रोमांस की आकांक्षा कैसे कर सकते हैं, लेकिन आज तो दुनिया ही बदल गई। मन निर्बाध आसक्त हो गया।

काश! यह अनुपमा मेरी जीवन साथी होती!! मैंने किताब के पीछे से थोड़ी नजरें उठाकर उसकी ओर देखा। जैसे उस पल वह भी मेरी तरफ देख रही थी। मैंने घबराकर नजरे चुरा लीं और चेहरे को किताब के पीछे छिपा लिया। मैंने फिर अपने कानों को उसकी आवाज की तरफ लगा लिया। काफी देर हो गई, लेकिन उसकी आवाज को मुहर लग गई थी। वह गुमसुम हो गई थी। मेरे संवेदनशील मन ने कहा कि शायद मेरे व्यवहार से उसका मन क्षुब्ध हो गया। उसने सोचा होगा कि मैंने घृणा से उसकी कुरुपता से मुंह मोड़लिया। मैंने स्वयं को धिक्कारा। इस मासूम का दिल मेरी हरकत की वजह से टूट गया। नहीं मैं उसका दिल साफ कर दूंगा। मैं कहूंगा, ''आप...... आप....... बहुत ही अच्छी और एक विदुषी महिला हैं। वास्तव में आप शब्दों के सच्चे अर्थों में एक बेमिसाल रूपवती हैं।'' लेकिन मैं कुछ भी नहीं कह सका। उसकी ओर देखकर मैंने फिर अपना सिर झुका लिया।

आसमान पर बादल छाए हुए थे। अचानक उनमें गर्जना पैदा हुई और वर्षा की एक बौछार खिड़की के रास्ते ट्रेन के अंदर आई। मैंने जल्दी से उसे बंद किया। सरेशाम चारों ओर घोर अंधेरा छा गया था। मुरादाबाद का स्टेशन आ चुका था और मुसाफिरों के साथ मैं और वह भी दोनों ट्रेन से नीचे उतरे। हम चलते हुए स्टेशन के उस अहाते में आ गए जहां सामने एक बड़ामैदान था जिसमें रिक्शा, आटो वगैरह खड़े होते हैं। लेकिन मूसलाधार बारिश के कारण सभी चालक नदारद थे। वह मेरे पास खड़ी थी। मैंने अपने संवादों को मन ही मन दोबारा संजोया। ''हां तो, आप बहुत ही सुंदर हैं। जीवन में पहली बार मैं किसी लड़की से इस हद तक प्रभावित हुआ हूँ कि उसे असीम श्रद्धा या प्रेम कह सकूं। मुझे महेन्द्र प्रताप कहते हैं। क्या आप मुझे अपना नाम नहीं बताएंगी? मैंने उससे संबोधित होने के लिए अपना सिर उसकी आरे उठाया। लेकिन वह वहां नहीं थी, फिर कहां गई? मैंने सामने मैदान में देखा जहां चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। तभी बिजली कड़की। वह मूसलाधार बारिश में पागल दिवानों की तरह भागती जा रही थी। फिर वह मैदान के आखिरी कोने में इस तरह खो गई जैसे अपने अस्तित्व को अंधेरों में खो देना चाहती हो।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

माँ, कभी नहीं मरती

माँ, कभी नहीं मरती
प्राण-पखेरू के उड़ने पर भी, कभी नहीं मरती है माँ
बच्चों के हृदय तल में
रहती है सदा आसीन, मिलते ही एकांत
वह सुत-सुता से करती है ढेरों संवाद
कभी हँसाती, कभी रूलाती
ले जाती है स्मृतियों के देश।
बच्चों ने माँ से ही जाना, उत्सवों का बहुरंगी अर्थ
उसकी स्मृति से झरती है
व्यंजनों की सुगंध चहुँओर
घर करने लगता है ग़म-गम।
माँ के ही पाठ से मरणोपरांत मनचली बेटी भी
सुलझाने लगता है
अपने जीवन के अनसुलझे धागे
सचमुच बेटियों में
प्रतिबिंबित होता है
माँ का ही रंग-रूप, व्यवहार।
बेटी जब होती निर्णय दुर्बल
समस्याओं के चक्रव्यूह में फँसकर
तब झटपट आकर
माँ आलोकित करती है
समाधान की कई-कई राहें
माँ की बानी में होता
लोकोक्तियों का देशज रंग
अतः बेटी की भाषा मे भी
महक आ जाती है
मिट्टी की सोंधी- सोंधी ख़ुशबू।
माँ का दुलार-फटकार
बन जाता है जीवन-औषधि
माँ के रोपे बीज निरंतर
बनाते हैं उसके चरित्र को उत्तम
जन्मजात संस्कारों से
फिर बेटी बनती है
तरु छायादार देवदारु
माँ बनकर उसने जाना
बेटी प्राण सी प्यारी होती है
बेटियों में रहकर माँ अमर होती है।

शशिकला त्रिपाठी

सुनो न!

सुनो न
मुझे पंख लगाने से पहले
मेरी आंखों में स्वप्न भर देना
भ्रमित हो न सकूं पथ से अपने
सुरमय मुक्त स्वर दे देना
रंग देना अपने नेह से
मेरे पैरों में गुलाबी रंग
ताकि परवाज़ भरने के बाद
जा बैठूं यदि किसी मुंडेर पर
ठहर करूं विश्राम
छप जाए मेरे पैरों की छाप
आंखों के सपनों का लिख दूं
महाकाव्य एक साथ
मधुर स्वरों में गूंज उठे नभ
प्रेमिल पवन भ्रातृ भाव दे
ताकि उड़ने के पहले
तुम्हें साथ होने का विश्वास
मुझे, मेरे पंखों को
मेरे सपनों को
मेरी उड़ान को
सशक्त करता रहे
तुम्हारे प्रेम का रंग गुलाबी
खिलता रहे मेरे पैरों में
सुनो न
तुम रंगते रहना
मेरे सपनों का संसार

प्रतिमा पुष्प, भदोही

कहानी

प्राइवेट बीवी

श्यामल बिहारी महतो

चार दिनों से मैं भारत दूर संचार निगम लिमिटेड के आफिस का चक्कर लगा लगा कर थक चुका था। आज पांचवा दिन था। अब खुद मुझे चक्कर आने लगा था । मेरा बैंकिंग, नेटवर्किंग और ईमेल का सारा काम रूक गया था। ऊपर से पिछले पांच दिनों से आफिस बुला बुला कर उसने मेरे दिमाग का दही बना रखा था। मैनें तय कर लिया था कि आज के बाद उस आफिस में फिर कभी कदम नहीं रखूगा। अजीब घन चक्कर में मैं फंस गया था। मेरी हालत कमोबेश उस मदारी की तरह हो गयी थी। नाच की करतब दिखाते दिखाते जिसकी बंदरिया किसी बंदर के साथ भाग गयी हो। और जमीन पर बैठा मदारी डंडा पिटता रह गया हो।

पिछले ही माह बड़े शौक से मैने अपना एक सिम का " बी एस एन एल " में पोर्ट कराया था। जैसे आज के युवा अपनी पुरानी गर्ल फ्रेंड को छोड़ बड़े शौक से नई गर्ल फ्रेंड के साथ शादी कर लेते हैं। कहा जाता है शादी की लड्डू और पडोस की बीवी हर किसी को लुभाती है। मैं भी बहुत खुश था। मेरे दिल में भी लड्डू फूट रहे थे। पर हाय री ! किस्मत सर मुडाते ओले पडे जैसी हालत हो गई मेरी।

एक दिन बाजार में मेरा मोबाइल गुम हो गया। जैसे सोनपुर मेले में कभी कभी बीवियां गुम हो जाती हैं। लुटे पिटे हालत में फिर भी बीवियाँ मिल जाती हैं। लेकिन गुम हुआ मोबाइल का मिलना समुंदर के बीच से मोती खोज निकालने के बराबर था। मोबाइल में दो सिम कार्ड लगे हुए थे। एक जियो का और दूसरा था " बी एस एन एल " का। काफ़ी खोज बीन हुआ। पर न मोबाइल मिला और न कोई सुराग़। हाथ मलता हुआ मैं नजदीकी थाने में पहुँचा। पूरा का पूरा वाकया एक कागज़ पर उतारा और थाने के बड़ा बाबू के पास जा पहुँचा। सनाहा दर्ज करने हेतु आग्रह किया ।

" दो दिन बाद आकर रिसिव ले लेना " उधर से कहा गया ।

" सर, आज नहीं होगा ? "

" यह ब्लॉक नहीं है, कुछ ले देकर हो जायेगा सोच रहे हो, यह थाना है थाना.. जाओ..! " खड़े खड़े बड़ा बाबू ने झाड दिया।

क्षुब्ध मन लिए मैं चला आया था।

औरत बिना पुरुष कुछ दिन पडोसन से हंस बोल गुजारा कर भी लेगा। लेकिन मोबाइल बिना उसकी नींद नहीं आयेंगी। मोबाइल अपना ही अच्छा लगता है, पडोसन की नहीं। उस रात मेरी भी नींद आंखों में कटी। रात भर बुरे बुरे सपने आते रहे।

अगले ही दिन सुबह सीधे जियो आफिस जा पहुंचा। गार्ड ने गेट खोला। अंदर एक सुंदर सी कन्या ने स्वागत करते हुए कहा " आइए सर! क्या काम है? "

" मेरा मोबाइल गुम हो गया है, मुझे फिर से वही नम्बर चाहिए..। "

" रिप्लेस का मामला...! " लड़की ने कलिग लडके की तरफ देखा।

" सिम तुरंत चालू हो जायेगा..आप दस मिनट समय दीजिये, मोबाइल लाए है !" काउंटर में खड़े उस लडके ने पूछा।

" लाया नहीं है, पर अभी खरीद लूंगा..! "

मोबाइल सेट झट उसी आफिस से खरीद ली मैने। दस मिनट तक

वही लडका जाने कहां गिटिर पिटिर करता रहा, फिर एक सिम कार्ड उसने मोबाइल में डाला फिर मुझसे बोला " आपका सिम चालू हो गया है, सर ! अब आप बात कर सकते है।"

पहला फोन मैंने बेटे को किया और " सावधानी से मोबाइल रखना " कह दिया।

दूसरे दिन मैं भारत दूर संचार निगम लिमिटेड के आफिस में पहुंचा। दो चार लोग पहले से वहाँ मौजूद थे। मैंने अपनी बात उसी भीड़ में घूसेड़ दी " मेरा मोबाइल गुम हो गया है,। पर मुझे वही नम्बर चाहिए प्लीज..।"

जवाब उसी रूप में मिला " थाने में दर्ज रिपोर्ट का ॅपी, आधार कार्ड, वोटर कार्ड और एक फोटो कल लेते आइए। "

" इतने सारे कागज ? "

" भाई, ऐसा है न, यह सरकारी संस्था है, कोई प्राइवेट मुर्गी फार्म नहीं ! "

" ठीक है महाशय, समझ गया, यह सरकारी संस्था है, कोई ठरकी संस्था नहीं। सभी पेपर लेकर आता हूँ। "

मैं सीधे थाने पहुंचा। बडा़ बाबू कहीं निकल रहे थे। प्रणाम किया और मोबाइल गुम की बात कही तो उन्हें स्मरण हो आया। खड़े खड़े उन्होंने आवाज दी " सुनो, इसकी रिपोर्ट दर्ज हो चुकी है, दराज़ में फाइल है, रिसिव कॉपी दे दो.. " और वो जीप में जा बैठे थे।

दूसरे दिन भारत दूर संचार निगम लिमिटेड के आफिस में फिर जा पहुंचा। आफिस कर्मचारी को शायद यह उम्मीद नहीं थी कि उसके कहे कागजातों के साथ उसका तबला बजाने मैं हाजिर हो जाऊंगा। आश्चर्य भाव से उसने मुझे देखा। फिर पेपर देखने के बाद अपने काम पर लग गया। बीच बीच में गायत्री मंत्र की तरह जाने क्या जपता रहा -" सरवर डोन..इ.र.र, सरवर डोन.. इरर..! " इसी बीच उसने दो बार मेरा फोटो भी लिया। लेकिन खोदा पहाड़ निकली चुहिया वाली चरितार्थ ! आधा घंटा बीत गया। काम नहीं हुआ। सडा आलू की तरह उसके मुंह से बात निकली " भाई साहब, आज आपका काम नहीं हो सकेगा। सरवर डोन है, इरर के कारण काम नहीं हो रहा है। कल साढ़े दस बजे आइए..काम कर देंगे। "

आफिस से बाहर निकला तो पीछे से एक आदमी ने कहा " क्या लगता है, कल आपका काम हो जायेगा..? "

"बोला तो है..! "

" आज मेरा चौथा दिन है, इसी काम के लिए घूम रहा हूँ..! "उसने कहा और आगे बढ़ गया।

अगले दिन मैं आधा घंटा लेट से पहुंचा। अपने आफिस में कुछ जरूरी काम करने थे। जब से इस आफिस का चक्कर लगाना शुरू किया था। । अपने आफिस के कई काम पेंडिंग पड़ गये थे जिन्हें करना भी जरूरी था।

" आज आप आधा घंटा लेट हो गये। इन दोनों का काम हो जाने के बाद ही आपका काम होगा...। " मुझे देखते ही उसने कहा था।

" ठीक है..। " मैंने कहा और एक खाली कुर्सी पर बैठ एक लंबी सांस ली और उस मनहूस घड़ी और उस मादरज़ात को कोसने लगा जिसने यह दिन दिखाई। तभी मेरे काम का नम्बर आया। फिर वही प्रक्रिया, नम्बर, फोटो.. टिप टाप, गिटिर पिटिर..!

" लो आपका भी काम हो गया..! " अंत में उसने कहा " सौ रूपये दीजिये और यह सिम लगा लीजिए..। "

"सर, आप ही लगा दीजिये न..। "

" यह काम मेरा नहीं है, किसी से लगवा लीजिए.. "

" यहां कौन लगा देगा, मुझे लगाना नहीं आता है..! ""

" मुझे भी नहीं आता है..! "

" इस रूखेपन की वजह..? "

" कोई वजह नहीं, शाम तक सिम चालू हो जायेगा..यह नम्बर रख लीजिए ! " कह वह दूसरे कमरे में चला गया था। वहां अब रूकने की कोई वजह तो थी नहीं। मैंने भी आफिस को प्रणाम किया और चल दिया। अब मैं बेसब्री से शाम का इंतजार करने लगा। क्या कहूं शाम तक बड़ी बेताब रहा मैं।

इस सिम और नम्बर को लेकर मैं कई रातें ठीक से सोया नहीं था। मन में कितने तरह के बुरे बुरे ख्याल आते रहे। बैंकिंग, आनलाइन, गुगल और पे फोन, सभी इसी नम्बर से कनेक्ट था। साईबर क्राइम से दुनिया त्रस्त है,यह कौन नहीं जानता है। आज हर आदमी की मूडी सियार की तरह मोबाइल में फंसा हुआ है और उनकी अंडरवियर और साड़ी भी आधार की तरह मोबाइल से कनेक्ट है। आज आजाद आदमी मोबाइल का गुलाम बन चुका है। मैं बडी़ शिद्दत से यह सब महसूस करता रहा।

शाम तक सिम चालू नहीं हुआ। मैं धैर्य बनाये रखा। रात हो गयी। लेकिन फिर भी सिम चालू नहीं हुआ। धैर्य भी नहीं रहा। उन्हें फोन लगाया। जवाब मिला " कुछ त्रुटि हो गई है, कल आपको फिर से आफिस आना होगा..! "

"अब्बे..! "गाली देनी चाही। लेकिन दी नहीं। सोचने लगा " उसे गाली देकर क्या होगा ? एक नम्बर या सिम नहीं, यहां तो पूरा का पूरा सिस्टम करप्ट हो चुका है। और यह गाली देने या थाली पिटने से खत्म नहीं होगा। इसके लिए एक नई सोच विकसित हो करनी होगी, युवाओं को अपने जमीर को जगाना होगा। जो इस अंधभक्त राष्ट्र में अभी दूर दूर तक नज़र नहीं आता। "

मैं बहुत बड़ी उलझन में फंस गया था। समझ में नहीं आ रहा था कि अब मैं क्या करूँ ? नम्बर छोड़ नहीं सकता, इसे रखना मेरी मजबूरी बन चुकी थी और रिश्वत दे नहीं सकता यह मेरे सिद्धांत के खिलाफ था।

बोकारो झारखंड

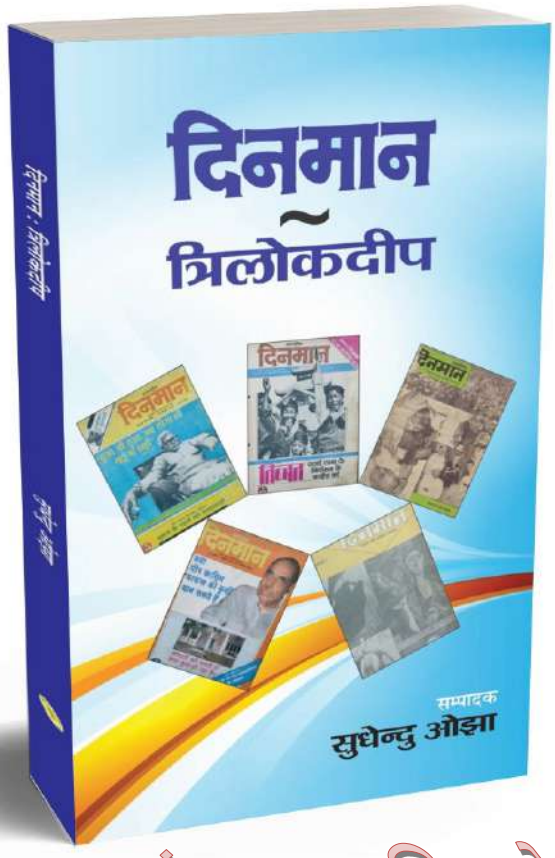

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

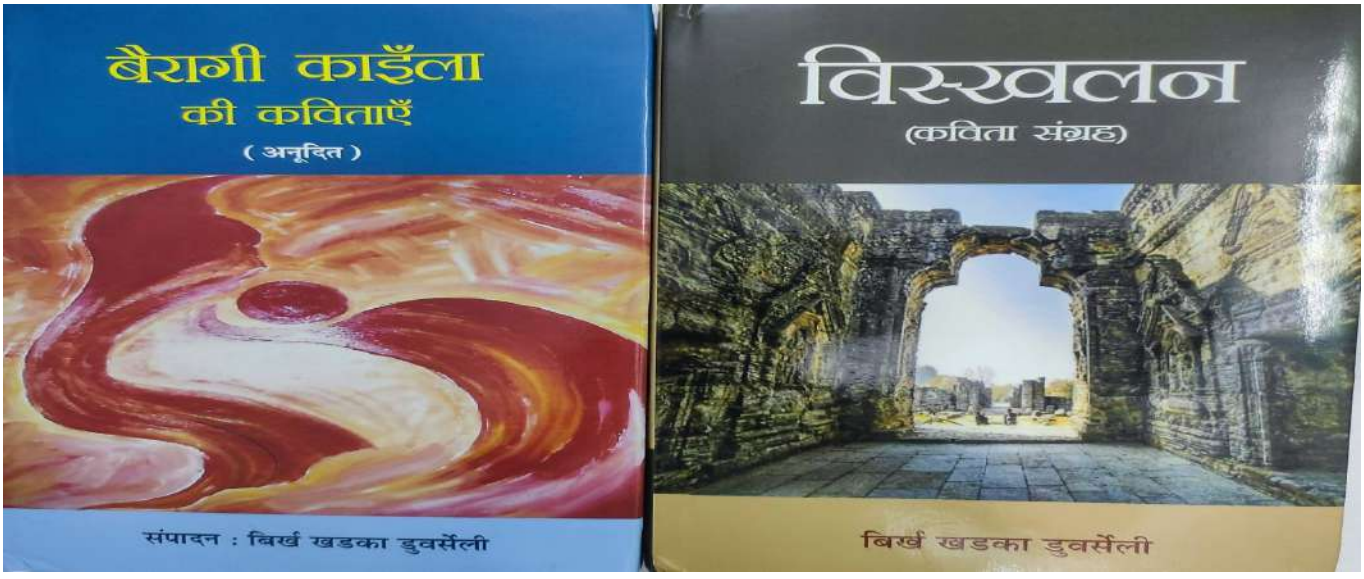

वैरागी काइँला की कविता

बिर्ख खडका डुवर्सेली

प्रकाशित कृतियाँ :

(1) फूल पात पत्कर (20198 वि.सं.), (2) वैरागी काइँलाका कविता : (2081 वि.सं.) (3) किराँत जागरण गीत (अनुवाद: 2088 वि.सं.), (4) महागुरु फाल्गुनन्दका उपदेशहरु तथा सत्यहाङमा पन्थका भजन माला (2047 वि.सं.) (5) लिम्बू जातिमा कोख-पूजा (2049 वि.सं.), (6) ईर्ष्या तथा आँखी डाही को आख्यान (2051 वि.सं.) (7) प्रेतात्माको आख्यान तथा अनुष्ठान (2051 वि.सं) (8) अन्धा मान्छेहरु र हात्ती (2068 वि.सं.) (9) जर्नल अॅफ लिम्बू लिटरेचर एण्ड कल्चर (2048 वि.सं.) (10) मोच मार्ने आख्यान र अनुष्ठान (2051 वि.सं.) (11) लिम्बू धर्मशास्त्र 'मुन्धुम' संबंधी पाँच किताब (2070 वि.सं.)

सम्पादन:

* 'तेस्रो आयाम' (साहित्यिक मासिक) (1963 ई. सन्)
* 'कविता' नेपाल अकादमी पत्रिका
* लिम्बू व्याकरण
* लिम्बू भाषा तथा साहित्य विचार गोष्ठी

पुरस्कार व सम्मान :

* साझा पुरस्कार (वि.सं. 2031)
* सिद्धिकरण काव्य पुरस्कार (वि.सं. 2053)
* वीपी साहित्य सम्मान (वि.सं. 2076)
* रत्नशोभा शुभलक्ष्मी मुन्धुम पुरस्कार
* नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान (नेपाली अकादमी) के कुलपति (वि.सं. 2066 से 2070 तक)

संपर्क : घुमवरही, सुकेधारा, महाकाली मार्ग- 48, मेट्रोपॉलिटन सिटी-5, काठमाडौं (नेपाल)
मो. नं. : 9841341327
ई मेल : tbnembang27@gmail.com

वैरागी काइँला की कविताओं के अनुवाद तथा सम्पादन विषयक अपने अनुभव को लिखते हुए श्री बिर्ख खडका डुवर्सेली कहते हैं कि नेपाली साहित्य-संसार में बैरागी काइँला ऐसे कवि हैं, जिन्हें बहुत कम कविताएँ लिखकर बहुत ज्यादा प्रसिद्धि मिली है। आयामिक कवि और आयामवाद के एक प्रवर्तक होने की वजह से बहुत चर्चित और प्रतिष्ठित हैं। सातवें दशक की शुरूआत में दार्जिलिंग के तीन युवा साहित्यकारों ने 'तेस्रो आयाम' (तीसरा आयाम) पत्रिका का प्रकाशन शुरू करके एक आन्दोलन को जन्म दिया, जिसने नेपाली साहित्य में भाषा-शिल्प, विषय-चयन तथा प्रस्तुतीकरण की दृष्टि और सोच में नवीन प्रयोग करके हलचल मचाई और नेपाली साहित्य में ऐसी जगह बनाई जिसका जिक्र किये बिना नेपाली साहित्य संपूर्ण नहीं हो सकता है।

बीसवीं सदी के सातवें दशक की शुरूआत की बात है, हिन्दी साहित्य में नई कहानी, नई कविता, अकविता, आधुनिक कहानी की चर्चा चल रही थी, तब दार्जिलिंग से सन् 1963 के अप्रैल महीने में 'तेस्रो आयाम' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसके साथ आयामिक चिंतन और लेखन की विधिवत साहित्यिक घोषणा हुई घोषणा-पत्र के साथ, जो निस्संदेह नेपाली साहित्य में पहली घटना थी। यूँ तो समय-काल या कालान्तर में बूट पालिस आन्दोलन, अमलेख अभिव्यंजना, असंतुष्ट जमात, सड़क-कविता-क्रान्ति, तरलवाद, समावेशी आन्दोलन विचलनवाद, हस्तक्षेपी जैसे आन्दोलन या वाद या प्रयोग देखे गए, बहस के मुद्दे बने; लेकिन आयामिक आन्दोलन की बात अति उल्लेखनीय और सान्दर्भक इस अर्थ में हैं कि इसके बाद लेखन-संसार में उथल-पुथल मच गया, राग बदले और विविधता के साथ नवीनता का समावेश होना शुरू
हो गया।

उल्लेखनीय रूप में आयामिक आन्दोलन के समर्थक अनुयायियों का जमात बढ़ता ही गया। आमायिक आन्दोलन की शुरूआत ही अजीबोगरीब तरीके से हुई जिसके अगुवा या प्रवर्तक थे तीन युवा उत्साही साहित्यिक- इन्द्र बहादुर राई, बैरागी काइँला और ईश्वर वल्लभ। तीन विभूतियों में अब केवल 82 (बिरासी) वर्षीय बैरागी काइँला लेखन में आज भी संघर्षरत हैं।

बैरागी काइँला और ईश्वर वल्लभ की कविताएँ ज्यों-ज्यों चर्चित होती गईं, आयामवादी लेखन में प्रभाव के लक्षण परिलक्षित होने लगे, समकालीन नेपाली कविताएँ परंपरावादी रूढ़ मान्यता की पटरियों से निकलने लगीं, व्यापक बदलाव भी दिखने लगे और कवियों और कहानीकारों के लेखन में आयामवादी तबदीलियाँ नज़र आती गईं। रुढ़ बिम्बों का प्रयोग थमता गया, तुकबंदी बंद होती गईं इतना ही नहीं, प्रतीक- योजना और मिथक-प्रयोग, बिंब - विधान तथा विषय चयन में नए आकाश और नई धरती की खोज होने लगी।

एक तरफ आख्यान लेखन में इन्द्र बहादुर राई ने विचार के आकाश के विस्तार का जायजा लिया सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप को संपूर्णता परोसने में और एक से बढ़कर एक कहानियां दी तो दूसरी तरफ कवि बैरागी काइँला और ईश्वर वल्लभ ने कविताओं में अत्याधुनिक प्रयोग और बिंबों के जरिए दर्शन दृष्टि, शैली तथा विस्तार में अजूबे प्रयोगों को सम्प्रेषणीय ढंग से परोसा, जिससे जीवन और जगत् की कई परिभाषाएं आईं; व्यापक रूप में नवीनतम विचारों ने बसेरा पाया। कविताओं में कहीं कविता का शीर्षक मोटे अक्षरों में हैं तो कहीं कविताएँ शीर्षक से भी मोटे अक्षरों में हैं, कहीं शब्द अव्यवस्थित, टेढ़े -मेड़े उल्टे या गिरते हैं तो कहीं शब्द या पद्यांश मोटे अक्षरों में होते हैं। कहीं दो पंक्तियों के बीच अच्छा-खासा खाली स्थान नज़र आता है। अतः अजूबे बंधनात्मक बैरागी काइँला की कविता शैली के अद्भुत नमूनों का भरमार हैं।

... आजकल सड़क घट गई है
चुराता है कौन 'सड़क के किनारों को ?
मुझे करीब से छूकर गई
दूर पहुँची काली मोटर के साथ मृत्यु, आज जिंदगी के करीब से गई !
ढेर सारे बच्चों को स्कूल तक पहुँचाकर
ढ़ेर सारे बेटों को सीमान्त के मोर्चे से घर वापस पहुँचाकर ढ़ेर सारे बापों को दफ्तर से घर वापस पहुँचाकर
अब तो थक गये हैं रास्ते.....

X

इन हाट जाते लोगों को
लेकिन कुछ पता ही नहीं चला- मृत्यु तो आज
जीवन के बाजार को समझ कर आई !

उपरोक्त कवितांश बताते हैं, काइँला की काव्य-चेतना जीवन-मरण के अर्थों की परिभाषा में मानव मुक्ति का मार्ग ही ढूँढ़ती है। वैश्विक परिदृश्य में समाधानों की खोज में निकली कविताओं की यात्रा थमी नहीं है, निरंतरता यथावत् है।

यहाँ यह उल्लेख करना मैं मुनासिब समझता हूँ कि काइँला की भाषा में सरलता नहीं के बराबर है, पर क्लिष्टता और जटिलता है भरपूर जैसे जिंदगी में होती है। मेरा तो मानना यह है कि कविताएँ चुनौती और कसौटी का सामना करती रहती हैं ताकि शासन और शोषण से मुक्ति मिल सके।

'तेस्रो आयाम' (तीसरा आयाम) पत्रिका के अगस्त-सितम्बर, 1963 के अंक के संपादकीय में अपना पक्ष रखते हुए काइँला ने लिखा है- "आयामिक लेखन यह विश्वास रखता है, बीसवीं शताब्दी की अस्त-व्यस्तता तथा जटिलता पुराने लेखन के ढाँचे के भीतर समाहित नहीं होती है... आयामिक लेखन की आस्था है, आधुनिक

लेखन से ही आधुनिक मनुष्य की जिंदगी से संलग्न अभिव्यक्ति प्रस्फुटित होती है।" कवि का कहना है-

विचार : पक्षाघात की मार पड़े हाथ हो गये हैं मैं कुछ न होने जैसा ही हो गया हूँ।

कवि काइँला की कविताओं का पाठक और अनुवादक होने के नाते इतना ही कहूँगा, बहुत सारी क्लिष्ट समस्याओं से मुझे जूझना पड़ा, जब अनुवाद की प्रक्रिया चलाने लगा, जबकि नेपाली और हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और दोनों के मातृ स्रोत संस्कृत है। विश्व के विख्यात दर्शनशास्त्रियों और सभी धर्मों की मान्यताओं और आस्थाओं को काइँला ने यथोचित जगह दी है। इसीलिए अनुवाद के दौरान जितनी बार कविताओं से मिला, उतनी बार कवि से मिलने की जरूरत महसूस हुई। मिला कई बार लगभग दो दशक की अवधि में और मिली मुझे संतुष्टि, और आगे बढ़ता ही गया।

इस संग्रह में संकलित कविताओं का अनुवादक मैं ही केवल नहीं हूँ। यह खुशी की बात है कि अनुवादकों में काठमाडौं (नेपाल) के चर्चित और प्रतिष्ठित ज्ञानीगुनी विद्वान और विदुषी भी हैं- डॉ. रामदयाल राकेश और डॉ. संजीता वर्मा। उनके अनुवाद ने मुझे इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी, कवि काइँला की कविता की गति के वेग और ठहराव के अर्थ समझने का सुअवसर भी दिया।

सत्तावन, मंगलवारा, पिपिरिया (मध्य प्रदेश) से प्रकाशित तथा श्रद्धेय वंशी माहेश्वरी द्वारा संपादित पत्रिका 'तनाव' अक्टूबर-दिसम्बर 10/ बैरागी काइँला की कविताएं 2001 के सम्पूर्ण अंक में अनुवाद श्रृंखला अन्तर्गत वैरागी काइँला की कविताएँ प्रकाशित हुई थीं। जिनका अनुवाद मैंने किया था, इस संग्रह में संकलित हैं।

नेपाली साहित्य में पृथक और विशिष्ट स्थान दखल करने की खासियत रखने वाले कवि काइँला की कविताएँ विषय, शिल्प, भाषा तथा दृष्टि से दुरूह, जटिल तथा क्लिष्ट होने के बावजूद अनुवाद कर्म में क्लिष्टता से सरलता, स्थूलता से सूक्ष्मता और दुरूहता में सरसता परोसने की हर कोशिश अनुवादकों ने की है। यह मेरा सौभाग्य है कि अनुदित कविताओं का संग्रह हिन्दी के पाठकों के समक्ष भेंट करने का शुभ काम हो रहा है, इसके लिए आधारशिला प्रकाशन के संपादक डॉ. दिवाकर भट्ट के प्रति तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

हो सकता है, कई जगहों में अनुवादकों की सोच, समक्ष और क्षमता कवि के समतुल्य ऊँचाई या गहराई तक नहीं पाई हो अथवा अनुवाद के रूप में कवि के संवाद और संदेश उसी रूप और रंग में परोस पाना संभव न हुआ हो तो उसे हमारी विफलता ही समझनी चाहिए- अनुवादक और सम्पादक की हैसियत से स्वीकार करता हूँ। आमा

खडकालय, दुर्गागढ़ी प्रधाननगर, दार्जिलिंग 734003
प.ब. (भारत) मो. +919749052857
ईमेलः birkhakd@gmail.com

आइये अब पढ़ते हैं इस प्रख्यात कवि की कुछ नेपाली रचनाओं को जिनका हिन्दी में अनुवाद किया है : श्री बिर्ख खडका डुवर्सेली ने :

एकान्त का अजगर

चारों तरफ से प्रतिबन्ध और निषेध की
जर्मन सिपाही जैसी पक्की दीवार ऊपर से
काली बिल्ली सीने पर टेक रही हो जैसे कब ढल जाएगी और दबोच लेगी
ऐसी है
झुकी झुलती छत की भयावह आकृति द्वारा, बन्द करके रखा गया एक कमरा है!
अस्पताल के अति सुनसान इस कमरे के भीतर
काली-सी मटमैली-सी
कान के पर्दे को फाड़ने जैसी असहय नीरवता है!
ढेर सारे सपने
असंख्य इच्छाएँ और आकांक्षाएँ
और एक जिन्दगी...
फूलदान के मुरझाए फूलों के साथ
चारों आयाम बन्द हैं, अस्पताल के
इस कमरे के भीतर !
हरेक खिड़की में
प्रकाश ढोकर आने वाली हवा को रोकने की खातिर
आकाश लेकर आने वाली किरणों को रोकने की खातिर
घने-घने पर्दे लटकाए गए हैं!
यह मुर्दे के चेहरे जैसा एकान्त
इस अकेलेपन के कमरे के भीतर
सुनसान-सनसान नीरवता की भी आवाज गूँजती है।

घनघोर जंगल के भीतर

भूख से व्याकुल अजगर को छटपटाहट से निकालने वाला
सा....य सा....य का लंबा निश्वास जैसा
सुनसान- सुनसान नीरवता की ही आवाज है !
मृत्यु की निस्तब्ध और गतिहीन आँधी....
यह असहय आवाज !
यह सुनसान- सुनसान नीरवा की आवाज.....
अजगर के खुले मुख से
शून्यता के अँधेरे पेट की ओर
जाने कैसे खींच रही है...
प्रत्येक मनुष्य को ज्ञात ही नहीं हो पाता है ऐसे वेग से....

एकान्त में
अस्पताल के कमरे के भीतर
प्रत्येक अदृश्य वस्तु घोंपती है....
सुनसान नीरवता
कनपटियों में, मस्तिष्क के प्रत्येक भाग में
फोड़े निकालकर घोंपती है
उफ! बिजली की रोशनी भी
ठीक ललाट के बीच घोंपती है !
के
मेरी छटपटाहट
मेरी व्याकुलता
मेरी शिथिलता
जन्म के साथ जिन्दगी की
अस्वस्थता का लंबा इतिहास !
धरती सीने पर बीमार तरह ढोती है !
यहाँ तो जिन्दगी को भी
जीने की लिए घोर संघर्ष करनी पड़ती है
मैं भी तो
कितने बड़े युद्ध में व्यस्त हूँ
खुद
को बचाने की खातिर
निकाल कर स्वयं को अस्पताल के निर्जीव कमरे से
कुण्ठा और बाध्यता के घेरे से बाहर।
लेकिन मेरे जानने के बावजूद
मेरे देखने के बावजूद
यह सुनसान... एकान्त का अजगर
मुझे भी दे...र से ही
बहुत आ...हिस्ता...आ...हिस्ता निगलता रहता है!
मृत्यु
की घाटी में
पत्तेरहित कंकालों के नंगे पेड़ों के बीच
उजाड़... बंजर... नंगी भूमि पर
बहुत क्रूरता के साथ
अति नग्नता के साथ
काली बिल्ली चूहे को ....
खेलने की ख़ातिर ही आहिस्ता-आहिस्ता मारती है !
मारने की खातिर की आहिस्ता खेलती है!
जैसे मुसीबत के वक्त भी
मेरी मदद करने में असमर्थ हैं
ये, टेबल की किताबें
वे, दराज की दवा की बोतलें...
दया किये बिना न रहने वाले मनुष्य की
सहानुभूति की दुर्बलता पता लगाकर देखने पर असमर्थ होकर
एक टक मात्र देखते रहती हैं....
सूखी दृष्टि से !
सूखे स्पर्श से !
सूखे हृदय से !
लालसा पूरी होने तक भी बच न पाई खुले दिल से मर भी न पाई
यह जिंदगी भार जैसी है... यह जिंदगी ! उफ्!
मैं यह जिंदगी के हरेक क्षण धरन के एक-एक तख्ते जोड़कर
एक...दुई...तीन... कहकर गिन सकूँगा !
अचानक मुझे ऐसा भी लगता है
मृत्यु की भयानक कल्पना करके
लोग यूँ ही डर जाते हैं खुद
लेकिन मृत्यु तो....
लाल कम्बल के भीतर के ही
नरम-नरम कपास की गर्म रजाई जैसी होती है !
लाल कम्बल के ऊपर
कतरा-कतरा खून से सने
मेरे अर्धमृत सपने
कम्बल के ऊपर, गाँठ से फिसली ऊन की डोरिया से
कहीं-कहीं, उलझे उलझे घिसकते हैं....
उलझे उलझे घिसकते हैं....
मैं भी कहीं उलझ जाऊँ... सोचता हूँ
लेकिन एक जगह उलझकर रह न सकने की विवशता है जीवन की
और
मौत की ख़ातिर रजाई ओढ़कर मैं तो लम्पट बेसुध हो जाता हूँ
एक लोहे की खटिया पर ! जीवन है कि और किसी ओर घिसट-घिसट
कर बढ़ता है... लेकिन यहाँ की हरेक आवाज बन्द है; किसी बड़ी
अनिश्चित दुर्घटना के संभावित भय से आक्रान्त होकर ! ग्लास नहीं
बोलती है!
दबा की बोतल नहीं बोलती है ! अखबार भी चुपचाप है!
मध्ययुगीन इतिहास के
विजयोन्मत्त सम्राट के बूट से कुचले
एक जर्जर पन्ने पर
सैकड़ों लोगों की आवाज को
बन्दूक की नोक से चुप कराने के बाद असंतोष
शून्यता
शून्यता की असन्तुष्टि
गर्दन मरोड़ने के विद्रोह की युद्धरत नीरवता....
इस कमरे के भीतर
वार... पार होती

सौभाव्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

वार... पार होती है
अस्पताल के भीतर...
सुनसान-सुनसान नीरवता की अनसुनी आवाज
इस अकेलेपन के कमरे में
कान के पर्दे को पार कर
वार.... पार मंड़राती रहती है...
वार... पार मंड़राती रहती है.....
मेरे होश हवास में
मेरे देखते-देखते
इस शून्यता में एकान्त का अजगर
मुझे आहिस्ता... आहिस्ता
बहुत धीरे-धीरे निगलता है।

अनुवाद : बिर्ख खडका डुवर्सेली

मैं और मेरी कहानी भिन्न हैं

मैं और मेरी कहानी भिन्न हैं और हैं भी
मनुष्य और मनुष्य की कहानी भिन्न हैं और
हैं भी।
तिरोहित देह से अंगों प्रत्यंगों
महाकथा के स्थापत्य पर
तीर्थ सृष्टि करके बहुत पहले
आँखों से पीलेपन में मृग खदेड़कर दौड़ लगाया जंगल के भीतर
और खो गया जंगल के भीतर सदा के लिए।
जी हाँ, कहानी पनपती गई जंगल ही जंगल
'झ्याम्म' वटवृक्ष सबके लिए ... है ....
चबूतरे में आश्रम लेकर बहुत पहले
तुम
मेरी कहानी, पुराकथा सुन ली और सुनाई इसलिए मुझे ढूँढ़ने अनवरत
दौड़ती है.... (निरर्थक खोज में जंगल के भीतर)
स्रोत का पानी पीकर अंजुरी से
नदी ही नदी होकर समय की तरह बहकर वक्र सीढ़ियों से समय की
तरह उठकर-गिरकर
युग-युग के फासले समेटकर समय के, पर खोज निरर्थक थी यहाँ तक
की, हुई। (निरर्थक की खोज जंगल के भीतर)
मैं ढूँढ़ कर कुछ ढूँढ़े बिना ही
ध्वंशावशेष पर चढ़कर अपने, शिर पर
एक अंधकार की गहरी ढोकर जंगल के भीतर
चुपचाप उल्लू की तरह
कहीं भी दौड़ न पाया -
(1)
नाचते खुशिया मनाते पहुँचकर /बिन पहुँचे
खड़ा हो जाता
खड़ा जैसा ही हूँ
कमर से 'पटुका' खोल रहा हूँ
निरन्तर और राहें....
राहें कुंडली मारकर मुझ तक पहुँच रही हैं चक्रवत, निरन्तर, और
वहीं वहीं हूँ। वहीं वहीं हूँ।
अकस्मात या संयोगवश
जन्मा ओले की तरह मैं
(2)
मेरा जन्म मेरा स्तंत्रवरण नहीं था। हाँ, शून्य से ओले बरसकर
माटी पर पिघलकर

शून्य में तत्क्षण
विलीन होकर - हूँ
शून्य में,
शून्य में शून्य जोड़ते हुए शून्य होते हुए.....
समय में समय बह रहा हो अविराम
(3)
कहानी की रेशाओं में रेशम की रेशा निरन्तर
रेशा में जाल के भीतर उलझते उलझते जन्म-जन्मान्तर
भीतर, भीतर से भीतर, और भीतर, खोते हुए खोता जा रहा हूँ
(रेशम के कीड़े के भीतर कीड़ा है)
रेशम से कीड़ा भिन्न होता है जैसे, हाँ
मैं और मेरी कहानी भिन्न है।
और हैं भी।
(4)
रेशा के जाल के भीतर उलझकर
क - कहते हुए नाम से पहचानकर बुलाते हुए
मेरे पाँव के स्तम्भ के सहारे
तुम अपने
घर के भीतर घुसे,
अपने भीतर के अहम्, लोभ-लालच और ईर्ष्या से
(5)
परम सत्ता की खातिर,
स्नेह और सद्भाव को चूजों के भोग में मनौती दी
और स्वयं कैद बनाया सदा के लिए।
मेरे सूँड पकड़कर चौंक गये साँप के रूप में
आदिम शत्रु से मिलकर

और युद्ध के लिए खड़े हुए,
अलग से मैं देखता रहा....
मेरे दाँत हस्तिहाड़ उठाकर तलवार बनाया
और पहले शत्रु पर कूद पड़े,
इस तरह मालश्री के राग से भोट की
सवाई के गीतों से
आकाश और पृथ्वी घनक उठे
रक्तपात पूर्ण युद्धों में,
और खून की बाढ़ में बह गया मानव इतिहास,
सदा कोई विजयी न होने की
लड़ाई में लाश के पहाड़ बने
हड्डी की समीधा तथा मनुष्य की चर्बी में जले दीये
दास के बचे भ्रम का जीवन... आह....
अलग से मैं देखता रहा....
पूँछ पकड़कर अनंत इच्छा अनंत राग अनंत वासना अनंत
कथा की रस्सी रेशम की वमन कर अनंत रस्सी
स्वयं को फँसाता अनंत
आह... रेशम की रस्सी से बाँधकर कसकर
स्वयं को पिजरे के भीतर रखकर पंक्षी की तरह
उठाकर ओलिम्पस के पहाड़ पर रख दिया,
अलग मैं देखता रहा....
शरीर को बाहों में नागपास की
तरह लपेटे हुए तुम
दीवार से टकराए पहली बार चेतना के स्पन्दन से और
मुक्ति और स्वतंत्रता की प्यास से जलती ऑत बनकर तुम,
उठे विरुद्ध में किसी के या अपने,
हाँ, सोच न पाकर अलग होकर वहाँ से.....
आह.....
शुरु हो गई तुम्हारी / मेरी दुखांत की कहानी
अलग से मैं देखता रहा....
पत्थर था तुमने कुरेद कर कलाकृति बनाई कहानी बन गया तुमने मन
से भरपूर भिगोया, रंग में भीग गया
और मैं रंग से कला हो गया।
आह... आख्यानों के अनेक बिम्ब के रंगों के अवरोध से
तुम छले गए। मैं छला गया।
फोटो सहित की नागरिकता छाती में चिपकाया
फोटो सहित का राष्ट्रीय परिचय-पत्र
फोटो सहित का मतदाता परिचय-पत्र ललाट में प्रकाशित
नागरिक का वास्तविक परिचय...
विष्णु के सहस्र नाम हैं....
जिस नाम से बुलाएँ, वही है-
वही नहीं है-
है भी।
नहीं भी।
सहस्र जीवन सहस्र नाम
सहस्र जीभों उच्चारित 'मुन्धुम' की ऋचाओं के
नाम से अवरोध खड़ा करके
तुम ने स्वंय को घेर लिया है,
घेरा है मैंने भी स्वयं को दीवार से।
इसलिए नहीं मिल पाए
इसलिए नहीं मिल पाया।
दूर-दूर तक अपने भीतर ही माना खोया-सा- हूँ
आख्यान के प्रतिबिम्ब में ध्वनित।
(6)
श्रीमान क.....
मैं और मेरी कहानी भिन्न हैं।
और हैं भी।
आओ... चाय पीएँ
एकदम काली चाय या दूध की
अर्गानिक ग्रीन टी या जास्टिमन की सुगंध की
घर नहीं कॉफी हाउस ही ठीक.... आओ... चाय पीएँ
कहानी की कहानी महाकथा
रेडियो, टीवी की धारावाहिक
कहानियाँ सुनते सुनाते और
संविधान सभा भवन के मैदान में वेबसाइट खोलकर अन्यमनस्क दिन
बिताने बातें कर रहे जनप्रतिनिधिगण, हजारों सुरक्षा कर्मियों के शिर के
ऊपर से उड़ते उछलते जुलूस के तेज नारों में मक्खियों के कारण...
आह..... देखो, बुद्धि उछलकर मक्खी के कारण
चाय की कप के भीतर
डूब गया.
छटपटाई डूबने से, बुद्धि मक्खी के कारण मर गई।
प्रतीक्षा में प्रतीक्षा किये बिना
के आक्रमण
अंतिम और निर्णायक,
ठीक है, मक्खी ने
आत्म हत्या की।
नहीं, वह आत्महत्या करने बहाने में मर गई।
(आह... बुद्धि का तिरोहन) (ताली : करतल ध्वनि)
टूह गई एक दूसरी क्रान्ति, मक्खी जैसा विद्रोह
सपने उसके पंख की तरह जलकर गिर पड़े.....
(ताली
आओ

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-8-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 126
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

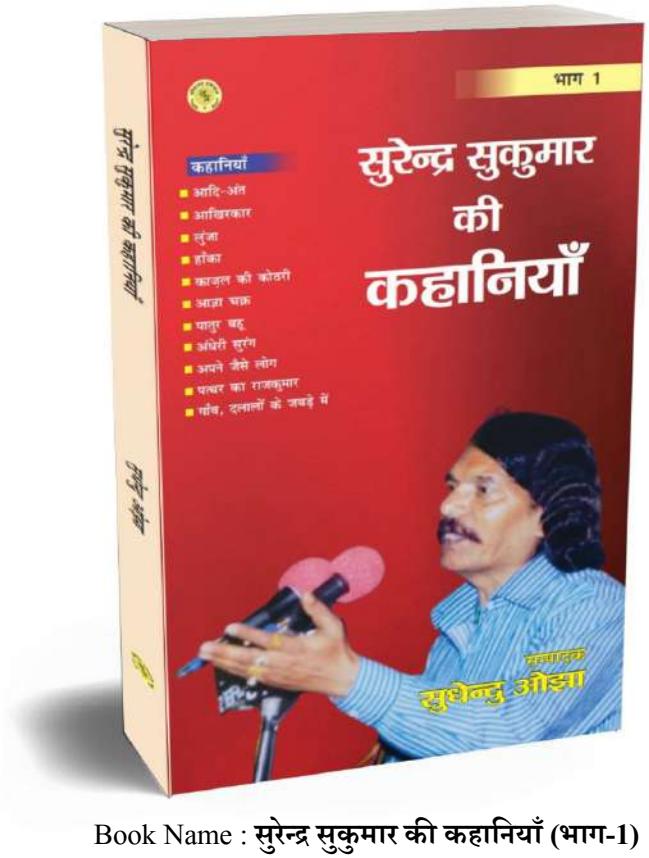

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

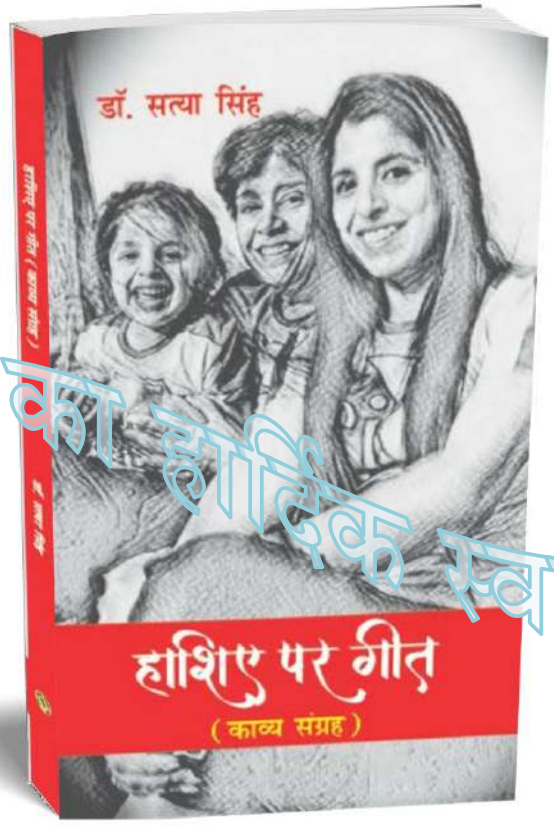

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

: करतल ध्वनि)
.... चाय पीएँ
मैं तो चाय उबालकर पीता हूँ
अधर गर्म से जलने पर जिन्दा हलचल करता
अधर गर्म से जलने पर जिन्दा हलचल करते हो तुम
(7)
पर्वत के शिखर पर पसरी ढार जगहों के बीच
धूपी का पेड़ खड़ा है हरा-भरा
मैं हूँ
जी हाँ, मेरे लिए।
श्रीमान् क ने देखकर
बुलाया
तो
साक्षात्कार से सजग होकर आँखें मिचते हुए
उठने की चेतना जलाकर उजाले में है दीया,
जी हाँ... तुम से मिल पाया हूँ
आह... मैं तो तुम तक दौड़कर... होता हूँ।
मैं
क - से शब्द से मिलकर
अनुभव करता हूँ जो शब्दातीत है।
(8)
पिघलती नदी से हिमशैल और अन्जान पर्वत कोशी तथा कर्णाली में
अदूरत्व को बह कई 'मैं' तुम तक दौड़ लगाकर तुम हो गए कई 'तुम' मैं
तक दौड़ लगाकर मैं हु
पिघलकर मेरे भीतर तुम बिलीन होकर तुम्हारे भीतर मैं
पानी ही पानी... पानी... पानी...
नदी
में जल जलमय
जल में नदी जलमय
जल की बूंदें जल में जलमय
जल में जल जलमय...
गड़ेरिया से मिली गड़ेरिन और बजती मुरली
जैसे मिलती हैं साक्षात्कार में
अंधों का हाथी से मिलने जैसा था, है भी, वैसे ही।
कुम्भकर्ण हिमालय के गुफाओं-कन्दराओं से ...
या वृन्दावन के वन-कानन से गूंजी हो....
गड़ेरिया ने फूँकी मुरली में मधुर स्वर लहरी
हा... है... बजी मुरली....
डूबकर बजी मुरली के महारोदन में आकण्ठ
दूर से बुलाने की आवाज सुनकर तत्पर विरहिणी में जलमग्न मुरली के
स्वर मोहिनी मधुर से सुमधुर है
छमछम नाचती लिम्बुनी बालाएं है नृत्यमय राधे...राधे... राधे मादल
की ताल में मैं नाचूँ
डफली की ताल में मैं नाचूँ
हा... है... बजी मुरली...
मैना निकलकर उड़ गई... पिंजरे से निर्बन्ध, सीमाहीन
आह... बजी मन की मुरली मधुर मधुर...
डफली की ताल तरल
मुरली की मोहिनी स्वर-लहर
हा... है... बजी मुरली...
पाद टिप्पणी-
झ्याम्म- पत्तों से लदा बड़ा पेड़
पटुका- कमरबंध
मालश्री- दुर्गा की स्तुति जो दुर्गा पूजा के पहले की जाती है/
गाई जाती है।
*सवाई- कविता का एक छंद
*स्रोत- सामग्री तथा संदर्भ-

पृष्ठ संख्या 11 का शेष....

प्रजातंत्र का महत्व इसके परिवर्तन की प्रवृत्ति के कारण है। परिवर्तन उचित हो तो पीढ़ियाँ सँवर जाती हैं, अनुचित परिवर्तन सत्यानाश का कारण बनता है। भारतभूमि प्रजातंत्र की जननी है। 'जनपदों' 'महाजनपदों' के दौर में तरुणाई को प्राप्त भारतीय प्रजातंत्र के अंकुरण के प्रमाण सहस्राब्दियों पूर्व 'सैंधव समाज' में भी स्पष्टतः दिखाई देते हैं। आर्यों ने वर्ण व्यवस्था के सामाजिक नियमों द्वारा इसे एक मानक स्वरूप प्रदान किया। समयरेखा पर कभी मद्धिम तो कभी प्रखर रूप में अंकित प्रजातंत्र के विभिन्न चित्र सदा-सर्वदा से भारतीय जनगण को एकात्म करने के सर्वाधिक महत्वपूर्ण, चर्चित और प्रभावी उपकरण रहे हैं। प्रजातंत्र को उद्भूत करने वाली भारत भूमि 'राष्ट्र' को सर्वाधिक मान्य एवं लोकप्रिय रूप में परिभाषित करती है। कालांतर में अनेक कवियों और रचनाकारों ने कालांतर में अपनी क्षमतानुसार भारत भूमि का वंदन किया है। ये गौरवान्वित होने का विषय है कि हमसब भारतीय हैं।

प्रफुल्ल सिंह "रिक्त संवेदनाएं"
शोध सदस्य (पर्यावरण उद्यानिकी एवं पर्यटन)
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

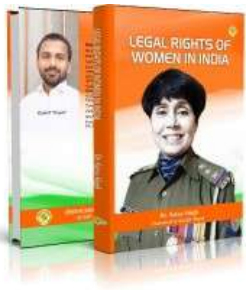

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

हान कांग की नोबेल पुरस्कार विजेता बनने तक की यात्रा

छविन्दर शर्मा

हान कांग का अवतरण 1970 में दक्षिण कोरिया के ग्वांगझू में हुआ था। उनका बचपन संघर्ष की एक कहानी रहा है और हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। जब नौ वर्ष की हुई तो उनका परिवार राजधानी 'सियोल' के लिए शिफ्ट हो गया था। बचपन से ही लेखन का शौक था चूंकि घर पर लेखन सभाएं चलती रहती थी। उनके पिताजी भी एक लोकप्रिय उपन्यासकार थे। हान कांग लेखन के साथ-साथ कला और संगीत प्रेमी भी है। साहित्य और संगीत का अनूठा संयोग उनके साहित्य में देखने को मिलता है। उनका मानना है कि कला और संगीत मनुष्य जीवन के लिए अमृत समान है और इससे मनुष्य के हर दुःख-दर्द का निवारण होता है, जिस प्रकार से शरीर में आत्मा का वास है उसी प्रकार संगीत विधा मनुष्य से सम्बन्धित है। हान कांग का साहित्य कोरियाई साहित्य जगत की अमूल्य निधि हैं। मनुष्य जीवन से जुड़ी हर समस्याओं को काव्यात्मक भाव के साथ उन्होंने जागृत किया है।उनका साहित्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में व्याप्त विद्रूपताओं को उजागर करता है। उनके लेखन में लौकिक-अलौकिक,देह और आत्मा के सम्बन्धों का समन्वय दिखाई देता है। अपनी काव्यात्मक और प्रयोगात्मक शैली से हान कांग ने स्वयं को समकालीन गद्य की प्रवर्तक लेखिका के रूप में स्थापित किया है। विश्व

स्तर पर उनकी रचनाएं पाठकों तक अनुवाद के माध्यम से पहुंच पाई है। हानकांग को वर्ष 2024 के नोबल पुरस्कार से अलंकृत किया जाएगा,जिसकी घोषणा स्वीडिश अकादमी ने कर दी है। नोबेल पुरस्कार के अलावा हान कांग को कई अन्य पुरस्कार मिले हैं जिनमें 1. मैन बुकर इंटरनेशनल पुरस्कार (2016),2. प्रिक्स फेमिना पुरस्कार (2016),3. साउथ कोरियाई साहित्य पुरस्कार (2014)

साहित्यिक जीवन

वर्ष 1993 से उनका साहित्यिक जीवन वास्तव में आरम्भ हुआ। उन्होंने कुछेक पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखना आरम्भ किया और उनके आलेख इनमें प्रकाशित होने लगे।नोबेल कमेटी ने हान कांग के एक उपन्यास 'ग्रीक लेसन' पर गहन चिन्तन व चर्चा की है।हान कांग के साहित्य जगत की बात करें तो अब तक उनकी अनेकों कृतियां प्रकाशित हो चुकी है।

जिनमें ब्लैक डियर (1998),एक लघु कहानी संग्रह-फ्रूट्स ऑफ माई वूमन (2000),योर कोल्ड हैंड्स (2002),द वेजिटेरियन (2007, , ब्रीथ फाइटिंग (2010), और ग्रीक लेसन्स (2011), फ़ायर सैलामैंडर (2012);एक कविता संग्रह, आई पुट द इवनिंग इन द ड्रॉअर (2013), ह्यूमन एक्ट्स (2014),'द व्हाइट बुक' (2016) व 'आई डू नॉट बिड फेयरवेल' (2021)जैसे उपन्यास शामिल हैं।

हान कांग ने 1995 के कालखंड में एक लघु कहानी संग्रह " लव आफ ये ओसू" लिखा जो काफी चर्चित हुआ और इसी से उन्हें साहित्य लेखन की प्रेरणा मिली। उसके उपरान्त हान कांग ने लेखन के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट अस्मिता बनाई। उन्होंने दोनों विधाओं जिनमें कहानी और उपन्यास लिखना आरम्भ किया। वर्ष 2002 में " योर कोल्ड हैंड्स " नाम से एक उपन्यास प्रकाशित हुआ। ये उपन्यास उनके जीवन में बुलन्दियों को लेकर आया। इसी उपन्यास से कोरियाई साहित्य जगत में उनका नाम चर्चित हो गया। इस उपन्यास की कथा वस्तु बड़ी संवेदनशील है। इसमें एक लापता मूर्तिकार के द्वारा महिलाओं की पुनर्प्रस्तुति के माध्यम से एक कलाकार की घुंटन की कथा को उद्घाटित किया है।यह मूर्तिकार स्पैशल पेरिस के प्लास्टर से महिलाओं के शरीर की मूर्ति बनाने में निपुण व पारंगत हैं। उसमें मूर्ति बनाने का अपना ही एक जुनून है। उसकी बनाई हुई मूर्ति मानों वास्तविक हो और ऐसा आभास होता है कि मूर्ति बोलना आरम्भ कर रही है और मूर्तिकार के रचनात्मक अनुभव और व्यक्तित्व के साथ उसकी आकांक्षाएं मानों आंख मिचौली खेल रही हो।अन्तर्मन में दबी हुई इच्छाएं और काम के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का यह संघर्ष और इसे किसके पास बताएं या न बताएं यही इस उपन्यास का वास्तविक परिवेश है। " जीवन वितल पर बिछी हुई एक चादर के सदृश है और हम इस पर मुखावरण की तरह रहते हैं।

हांग कांग को वैश्विक स्तर पर वर्ष 2007 में " द वेजिटेरियन ' उपन्यास से महत्वपूर्ण अभिज्ञान मिला । वर्ष 2015 में डेबोरा स्मिथ ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया। यह उपन्यास वैश्विक स्तर इतना प्रसिद्ध हुआ कि इसे 2016 के " बुकर पुरस्कार" से अलंकृत किया गया जो कोरियाई साहित्य जगत में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस उपन्यास के केन्द्र में एक महिला पात्र हैं जो यह स्वीकार करती है कि वह एक पौधे में परिवर्तित हो रही है। यह उपन्यास तीन खण्डों में हैं और " येओंग" इसकी नायिका हैं,जो भोजन सेवन करने के लिए निर्धारित मानदंडों को नहीं मानती है और उसके अनुसार हमारा मन जिसे खाने के लिए न करें तो उसे नहीं खाना चाहिए।हालांकि उसे इसके प्रतिकूल प्रभावों से भी गुजरना पड़ता है।उसे हिंसा का सामना करना पड़ता है। पितृसत्तात्मक समाज में उसे अपने पिताजी और पति के दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता है। चूंकि वो दोनों नहीं चाहते कि येओंग अपनी मर्जी करें। तदोपरान्त उसका पति उसे अस्वीकार करता है।उसकी इस क्षीणता का लाभ उसका कामुक जीजा लेता है,जो पेशेवर वीडियो कलाकार हैं। वो येओंग के जीर्ण शरीर पर आसक्त होकर उसके साथ अपनी यौन उत्तेजना को शान्त करता है और उससे येओंग बेकल हो जाती है। वो मानसिक रूप से दिव्यांग हो जाती है और कोई उसकी सुध लेने वाला नहीं है। उसके पश्चात् उसकी बहन उसे बचाने और पुनः आम जीवन में वापस लाने का प्रयास करती है। इस उपन्यास में नायिका येओंग हे ज्वलंत पेड़ों के माध्यम से व्यक्त मनोविकृति जैसी स्थिति में और गहराई से डूबती जाती है जो पौधों के शासन का प्रतीक है, वास्तव में ये रूपक जितना आधुनातन है, आकर्षक है, उतना ही भयावह भी है।

वर्ष 2010 में हान कांग का एक और उपन्यास ' द विंड ब्लोज गो' प्रकाशित हुआ। ये मित्रता और कलात्मकता के सन्दर्भ में एक वृहद और जटिल उपन्यास है। इसमें दुःख और परिवर्तन की लालसा है। इसके अलावा वर्ष 2011 में " ग्रीक पाठ 2023 की कथा वस्तु में हान कांग की सहानुभूति उनकी रूपक शैली का चरम उद्घोष सी करती है।

ये दो अक्षम व्यक्तियों के मध्य एक असाधारण रिश्ते का रमणीक चित्रण करने वाली कहानी है जिसमें चरम शारीरिक सम्बन्ध, आकर्षण एवं आकांक्षाएं अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। दर्दनाक अनुभवों से गुजरने के चलते अपनी वाक् शक्ति खो देती है और आदिम ग्रीक में अपने उस शिक्षक से जुड़ती है, जो स्वयं अपनी नेत्र ज्योति खो रहा होता है। दोनों के मध्य प्रेम सम्बन्ध विकसित होता है। वास्तव में ये कृति मनुष्य जीवन से जुड़ी अनेकों समस्याओं से सम्बन्धित है। इसमें पुस्तक हानि-लाभ, अंतरंगता एवं भाव भाषा की अन्तिम स्थितियों पर पहुंचने वाले मन का एक रूचिर चिन्तन है।

वर्ष 2014 में हान कांग का " ह्यूमन एक्ट्स' उपन्यास प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने अपने देश में घटी युद्ध की भयावह घटना व उसकी विभिषिका का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया है। ग्वांगजू शहर जहां लेखिका के स्वयं की जन्मस्थली है।1980 में दक्षिण कोरिया की सेना ने सैंकड़ों छात्रों और बेकसूर नागरिकों की निर्ममता से हत्या कर दी थी। यह एक भयावह नरसंहार था। उन पीड़ितों की वेदना को उजागर करने का प्रयास इस उपन्यास में किया गया है। इसमें लेखिका ने उस घटना का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

वर्ष 2016 में उनका एक काव्य संग्रह " द व्हाइट बुक" का प्रकाशन हुआ। यह एक करूण गीत है,जो कथाकार की अग्रज सहोदरा हो सकती थी, लेकिन जन्म के कुछ ही घण्टों में उसकी मौत हो जाती है। कथाकार तर्क देते हुए कहती हैं कि यदि उसकी काल्पनिक सहोदरा को पुनर्जीवित करने की स्वीकृति दी गई होती तो उसे स्वयं को अस्तित्व में आने की अनुमति शायद नहीं दी जाती। मृतकों को सम्बोधित करते हुए ही यह पुस्तक अपने इन अन्तिम शब्दों तक पहुंचती है। इस कृति में रहस्यवादी चिन्तन है और आत्मा और परमात्मा के आदिम सम्बन्धों पर चिन्तन किया गया है।

वर्ष 2021 में कोविड काल खण्ड में उनकी नूतन कृति " वी डोंट नाॅट पार्ट से प्रकाशित हुई। इसमें भी एक भयावह नरसंहार सम्बन्धी घटनाक्रम हैं। ये नरसंहार "जेजू द्वीप पर हुआ था जहां पर सरकार विरोधी सहयोग के सन्देह में हजारों बच्चों व बुजुर्गों पर गोलियां चलाई गई थी जिसमें हजारों लाशों के ढेर शहर में लगे थे, हर जगह लाशें ही दिखाई पड़ती थी तो इस खौफनाक मंजर का चित्रण इसमें किया गया है।

यह पुस्तक लेखिका और उनकी परम् मित्र 'इंसियन' द्वारा अभिव्यक्त साझा दुःख व शोक प्रक्रिया को चित्रित करती है।हान कांग इसमें केवल अतीत की स्मृतियों को ही नहीं बल्कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सशक्त माध्यम से कुछ पारस्परिक विस्मृतियों को प्रकाश में लाने और परिवर्तित करने के लिए अपने दोस्तों के अथक प्रयासों का भी उल्लेख करती है।

2013 में प्रकाशित कृति ' कन्वलेसेंस' स्वास्थ्य लाभ की आशा में जीवन काट रहे उस पात्र की कहानी है जिसके एक पैर को अल्सर मार गया है, और वह उस व्याधि से उभर नहीं पाता है। उसकी सहोदरा मर चुकी थी और वो अचेतावस्था में उससे संवाद करने की कोशिश करता है। उसकी वो पीड़ा इतनी बढ़ जाती है कि वह अब जीना ही नहीं चाहता है।वर्ष 2019 में हांनकांग का नूतन कहानी संग्रह ' यूरोपा' प्रकाशित हुआ,जिसमें व्यक्ति कथावाचक है और जो स्वयं एक स्त्री के रूप में प्रच्छन्न है, वो एक अपरिचित स्त्री की ओर मोहित हो जाता है, जिसका सम्बन्ध विच्छेद हो गया था। वह अपने प्रेमी द्वारा पूछे जाने पर यह कहकर चुप हो जाती है कि यदि आप स्वयं इच्छानुसार जीने में सक्षम होते, तो आप अपने जीवन को किस तरह से जीते? चूंकि यहां पूर्णतः और पश्चात्ताप के लिए कोई स्थान नहीं है।हान कांग समाज के यथार्थ स्वरूप को अपने काव्य में उद्घाटित करती है।

हान कांग वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व विख्यात लेखिका के रूप में उभर चुकी है और हर कोई उनके बारे में चर्चा कर रहा है। उन्होंने अपने साहित्य जगत में कोरियाई समाज, संस्कृति, मानवीय संवेदनाओं, दुःख-दर्द का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया है।उनका साहित्य पाठकों को बहुत कुछ चिन्तन मनन करने पर विवश करता है। मैथिलीशरण गुप्त ने कहा भी है कि " केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए , उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए। हानकांग ने आम जनमानस, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उलझते मनुष्य, कोरियाई भीतरघात परिवेश और उससे प्रभावित आम जनमानस, बेकसूर नागरिकों, महिला व बच्चों के साथ हैवानियत, निर्दयता का चित्रण प्रस्तुत किया है। अतः कह सकते हैं कि हांनकांग का साहित्य जगत पाठकों के लिए प्रेरणा है।

पता

छविन्दर शर्मा, अनुसन्धित्सु, विद्या वाचस्पति हिन्दी, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला 98170-18700,

काव्य

कृष्ण कुमार यादव के हाइकु

आधुनिकता
क्षीण हो रहे मूल्य
चकाचौंध में।

टूटते रिश्ते
सूखती संवेदना
कैसे बचाएं।

संवेदनाएं
लहुलुहान होती
समय कैसा।

सत्य-असत्य
के पैमाने बदले
छाई बुराई।

अहं में चूर
मानव शर्मसार
अब तो जाग।

आज के बच्चे
चकाचौंध के पीछे
भागमभाग।

पावन शब्द
अवर्णनीय प्रेम
सदा रहेंगे।

सहेजते हैं
सपने नाजुक से
टूट न जाएं।

रिश्तों की उष्मा
पत्रों से पिघलती
मौन टूटता।

हस्तलिखित
शब्दों की ये दुनिया
गुनगुनाती।

खो गए कहीं
खूबसूरत पत्र
सहेजें इन्हें।

घटती आयु
बढ़ता प्रदूषण
संकट आया।

बढ़ते लोग
घटते संसाधन
पिसती धरा।

मत छेड़िए
प्रकृति को यूँ अब
जला देगी ये।

पर्यावरण
सुरक्षित रहेगा
संपन्न धरा।

कृष्ण कुमार यादव

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 7701960982
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

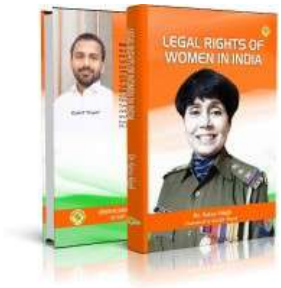

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982